सम्पादकीय

ख़ातमन्नबिय्यीन की वास्तविक व्याख्या

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश के आलोक में

सूरः अल-अहज़ाब की आयत नंबर 41 में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला ने ख़ातमन्नबिय्यीन के महान ख़िताब से सम्मानित किया। ख़ातमन्नबिय्यीन का मतलब है (1) सभी नबियों से बेहतर। (2) वह नबी जिस में नबुव्वत अपने सम्पूर्णता और पूर्णता तक पहुँच गई हो जिस की तरफ यह आयत इशारा करती है। اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَ اَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَ رَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا (3) नबियों की मुहर, क्योंकि ख़ातम का एक मतलब मुहर भी है। इसका मतलब यह है कि आध्यात्मिकता का कोई स्थान और आपकी मुहर की पुष्टि के बिना किसी को नहीं मिल सकता। इसकी पुष्टि यह आयत करती है। قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ। अर्थात तू कह दे कि अगर तुम चाहते हो कि अल्लाह तआला तुम से प्यार करे तो तुम मेरा अनुकरण करो इसके परिणाम में अल्लाह तआला भी तुमसे प्यार करने लगेगा। अतः जब ख़ुदा का प्रेम आप के पालन पर निर्भर है तो आध्यात्मिकता का कोई स्थान और सम्मान मिलना आप का पालन या अपनी मुहर पुष्टि के बिना कैसे संभव है। (4) ख़ातमन्नबिय्यीन का एक मतलब है नबियों का रूहानी पिता। अल्लाह तआला कुरआन में आप के शारीरिक पिता होने को नकारता है। क्योंकि शारीरिक पिता होना एक कम दर्जा है। अलबत्ता आध्यात्मिक पिता होना एक बहुत बड़ा दर्जा है। इसलिए अल्लाह तआला सूरः अल्अहज़ाब की आयत नंबर 41 में जहाँ आप के शारीरिक पिता होने को नकारता है वहाँ आप को सभी नबियों का आध्यात्मिक पिता करार दिया जो एक महान स्थान और सम्मान है। (5) ख़ातमन्नबिय्यीन का एक मतलब यह है कि आप अंतिम शरई (अर्थात वह नबी जिस पर अल्लाह तआला की तरफ से कोई किताब नाज़िल हो। अनुवादक) नबी हैं। आप के बाद अब कोई शरई नबी नहीं आ सकता और न कोई शरई किताब हो सकती है। कुरआन अंतिम शरीयत(व्यवस्था) है क़यामत तक के लिए है और आप सारी मानव जाति के लिए आख़री शरई नबी, दुनिया के लिए हैं। लेकिन आप का पालन और आप की ग़ुलामी में नबी आ सकता है जिस की सत्यता यह आयत करती है।وَ مَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَ الرَّسُوْلَ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَ الصِّدِّيْقِيْنَ وَ الشُّهَدَآءِ وَ الصّٰلِحِيْنَ ۚ وَ حَسُنَ اُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا अर्थात जो कोई भी अल्लाह तआला और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इताअत करेगा वह नबी, सिद्दीक, शहीद और सालेह, इनमें से कोई भी पुरस्कार पा सकता है। अगर कहो नबी नहीं बन सकता जैसा कि हमारे ग़ैर अहमदी भाई कहते हैं तो इसका मतलब होगा कि सिद्दीक, शहीद और सालेह नहीं बन सकता। (6) ख़ातमन्नबिय्यीन के अर्थों में यह अर्थ भी सम्मिलित हैं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पूर्णता आज्ञाकारिता के परिणाम में अल्लाह तआला अपने इल्हाम तथा कलाम से भी सम्मानित करता है, क्योंकि जिस नबी के पालन के परिणाम में नबुव्वत मिल सकती है पालन के परिणाम में अल्लाह तआला से बातचीत का श्रेय क्यों नसीब नहीं हो सकता। अगर पहले नबियों के पालन के परिणाम में अल्लाह तआला की बातचीत का सौभाग्य नसीब होता है तो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पालन के परिणाम में यह श्रेय कहीं उच्च स्तर का नसीब होना चाहिए।

ख़ातमन्नबिय्यीन के जो अर्थ और मतलब ऊपर वर्णित किए गए हैं वे सभी आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शान के अनुसार हैं। हमारे ग़ैर अहमदी भाई आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमन्नबिय्यीन इस अर्थ में ज़रूर मानते हैं कि आप सबसे उच्च और बेहतर नबी हैं, लेकिन ख़ातमन्नबिय्यीन की व्याख्या ऐसी करते हैं कि सारी खूबियां आप से छीन लेते हैं। जैसे आप के बाद किसी प्रकार का कोई नबी नहीं आ सकता। अर्थात आप के अनुकरण के परिणाम स्वरूप ज़िल्ली (प्रतिरूप), बरौज़ी या उम्मती नबी नहीं आ सकता। मानो एक महान पुरस्कार जिसका दरवाज़ा न तो अल्लाह तआला ने बंद किया और न उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने , इस दरवाजे को यह बंद कर रहे हैं और यह कि आप के बाद वह्यी और इल्हाम का दरवाज़ा बंद हो गया। मानो वह फ़ैज़ जो पहली उम्मतों में उनके नबी के बाद जारी रहा वह फ़ैज़ आपने तो जारी नहीं किया बल्कि बंद कर दिया। मानो नबुव्वत भी बंद, इल्हाम और कमाल का सिलसिला भी बंद। रूहानियत के सारे रास्ते उन्होंने बंद कर दिए। नीचे हम सय्यदना व मौलाना हज़रत मसीह मौऊद और महदी मअहूद अलैहिस्सलाम के कुछ उपदेश प्रस्तुत करते हैं जिन में आप ने ख़ातमन्नबिय्यीन की व्याख्या फरमाई है।

ख़ातमिल अनबिया का एक मतलब

आंहज़रत के पालन के बिना अल्लाह तआला से बातचीत कदापि असम्भव

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जो ख़ातमुल अनबिया कहा गया है इस के यह अर्थ नहीं है कि आप के बाद अल्लाह तआला की बातचीत और वार्तालाप का दरवाजा बंद है। अगर यह अर्थ होते तो यह उम्मत एक शापित उम्मत होती जो शैतान की तरह हमेशा ख़ुदा तआला से दूर और महजूर होती बल्कि यह अर्थ हैं कि सीधे ख़ुदा तआला से वह्यी का फ़ैज़ पाना बंद है और यह नेअमत आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुसरण के बिना किसी को मिलना कदापि असम्भव है और यह ख़ुद आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का गर्व है कि उनके अनुकरण में यह बरकत है कि जब एक व्यक्ति पूरे रूप में आप का पालन करने वाला हो तो वह ख़ुदा तआला बातचीत और वार्तालाप से सम्मानित हो जाए। (बराहीने अहमदिया भाग पंचम, पृष्ठ 353)

ख़तमे नबुव्वत की एक सूक्ष्म व्याख्या

आं हज़रत का महान आध्यात्मिक पिता का दर्जा

ख़ुदा तआला ने जिस जगह यह वादा फरमाया है कि आँ हज़रत

शेष पृष्ठ 26 पर

विषय सूची

1	सम्पादकीय	1
2	पवित्र कुरआन	2
3	पवित्र हदीस. दरूद शरीफ का महत्तव एवं बरकतें	3
4	आंहज़रत सल्लल्लाहो की उच्च एवं महान शान। मल्फ़ूज़ात	4
5	हज़रत मुहम्मद (स) का मुबारक जीवन	5
6	नज़्म, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम	8
7	नज़्म, मुहम्मद पर हमारी जाँ फिदा है	10
8	हज़रत मुहम्मद(स) का स्त्रियों तथा पड़ोसियों से सद्व्यवहार	12
9	सीरत आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम न्याय और इंसाफ की रौशनी में	14
10	आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दाई इल्लल्लाह के रूप में	19
11	सलाम बहज़ूर सय्यदुल अनाम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम	23
12	भेज दरूद उस मुहसिन पर तू- दिन में सौ सौ बार	24
13	अमन के शहंशाह- हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम	26

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का महान सम्मान एवं स्थान कुरआन की आयतों की रौशनी में

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَ لٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَ خَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا

(सूरह अलअहज़ाब आयत 41)

अनुवाद :: मुहम्मद तुम्हारे (जैसे) पुरुषों में से किसी के बाप नहीं बल्कि वह अल्लाह का रसूल है और सब नबियों का ख़ातम है। और अल्लाह सब चीज़ों का ख़ूब ज्ञान रखने वाला है। (मुहम्मद: 3)

وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَ اٰمَنُوْا بِمَا نُزِّلَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۙ كَفَّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَ اَصْلَحَ بَالَهُمْ

(सूरह मुहम्मद आयत 3)

अनुवाद::और वे लोग जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए और उस पर विश्वास लाए जो मुहम्मद पर उतारा गया, और वही उनके रब्ब की ओर से सही सच्चाई है, उनके दोषों को वह दूर कर देगा और उनका हाल ठीक कर देगा।

وَ مَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ اَفَاْئِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ ؕ وَ مَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰى عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَّضُرَّ اللّٰهَ شَيْـًٔا ؕ وَ سَيَجْزِى اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ

(सूरह आले इम्रान 145)

अनुवाद :: और मुहम्मद केवल एक रसूल है। निस्संदेह इस से पहले रसूल गुज़र चुके हैं। अत: क्या यदि वह भी वफात पा जाए अथवा कत्ल कर दिया जाए तो तुम अपनी एड़ियों के बल फिर जाओगे? और जो भी अपनी एड़ियों के बल फिर जाएगा तो वह हरगिज़ अल्लाह को हानि नहीं पहुंचा सकेगा। और निस्संदेह अल्लाह कृतज्ञों को प्रतिफल देगा।

तफसीर:: इस आयत में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु की निश्चित रूप से सोचना दी गई है जैसा कि वर्णन किया है कि मुहम्मद भी अल्लाह के रसूल हैं और रसूल से बढ़ कर कुछ भी नहीं और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पहले जितने भी रसूल थे, सब मृत्यु को पा चुके हैं। अरबी में **ख़ला** शब्द जब निश्चित रूप से किसी के सम्बन्ध में बोला जाए तो उस से अभिप्राय ऐसा गुज़रना नहीं होता जैसे मुसाफिर ग़ज़रता है बल्कि गुज़र जाने से अभिप्राय मुत्यु को प्राप्त करना है। अत: यदि ईसा अलैहिस्सलाम अल्लाह के रसूल थे तो अवश्य मृत्यु को प्राप्त कर चुके हैं।

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ؕ وَ الَّذِيْنَ مَعَهٗۤ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَ رِضْوَانًا ۫ سِيْمَاهُمْ فِيْ وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ ؕ ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ ۚۖ وَ مَثَلُهُمْ فِي الْاِنْجِيْلِ ۚۛ كَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطْئَهٗ فَاٰزَرَهٗ فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوٰى عَلٰى سُوْقِهٖ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَغِيْظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ؕ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْهُمْ مَّغْفِرَةً وَّ اَجْرًا عَظِيْمًا (सूरह अल्फतह 30)

अल्लाह के रसूल मुहम्मद और वे लोग जो उस के साथ हैं कफिरों के विरुद्ध बहुत कठोर (और) आपस में अत्यन्त कृपा करने वाले हैं। तू उन्हें रकु करते हुए और सजद: करते हुए देखेगा। वे अल्लाह ही से उस का फज़ल और प्रसन्नता चाहते हैं सजदों के प्रभाव से उन के चहरों पर उन के चिन्ह हैं। ये उन की उपमा है जो तौरात में और इंजील में उन की उपमा एक खेती की भांति है जो अपनी कोंपल निकाले फिर उसे मज़बूत करे। फिर वह मोटी हो जाए और अपनी डंठल पर खड़ी हो जाए, किसानों को प्रसन्न कर दे ताकि उन के कारण काफिरों को क्रोधित करे। अल्लाह ने उन में से जो ईमान लाए और नेक कर्म किए क्षमा और महान प्रतिफल का वादा किया हुआ है।

तफसीर:: इस आयत में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जो गुण वर्णन किए गए हैं उनको उन तक ही सीमित नहीं रखा बल्कि तुरन्त ही कहा **वल्लज़ी न मअहू** अर्थात हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सद्गुण उन लोगों में भी प्रवेश करेंगे जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ हैं। गुणों में सर्वप्रथम तो यह है कि **वे काफ़िरों के विरुद्ध बहुत कठोर हैं।** इसका यह अर्थ नहीं कि वे काफ़िरों पर अपनी कठोर-हृदयता के कारण कठोर होंगे बल्कि कुफ्र का प्रभाव स्वीकार न करने की दृष्टि से उन्हें कठोर कहा गया है। अन्यथा उनके दिल दया से भरे हुए होंगे जिसके कारण मोमिन एक दूसरे से कृपा और नम्रतापूर्वक व्यवहार करने वाले होंगे और उनके जिहाद का उद्देश्य केवल अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्ति है न कि सांसारिक धन अर्जित करना। अत:एव वे अल्लाह के समक्ष रुकू करते हुए और सजद: करते हुए झुकेंगे और उससे उसका फज़ल अर्थात् ऐसा सांसारिक धन माँगेगे जिसके साथ अल्लाह तआला की प्रसन्नता भी हो। यह उनके जिहाद के वे प्रमुख पक्ष हैं जो तौरात में उनके सम्बन्ध में वर्णन किए गए थे।

जहाँ तक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुगामियों में अंत्ययुग में आने वाले मसीह और उसके मानने वालों का प्रसंग है, उनका उदाहरण इंजील में ऐसे अंकुरण के साथ दिया गया है जो क्रमश: बढ़ता है और अपने डंठल पर दृढ़ हो जाता है और उसको देख कर उसको बोने वाले अर्थात् धर्म सेवा में भाग लेने वाले बहुत प्रसन्न होंगे। और इसके परिणाम स्वरूप काफ़िरों को उन पर और भी अधिक क्रोध आएगा। इसी प्रकार अल्लाह तआला ने उनको भी जो अल्लाह तआला पर सच्चा ईमान लाएँगे और उससे क्षमा याचना करेंगे, बड़े क्षमा और अच्छा प्रतिफल प्रदान करने का शुभ-समाचार दिया है।

وَ مَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ (सूरह:अलअंबिय108)

अनुवाद::और हम तुझे नहीं भेजा लेकिन दुनिया के लिए दया के रूप में।

فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍۭ بِشَهِيْدٍ وَّ جِئْنَا بِكَ عَلٰى هٰۤؤُلَآءِ شَهِيْدًا

(सूरह अन्निसा आयत 42)

अनुवाद::तो क्या हाल होगा जब हम प्रत्येक समुदाय में से एक गवाह लेकर आएंगे और हम तुमको उन सब गवाह बनाकर लाएंगे।

☆ ☆ ☆

दरूद शरीफ का महत्तव एवं बरकतें

जो व्यक्ति भी मुझ पर सलाम भेजेगा इसका जवाब देने के लिए अल्लाह तआला मेरी रूह को वापस लौटा देगा

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ قَالَ مَا مِنْ اَحَدٍ یُسَلِّمُ عَلَیَّ اِلَّا رَدَّ اللّٰهُ عَلَیَّ رُوْحِیْ اَرُدُّ عَلَیْهِ السَّلَامَ

(अबु दाऊद किताबुल मनासिक)

हज़रत अबू हुरैरह वर्णन करते हैं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जो व्यक्ति भी मुझ पर सलाम भेजेगा इसका जवाब देने के लिए अल्लाह तआला मेरी रूह को वापस लौटा देगा ताकि मैं उसके सलाम का जवाब दे सकूँ। (अर्थात आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर सलाम भेजने वाले को इस दरूद का ऐसा इनाम और पुण्य मिलेगा जैसे ही ख़ुद हुज़ूर दरूद का जवाब दे रहे हों।)

दरूद भेजने का तरीका

عَنْ كَعْبِ بْنِ عُجْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ خَرَجَ عَلَیْنَا النَّبِیُّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْنَا یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ قَدْ عَلِمْنَا كَیْفَ نُسَلِّمُ عَلَیْكَ فَكَیْفَ نُصَلِّیْ عَلَیْكَ ؟ قَالَ قُوْلُوْا اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّیْتَ عَلٰی اٰلِ اِبْرَاهِیْمَ اِنَّكَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰی اٰلِ اِبْرَاهِیْمَ اِنَّكَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ

(मुस्लिम किताबुस्सलात)

हज़रत कअब वर्णन करते हैं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब हमारे यहां आए तो हमने निवेदन किया। हे अल्लाह के रसूल! हमें यह तो पता है कि आप पर सलाम कैसे भेजा जाए लेकिन यह पता नहीं कि आप पर दरूद कैसे भेजें। आपने फरमाया। तुम मुझ पर इस तरह दरूद भेजा करो। हे हमारे अल्लाह! तू मुहम्मद और मुहम्मद की औलाद पर दरूद भेज जिस तरह तूने इब्राहीम की औलाद पर दरूद भेजा हे हमारे अल्लाहह! तू महमद और मुहम्मद की औलाद को बरकत प्रदान कर जिस तरह तूने इब्राहीम की औलाद को बरकत प्रदान की। तो स्तुति वाला और सम्मान वाला है।

जब तुम में से कोई नमाज़ में दुआ करने लगे तो पहले अपने रब्ब की स्तुति और प्रशंसा करे, फिर नबी करीम पर दरूद भेजे

عَنْ فَضَالَةَ بْنِ عُبَیْدٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ سَمِعَ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ رَجُلًا یَدْعُوْ فِیْ صَلٰوتِهٖ لَمْ یُمَجِّدِ اللّٰهَ تَعَالٰی، وَلَمْ یُصَلِّ عَلَی النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ عَجِلَ هٰذَا ثُمَّ دَعَاهُ فَقَالَ لَهٗ اَوْ لِغَیْرِهٖ اِذَا صَلّٰی اَحَدُكُمْ فَلْیَبْدَأْ بِتَحْمِیْدِ رَبِّهٖ سُبْحَانَهٗ وَالثَّنَآءِ عَلَیْهِ ثُمَّ یُصَلِّیْ عَلَی النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ یَدْعُوْ بَعْدُ بِمَا شَآءَ

(अबु दाऊद किताब)

हज़रत फज़ालह रिवायत करते हैं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक व्यक्ति को नमाज़ में दुआ करते हुए सुना। न उसने अल्लाह तआला की स्तुति और प्रशंसा की और न आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दरूद भेजा। इस पर आप ने फरमाया। उसने जिल्दबाजी से काम लिया है और सही ढंग से दुआ नहीं की आपने उस व्यक्ति को बुलाया और फरमाया जब तुम में से कोई नमाज़ में दुआ करने लगे तो पहले अपने रब्ब की स्तुति और प्रशंसा करे तो नबी करीम पर दरूद भेजे इसके बाद इच्छा अनुसार दुआ करे।

अल्लाह तआला ने हमेशा के लिए यह आदेश दिया कि भविष्य में लोग धन्यवाद के रूप में दरूद भेजें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते:

हमारे सय्यद मौला हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ही सच्चाई और वफा देखिए। आप ने प्रत्येक प्रकार की बुरी तहरीक का मुकाबला किया। विभिन्न प्रकार की पीड़ा और तकालीफ उठाई, लेकिन परवा ना की। यही सच्चाई तथा वफा थी, जिस के कारण अल्लाह तआला ने फज़ल किया इसीलिए तो अल्लाह तआला ने फरमाया

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ یُصَلُّوْنَ عَلَی النَّبِیِّ ؕ یٰٓاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَیْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِیْمًا

(अहज़ाब 57)

अनुवाद: अल्लाह तआला और उस के सारे फरिशते रसूल पर दरूद भेजते हैं। हे ईमान वालो! तुम दरूद और सलाम भेजो नबी पर।

इस आयत से पता चलता है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कर्म ऐसे थे कि अल्लाह तआला ने उनकी प्रशंसा या गुणों को सीमाबध करने के लिए कोई शब्द विशेष न फरमाया। शब्द तो मिल सकते थे, लेकिन ख़ुद उपयोग न किए। अर्थात आप के अच्छे कर्मों की प्रशंसा सीमाओं से परे थी। इस प्रकार की आयत किसी नबी की शान में प्रयोग न की। आप की रूह में वह ईमानदारी व निष्ठा थी और आप के कर्म ख़ुदा की निगाह में इतने पसंदीदा थे कि अल्लाह तआला ने हमेशा के लिए यह आदेश दिया कि भविष्य में लोग धन्यवाद के रूप में दरूद भेजें।

(मल्फूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 23)

दरूद शरीफ की बरकत

एक रिवायत में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि कयामत के दिन लोगों में से सब से अधिक मेरे निकट वह व्यक्ति होगा जो उनमें से मुझ पर सब से अधिक दरूद भेजने वाला होगा।

(तिरमिज़ी किताबुस्सलात, बाब मा जाआ फ़ी फ़ज़्लिस्सलाते अल न्नबिय्येस.अ.व.)

हज़रत अनस रज़ि अल्लाह से रिवायत है कि आपस. ने कहा -

"प्रलय के दिन उस दिन के प्रत्येक भयावह स्थान में तुम में से सब से अधिक मुझ से निकट वह व्यक्ति होगा जिसने संसार में मुझ पर सब से अधिक दरूद भेजा होगा।"

(तफ़्सीर दुर्रेमन्सूर हवाला शै'बुलईमान लिलबैहक़ी व तारीख़ इब्ने असाकिर)

☆ ☆ ☆

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उच्च और महान शान के बारे में सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश।

हमेशा की रूहानी ज़िन्दगी वाला नबी और महिमा और पवित्रता के सिंहासन पर बैठने वाला हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम है।

हे वे सभी लोगो जो धरती पर रहते हो और हे समस्त वे मानव रूहो जो पूर्व और पश्चिम में आबाद हो मैं पूरे ज़ोर के साथ आप को इस तरफ़ दावत देता हूं कि अब धरती पर सच्चा धर्म केवल इस्लाम है और सच्चा ख़ुदा भी वही ख़ुदा है जो कुरआन ने वर्णन किया है और हमेशा की रूहानी ज़िन्दगी वाला नबी और महिमा और पवित्रता के सिंहासन पर बैठने वाला हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम है।, जिस का आध्यात्मिक जीवन और पवित्र महिमा हमें यह सबूत मिला है कि इस के उनुकरण और मुहब्बत से हम रूहुल कुदुस और ख़ुदा के संवाद और आसमानी निशानों के पुरस्कार पाते हैं।

(तर्याकुल कुलूब पृष्ठ 11 रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 15)

पवित्र और पूर्ण तौहीद केवल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के माध्यम से मिलती है

मैं हमेशा आश्चर्य की निगाह से देखता हूं कि यह अरबी नबी जिसका नाम मुहम्मद है (हज़ार हज़ार दरूद और सलाम उस पर) यह किस उच्च स्तर का नबी है। इसके उच्च स्तर की सीमा का ज्ञान नहीं हो सकता और उसकी प्रभावशीलता का अनुमान करना मनुष्य का काम नहीं। अफसोस कि जैसा हक पहचानने का है उसके स्तर को पहचाना नहीं किया गया। वह तौहीद (तौहीद) जो दुनिया से खो चुकी थी वही एक पहलवान है जो फिर से उसे दुनिया में लाया। उसने ख़ुदा से बहुत अत्यधिक सीमा तक मुहब्बत की और अत्यधिक सीमा तक मानव जाति की सहानुभूति में इस की जान नर्म हुई इसलिए ख़ुदा ने जो उसके दिल के रहस्यों का परिचित था उसे सभी नबियों और सभी सर्वोच्च और आख़रीन पर उत्कृष्टता दी और उसकी मुरादें उसके जीवन में उसे दें। वही है जो स्रोत है प्रत्येक फ़ैज़ है और वह व्यक्ति जो बिना उस की स्वीकारोक्ति के फैज़ पाने, किसी पुण्य के पाने का दावा करता है। वह व्यक्ति नहीं है बल्कि शैतान की ज़ुर्रियत (सन्तान) है क्योंकि प्रत्येक पुण्य की कुंजी उसे दी गई है और प्रत्येक अनुभूति का ख़जाना उसे प्रदान किया गया है। जो उसके द्वारा नहीं पाता वह चिरस्थायी वंचित है। हम क्या चीज़ हैं और हमारी वास्तविकता क्या है। हम नेअमत का इन्कार करने वाले होंगे अगर इस बात को स्वीकार न करें कि वास्तविक तौहीद हम ने इसी नबी के माध्यम से पाई और जीवित ख़ुदा की पहचान हमें इसी पूर्ण नबी के माध्यम से और उसके प्रकाश से मिली है और ख़ुदा के बातचीत और वार्तालाप का श्रेय भी जिस से हम उसका चेहरा देखते हैं उसी नबी द्वारा हमें मयस्सर आया है इस हिदायत के सूर्य की किरणें धूप की तरह हम पर पड़ती हैं और उसी समय तक हम मुनव्वर (प्रकाशित) रह सकते हैं जब तक कि हम उस के मुकाबला में खड़े हैं।

(हकीकतुल वह्यी पृष्ठ 115 से 118 रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 22 पृष्ठ 118)

हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम महिमा और जमाल दोनों के सार थे

हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम महिमा और जमाल दोनों के सार थे। मक्का का जीवन जमाली रंग में था और मदीना का जीवन जलाली (प्रतापी) रंग में। और फिर यह दोनों गुण उम्मत के लिए इस तरह से वितरित की गईं कि सहाबा रज़ियल्लाहो अन्हुम को महिमा के रंग का जीवन प्राप्त हुआ और जमाली रंग जीवन के जीवन लिए मसीह मौऊद को आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अभिव्यक्ति पहुंची।

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 17 अरबईन नंबर 4 पृष्ठ 13)

उन्नत स्तर की और हिकमत वाली शिक्षा देने वाला

मुझे बतलाया गया है कि सभी धर्मों से इस्लाम ही सच्चा है मुझ से फरमाया गया है कि सभी हिदायतों में से केवल कुरआन की हिदायत ही पूर्णत: सहीह और मानवीय मिलावटों से मुक्त है मुझे समझाया गया है कि सारे रसूलों में से परिपूर्ण शिक्षा देने वाला और उन्नत स्तर की शुद्ध और हिकमत वाली शिक्षा देने वाला और मानवीय कमालों का अपने जीवन के माध्यम से उच्च नमूना दिखलाने वाला केवल हज़रत सय्यदना व मौलाना मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं।

(अरबईन भाग 1- पृष्ठ 7-8)

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चे दिल से पालन करना मनुष्य ख़ुदा का प्यारा बना देता है

अल्लाह तआला ने अपना एक साथ प्यार करना इस बात के अधीन है कि ऐसा व्यक्ति आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पालन करे। इसलिए मेरा यह व्यक्तिगत अनुभव है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चे दिल से पालन करना और अपने प्यार रखना अंतत: मनुष्य ख़ुदा का प्यारा बना देता है। इस तरह से है कि खुद उसके दिल में प्यार दिव्य एक सूजन पैदा कर देता है। तब ऐसा व्यक्ति प्रत्येक बात से आहत होकर ख़ुदा की तरफ झुक जाता है और इसका अनस और शौक केवल ख़ुदा तआला से रह जाता है तब प्रेम दिव्य एक विशेष तजल्ली उस पर पड़ती है और एक पूरा रंग प्रेम और प्यार देकर मजबूत जुनून के साथ आकर्षित करती है। तब भावनाओं ंसानिया पर वह ताकतवर आ जाता है और उसके समर्थन और नुसरत हर एकपहलो से ख़ुदा तआला के खारक आदत कार्यों निशानों के रंग में दिखाई देते हैं।

(हकीकतुल वह्यी पृष्ठ 66)

यह चुना हुआ नबी हमेशा के लिए जीवित है।

समस्त मानव जाति के लिए सम्पूर्ण धरती पर अब क़ुर्आन के अतिरिक्त कोई पुस्तक नहीं और न ही हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सिवा कोई रसूल और सिफ़ारिश करने वाला । अत: तुम प्रयास करो कि सच्चा प्रेम इस प्रभुत्वशाली नबी के साथ हो । उस पर किसी अन्य को किसी भी प्रकार की श्रेष्ठता न दो, ताकि आकाश पर तुम्हारा नाम मुक्ति प्राप्त लोगों में लिखा जाए । स्मरण रहे कि मुक्ति कोई ऐसी वस्तु नहीं जो मरणोपरान्त प्रकट होगी अपितु वास्तविक मुक्ति वह है जो इसी सँसार में अपना प्रकाश दिखलाती है । मुक्ति प्राप्त मनुष्य कौन है ? वह जो विश्वास रखता है कि ख़ुदा एक वास्तविक सत्य है और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसके और उसकी प्रजा के मध्य सिफ़ारिश करने वाले हैं । आकाश के नीचे उनके समान न कोई अन्य रसूल है और न क़ुर्आन के समान कोई अन्य पुस्तक है । ख़ुदा ने किसी के लिए न चाहा कि वह सदा जीवित रहे परन्तु यह ख़ुदा की ओर से आया हुआ नबी सदा के लिए जीवित है।

(कश्ती नूह पृष्ठ 13

☆ ☆ ☆

अगर हम चाहते हैं कि हमें अल्लाह तआला की नज़दीकी मिले, अल्लाह तआला हमारी दुआओं को सुने, अल्लाह तआला की मुहब्बत हमारे दिलों में पैदा हो तो अल्लाह तआला ने उसके लिए हमें एक सिद्धांत वर्णन फरमा दिया है कि ये बातें तुम तभी प्राप्त कर सकते हो जब तुम रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श पर चलो और उस के उस्वा (आदर्श) को देखने के लिए, समझने के लिए, इस पर अनुकरण करने के लिए यह भी अल्लाह तआला का एहसान है कि उसने सहाबा रिज़वानुल्लाह अलैहिम के द्वारा वे सब बातें भी हमें पहुंचा दीं जिन पर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पालन किया करते थे। यह बात भी समझनी आवश्यक है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम प्रत्येक वह काम करने वाले और बात करने वाले थे जो अल्लाह तआला ने कुरआन में वर्णन की है।

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुबारक जीवन से

तौहीद की,स्थापना, इबादत की पूजा, ईमानदारी और सच्चाई, विनम्रता और विनय, दान एवं उदारता, धन्यवाद, चरित्र की शिक्षा,औलाद का प्रशिक्षण और पड़ोसियों से अच्छा व्यवहार आदि के बारे में विविध घटनाओं की ईमान वर्धक चर्चा और इस संदर्भ में जमाअत के लागों को हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श को अपनाने की ताकीदी नसीहत।

ख़ुदा करे कि हम मौखिक दावे से नहीं बल्कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उस्वा पर चलते हुए वास्तविक पालन करने वाले और आप का अनुकरण करने वाले हों और अपनी माफी के सामान करने वाले हों।

कादियान दारुल अमान में जमाअत अहमदिया सिद्ध सार्वभौमिक सभा वार्षिक अवसर पर 28 दिसंबर 2016 को सैयदना हज़रत खलीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ का ताहिर हॉल बैतुल फुतूह लंदन से एम टी ए के संचार साधन से सीधे समापन भाषण।

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۔

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ

(आले इमरान: 32)

इस आयत का अनुवाद है कि तू कह दे! अगर तुम अल्लाह तआला से प्रेम रखते हो, तो मेरा अनुसरण करो, मेरा पालन करो। इस मामले में अल्लाह तआला भी तुमसे प्यार करेगा और तुम्हारे अपराध तम्हें बख्श देगा और अल्लाह तआला बख्शने वाला और बार बार दया करने वाला है।

अगर हम चाहते हैं कि हमें अल्लाह तआला की नज़दीकी मिले, अल्लाह तआला हमारी दुआओं को सुने, अल्लाह तआला की मुहब्बत हमारे दिलों में पैदा हो तो अल्लाह तआला ने उसके लिए हमें एक सिद्धांत वर्णन फरमा दिया है कि ये बातें तुम तभी प्राप्त कर सकते जब तुम रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श पर चलो और उस के उस्वा (आदर्श) को देखने के लिए, समझने के लिए, इस पर अनुकरण करने के लिए यह भी अल्लाह तआला का एहसान है कि उसने सहाबा रिज़वानुल्लाह अलैहिम के द्वारा वे सब बातें भी हमें पहुंचा दीं जिन पर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पालन किया करते थे। यह बात भी समझनी आवश्यक है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम प्रत्येक वह काम करने वाले और बात करने वाले थे जो अल्लाह तआला ने कुरआन में वर्णन की है हज़रत आयशा रज़ियल्लाहो अन्हा ने यह पूछने पर कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आचरण और कर्म क्या थे? बहुत सुंदर तरीके से तीन शब्दों में आप के उस्वा का उल्लेख किया गया कि كَانَ خُلُقُهُ الْقُرْآن (अहमद बिन हंबल जिल्द 8 पृष्ठ 144 हदीस 25108 मसनद आयशा मुद्रित आलमुल कुतुब बैरूत 1998 ई) कि आप के आचरण और कर्म वही थे जो कुरआन जैसी महान किताब अपने अंदर समेटे हुए है और फिर इस ज़माने में अल्लाह तआला ने हम पर अधिक एहसान करके अपने फरस्तादे और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम और ज़माने के इमाम मसीह मौऊद और महदी मऊद को भेजा जिन्होंने हमें नबियों के स्थान और विशेष रूप से आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के आदर्श का अधिक एहसास हुआ।

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह फरमाते हैं कि "याद रखना चाहिए कि नबियों रसूलों और इमामों के आने से क्या उद्देश्य है? वह दुनिया में इसलिए नहीं आते कि उन्हें अपनी पूजा करानी होती है। वह तो एक ख़ुदा की इबादत की स्थापना करना चाहते हैं और इसी मतलब के लिए आते हैं और इसलिए कि लोग उनके पूर्ण नमूना का पालन करें और उनके जैसे बनने की कोशिश करें और ऐसी अनुसरण कि मानो वही हो जाएं। लेकिन खेद है कि कुछ लोग उनके आने के मूल उद्देश्य को छोड़ देते हैं और उन्हें ख़ुदा समझ लेते हैं। इससे वह इमाम और रसूल ख़ुश नहीं हो सकते कि लोग उनका इस कदर सम्मान करते हैं। कभी नहीं। वह उसे कोई ख़ुशी का कारण करार नहीं देते। उनकी वास्तविक खुशी इसी में होती है कि लोग उनकी इत्तेबा करें और जो शिक्षा वह पेश करते हैं कि सच्चे ख़ुदा की इबादत करो और तौहीद पर स्थापित हो, उस पर कायम हों। इसलिए आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

को भी आदेश हुआ कि

قُلۡ اِنۡ کُنۡتُمۡ تُحِبُّوۡنَ اللّٰہَ فَاتَّبِعُوۡنِیۡ یُحۡبِبۡکُمُ اللّٰہُ

(आले इमरान 32 :) अर्थात हे रसूल उन्हें कह दो कि अगर तुम अल्लाह तआला से प्यार करते हो तो मेरा अनुसरण करो। इस अनुसरण का निष्कर्ष होगा कि अल्लाह तआला तुम से प्यार करेगा । फरमाते हैं कि "इससे साफ पता चलता है कि अल्लाह तआला का प्रिय बनने का तरीका यही है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सच्चा अनुसरण किया जाए। अत: इस बात को हमेशा याद रखना चाहिए कि अंबिया अलैहिमुस्सलाम और ऐसा ही और जो ख़ुदा तआला के सच्चे और पवित्र बन्दे होते हैं वे दुनिया में एक नमूना होकर आते हैं जो व्यक्ति इस नमूना के अनुसार चलने की कोशिश नहीं करता लेकिन उन्हें सजद: करने और ज़रूरतों को पूरा करने वाला मानने को तैयार हो जाता है वह कभी ख़ुदा तआला के पास सम्माननीय नहीं है बल्कि वह देख लेगा कि मरने के बाद वह इमाम इससे निराश हो जाएगा। "

(मल्फूज़ात, जिल्द 6, पृष्ठ 288 से 289, संस्करण 1985 मुद्रित यु.के)

अत: पहली बात जो नबी सिखाते हैं और जिस के अत्यधिक स्थान पर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नियुक्त थे वे तौहीद की स्थापना और यही बात है जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने मानने वालों में पैदा फरमाई और इस के भी उच्च नमूने हमें आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा में मिलते हैं। सहाबा ने सीधे आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से फ़ैज़ पाया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुहब्बत और इबादत करने के स्तर को तो इस चीज़ ने इन में भी तौहीद की स्थापना की तड़प पैदा कर दी। जैसा कि मैंने कहा कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श को हस तक पहुंचाने में सहाबा रिज़वानुल्लाह की भी भूमिका है बल्कि बहुत बड़ी भूमिका है बल्कि उपकार है। कुछ रिवायतें प्रस्तुत करता हूँ।

एक अवसर पर एक बार हज़रत उमर रज़ि अपने पिता की कसम खा रहे थे। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह बात सुनी और फरमाया कि सुनो ! अल्लाह तआला ने तुम्हें बापों की कसम खाने से मना किया है। जिसे कसम खाने की ज़रूरत है, वह ख़ुदा की शपथ खाए या फिर चुप रहे। (सहीह अलबुख़ारी किताबुल अदब अध्याय हदीस 6108) अत: अल्लाह तआला के सिवा किसी भी प्रकार की कसम वैध नहीं। कुछ लोग बच्चों की कसम खा जाते हैं, करीबियों और प्रियजनों की कसम खा जाते हैं। समझते हैं कि यह हमारे प्यारे हैं उनकी कसम खाएंगे तो दूसरा विश्वास कर लेगा। लेकिन मोमिन को हमेशा याद रखना चाहिए कि यह बातें तौहीद से दूर करने वाली हैं।

एक बार एक प्रश्न करने वाले के इस सवाल पर कि या रसूलल्लाह! (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) कोई अपने सम्मान के लिए लड़ता है। कोई अपनी बहादुरी दिखाने के लिए लड़ता है। कोई लूट के लिए लड़ता है। उनमें से जिहाद करने वाला कौन होगा? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जो व्यक्ति इसलिए लड़ता है कि अल्लाह तआला का नाम बुलंद हो और तौहीद की स्थापना हो वास्तव में वही ख़ुदा तआला के मार्ग में जिहाद करने वाला गिना जाएगा।

(सहीह अलबुखारी, किताब जिहाद हदीस 2810)

अत: प्रत्येक कर्म जो तौहीद की स्थापना के लिए है वही कर्म है जो ख़ुदा तआला को भी पसंद है और वही कर्म है जिस को स्थापित करने के लिए आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भेजे गए।

एक बार जब मक्का के सरदारों ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बातचीत करने के लिए बुलाया तो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने समझा कि शायद उन को कुछ विचार आ गया है और उन्हें सीधे रास्ते पर आने का इरादा है। इसलिए आप जिल्दी से वहाँ पधारे तो उन सब सरदारों ने सर्वसम्मति से यह कहा कि हे मुहम्मद! (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) हम ने आप को बातचीत करने के लिए बुलाया है। हम अरब में किसी को नहीं जानते जिसने अपने लोगों को इस कदर मुश्किल में पीड़ित कर दिया हो जैसा कि आप ने मुश्किल में डाला है। आप हमारे देवताओं को बुरा भला कहते हैं। हमारी जमाअत के टुकड़े कर दिए हैं। कोई ख़राबी नहीं जो आप की वजह से न हो गई हो। (अर्थात उनकी नज़र में, दुनियादारी की नज़र में जो ख़राबी हो सकती थी। वास्तव में तो दुनिया के सुधार के लिए आए थे, तो कहने लगे कि) आप का उद्देश्य माल जमा करना है, तो हम इस कदर माल देते हैं कि देश में अमीर धनाढ्य व्यक्ति बन जाएंगे। अगर सरदार बनना चाहते हैं तो हम आपको अपना सरदार बना लेते हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि तुम मुझे गलत समझे। ये बातें तो न मुझसे हैं, न में ज़हरी सम्मान व प्रतिष्ठा चाहता हूँ। मुझे ख़ुदा तआला ने रसूल बनाकर भेजा है। मुझ पर किताब नाज़िल हुई है और आदेश दिया है कि मैं बशीर और नज़ीर बनकर ख़ुशखबरियां भी दूं और डराओं भी। तौहीद की स्थापना करूं। इसलिए मैंने तुम्हें ख़ुदा तआला का संदेश पहुंचा दिया है अगर तुम इसे स्वीकार करो तो इस में तुम्हारा अपना लाभ है और यदि तुम स्वीकार न करो तो तुम उस समय तक सब्र करो और मैं भी धैर्य करता हूँ जब तक ख़ुदा तआला निर्णय न कर दे और फिर दुनिया ने देखा कि किस तरह अल्लाह तआला ने फैसला किया और कैसे तौहीद की स्थापना हुई।

(सीरत इब्ने हिशाम पृष्ठ 220 मुद्रित दारुल कुतुब अल्इलिमया बैरूत 2001 ई)

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अबोदियत का उल्लेख फरमाते हुए सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं: " कुरआन पढ़ कर देख लो और तू और हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बढ़कर दुनिया में किसी पूर्ण आदमी का नमूना मौजूद नहीं और न भविष्य में क़यामत तक हो सकता है। फिर देखो कि सामर्थ वाले चमत्कार के मिलने पर भी हुज़ूर से साथ हाल हमेशा अबोदियत ही रही और बार बार اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثۡلُکُمۡ(अलकहफ: 111) ही कहते रहे। यहाँ तक कि कलमा तौहीद में अपनी अबोदयत के स्वीकार को एक अभिन्न अंग बताया। जिसके बिना मुसलमान, मुसलमान ही नहीं हो सकता। सोचो! और फिर सोचो !! अत: जो हाल में पूर्ण हिदायत देने वाली की जीवन शैली हमें यह शिक्षा दे रही है कि निकटता के उच्चतम स्थान पर भी पहुंचकर अबोदियत की स्वीकारोक्ति को हाथ से नहीं दिया तो और किसी का तो ऐसा समझना और ऐसी बातों का दिल में लाना ही व्यर्थ और बेकार है।"

(मल्फूज़ात, जिल्द 1, पृष्ठ 117 से 118, संस्करण 1985 ई मुद्रित यु.के)

अत: यह है वह एहसास जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें दिया कि जब एक मुसलमान यह घोषणा करता है कि अशहदो अन ला इलाहा इल्लल्लाह तो यह घोषणा भी आवश्यक है कि अशहदो अन्न मोहम्मदन अब्दुहू वरसूलहू। अत: जब पूर्ण नबी अल्लाह तआला के बंदे हैं तो वे लोग जो पीरों फ़क़ीरों को इससे अधिक स्थान देकर उनकी कब्र पर सजदे करते हैं उनके कर्म को कैसे वैध करार दिया जा सकता है, बल्कि यह बहुत बड़ा गुनाह और शिर्क है। यह अल्लाह तआला का एहसान है कि उसने हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने की तौफ़ीक़ अता फरमाई जिन्होंने तौहीद के मूल बिंदु और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अबोदियत का पूर्ण एहसास हमें प्रदान फरमाया और हमें हर प्रकार के शिर्क से मुक्त फरमाया।

फिर सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह फरमाते हैं:

"मैं हमेशा आश्चर्य की निगाह से देखता हूं कि यह अरबी नबी जिसका नाम मुहम्मद है (हज़ार हज़ार दरूद और सलाम उस पर) यह किस उच्च स्तर का नबी है। इसके उच्च स्तर की सीमा का ज्ञान नहीं हो सकता और उसकी प्रभावशीलता का अनुमान करना मनुष्य का काम नहीं। अफसोस कि जैसा हक पहचानने का है उसके स्तर को पहचाना नहीं किया गया। वह तौहीद (तौहीद) जो दुनिया से खो चुकी थी वही एक पहलवान है जो फिर से उसे दुनिया में लाया। उसने ख़ुदा से बहुत अत्यधिक सीमा तक मुहब्बत की और अत्यधिक सीमा तक मानव जाति की सहानुभूति में इस की जान नर्म हुई इसलिए ख़ुदा ने जो उसके दिल के रहस्यों का परिचित था उसे सभी नबियों और सभी सर्वोच्च और आख़रीन पर उत्कृष्टता दी और उसकी मुरादें उसके जीवन में उसे दें।"

(हकीकतुल वह्यी, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 22, पृष्ठ 118 से 119)

तौहीद की स्थापना मेराज तब होती है जब इंसान अल्लाह तआला की इबादत के भी हक़ अदा करने वाला हो और इसमें भी मेरे मौला हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि ने सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया जो अल्लाह तआला ने इस तरह गवाही दी। फरमाया الَّذِیْ یَرٰىكَ حِیْنَ تَقُوْمُ وَ تَقَلُّبَكَ فِی السّٰجِدِیْنَ (अश्शुअरा 219-220) अर्थात जो देख रहा होता है जब तू खड़ा होता है और सजदा करने वालों में तेरी व्याकुलता को भी। अत: अल्लाह तआला घोषणा कह रहा है कि हे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सभी सजदे करने वालों में तेरे जैसा बेकरार सजद: करने वाला कोई नहीं। तूने तौहीद की स्थापना से श्रद्धालुओं का एक ऐसी जमाअत बना ली जो अल्लाह तआला की इबादतों में भी अनुपमीय है, जिनकी रातें इबादतों में गुज़रती थीं। लेकिन यह सब इबादतें और सजदे तेरे सजदों के नमूने अपनाने की कोशिश थी। इन सजदों की व्याकुलता में जहाँ हमें आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तौहीद को स्थापित करने के लिए तड़प दिखती है वहाँ यह भी नज़र आता है कि आप अपने मानने वालों में ऐसे सजदे करने वाले पैदा करना चाहते थे जो शुद्ध होकर केवल अल्लाह तआला ही के आगे झुक कर उसकी इबादत करें। दिलों में बसे हुए झूठे उपास्यों को निकालें। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक बार फरमाया कि हर नबी कोई इच्छा होती है और मेरी हार्दिक इच्छा रात की इबादत है। (कनज़ुल उम्माल, जिल्द 7, पृष्ठ 323, हदीस 21398, मुद्रित दारुल कुतुब इलिमया बैरूत 2004 ई) एक रिवायत करने वाले बताते हैं कि मैंने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नमाज़ पढ़ते हुए देखा। इस समय रोने की तीव्रता से आप के सीने से ऐसी आवाज़ आ रही थी जैसे चक्की चलने की आवाज़ आती है। (सुनन अबी दाऊद हदीस 904) (दाना पीसने के लिए चक्की चलाते हैं जो चक्की की आवाज़ होती है।) इसी तरह एक रिवायत में यह भी है कि ऐसी आवाज़ आती थी जैसे हंडिया उबल रही हो।

(सुनन निसाई, हदीस 1214)

हज़रत उम्मे सलमा फरमाती हैं कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कुछ देर सोते फिर जागते कुछ देर नमाज़ में व्यस्त हो जाते फिर सो जाते फिर उठ बैठते। यहां तक कि सुबह तक यही हालत जारी रहती।

(सुनन निसाई, हदीस 1628)

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहो अन्हा फरमाती हैं कि बीमारी या किसी और कारण से यदि आप से तहज्जुद से रह जाती तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दिन को बारह रकअत नफल पढ़ा करते थे।

(सुनन निसाई, हदीस 1789)

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अपने मानने वालों के लिए भी यही इच्छा और उम्मीद थी कि वह इबादत करने वाले हों और इबादत का अधिकार देने वाले हैं।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहो अन्हा ने एक बार नसीहत करते हुए आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस इच्छा के अधीन के आप की उम्मत के लोगों की इबादत की गुणवत्ता ऊंची हों फरमाया कि रात को नमाज़ पढ़ना मत छोड़ना इसलिए कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नहीं छोड़ते थे। अर्थात रातों की नमाज़ें नफल न छोड़ना और जब आप बीमार हो जाते, शरीर में सुस्ती महसूस फरमाते तो बैठकर तहज्जुद की नमाज़ पढ़ते। (मस्नद अहमद बिन हंबल, जिल्द 8, पृष्ठ 222 से 223, मसनद आयशा हदीस 25458, मुद्रित आलमुल कुतुब अलइल्मिया बैरूत 1998 ई)

यह जो मैंने अभी रिवायत पढ़ी है कि अगर तहज्जुद छुट जाती तो बारह नफिल दिन में अदा फरमाते इस हालत शायद कभी ही होती होगी। अन्यथा आप एक बार बावजूद बीमारी के जिसका असर सहाबा भी उस समय आप के शरीर पर महसूस कर रहे थे, चेहरे पर महसूस कर रहे थे आपने फ़रमाया कि कमजोरी के बावजूद आज रात भी मैंने लंबी सूरतें ही पढ़ी हैं। (कनज़ुल उम्माल जिल्द 2 पृष्ठ 133 हदीस 4069 मुद्रित दारुल कुतुब ालकतब अलइल्मिया बैरूत 2004 ई) और सारी नमाज़ों और इबादतों में इस बात पर ज़ोर था कि मेरी उम्मत वास्तव में इबादत करने वाली बने और अपने ख़ुदा के सम्मुख झुकी रहे। आप के सहाबा ने आप की यह तड़प देखी और आपकी सोहबत का असर पाया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उस्वा को अपनाया। तो वही जो मुशरिक थे ऐसे इबादत करने वाले बने जो बाद में आने वालों के लिए एक नमूना बन गए। एक क्रांति थी जो में आई।

इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं: "मैं बड़े जोर से कहता हूँ कि चाहे कैसा ही पक्का दुश्मन हो और चाहे वह ईसाई हो या आर्य जब वे इन स्थितियों को देखेगा जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पहले अरब की थी और फिर इस परिवर्तन पर नज़र करेगा जो आप की शिक्षा और प्रभावशीलता से पैदा हुई तो उसे अपने आप की सत्यता की गवाही देनी पड़ेगी। मोटी सी बात है कि कुरआन ने उनकी पहली हालत का तो यह नक्शा खींचा है। وَ یَاْكُلُوْنَ كَمَا تَاْكُلُ الْاَنْعَامُ (मुहम्मद 13 :) (कि जानवरों की तरह खाना ही उनका काम था) यह तो उनकी कुफ्र की हालत थी। फिर जब आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पवित्र प्रभाव ने उनमें बदलाव पैदा हुआ तो उनकी यह हालत हो गई وَ الَّذِیْنَ یَبِیْتُوْنَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَّ قِیَامًا (अल्फ़ुरकान 65 :) अर्थात वह अपने रब्ब के हुज़ूर सज्द: करते हुए और रातों को जागते हुए रातें काट देते हैं। जो परिवर्तन आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अरब के बर्बरों में की और जिस गड्ढे से निकाल कर जिस ऊंचाई और स्थान तक उन्हें पहुंचाया। " आप फरमाते हैं " इस सारी स्थिति के नक्शे को देखने से अपने आप मनुष्य रो पड़ता है कि क्या महान क्रांति है जो आपने की। दुनिया की किसी इतिहास और किसी राष्ट्र में उसका उदाहरण नहीं मिल सकता।"

(मल्फूज़ात, जिल्द 9, पृष्ठ 144 से 145, संस्करण 1985 मुद्रित यू. के)

यह केवल कहानी नहीं। ये घटनाएं हैं जिनकी सच्चाई का एक युग को स्वीकार करना पड़ा है और इसी सच्चाई को स्थापित करने के लिए इस युग में अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भेजा है। अत: हमारा भी यह काम है कि अपनी इबादतों की गुणवत्ता को बढ़ाएं और इस आदर्श पर चलें जो क़यामत तक स्थापित करने वाला है।

मैंने नफलों के बार में रिवायतें वर्णन की हैं। जब नफल के बारे में यह हिदायत है और यह हालत है तो जो कर्त्तव्य हैं उनमें कितनी नियमित होने की ज़रूरत है। अत: हम में से प्रत्येक को अपनी समीक्षा करने और उस पर विचार करने की ज़रूरत है।

नबी दुनिया में आते हैं सच्चाई फैलाने के लिए। सच्चाई पर अपने मानने वालों को चलाने के लिए। सच्चे ख़ुदा की ओर झुकाव के लिए और इसमें भी आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को एक उच्च स्थान प्राप्त हुआ है। बचपन से ही आप में यह विशेषता इतनी स्पष्ट थी कि दुश्मन भी

आप की सच्चाई को स्वीकार करते थे। एक बार क़ुरैश के सरदार एकत्र हुए जिनमें आप के सबसे अधिक दुश्मन अबूजहल और नज़र बन हारिस भी शामिल थे। जब आप के बारे में यह कहा गया कि आप को जादूगर प्रसिद्ध कर दिया जाए, झूठा प्रसिद्ध कर दिया जाए या कहा जाए कि यह झूठा है। तो नज़र बन हारिस ने खड़े होकर कहा, हे क़ुरैश! एक ऐसा मामला तुम्हारे सामने आया है जिस के मुकाबला के लिए तुम कोई उपाय भी नहीं ला सके या ला सकते। मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तुम में जवान थे और तुम्हें सबसे ज्यादा पसंद थे। सबसे अधिक सच बोलने वाले थे। तुम में सबसे अधिक अमानतदार थे। अब तुम उनकी कनपटियों पर सफेद बाल देखते हो (बड़ी उमर हो गई है) और जो संदेश वह लेकर आए हैं इस पर तुमने कहा कि वह झूठे हैं, वह जादूगर हैं। हम ने भी झूठे लोग देखे हैं, जादूगर भी देखे हैं। तुम ने कहा वह याजक हैं। हम ने याजक भी देखे हैं। तुमने कहा वह कवि है। हम ने शायर भी देखे हैं। तुम ने कहा मजनून हो गया। पागल हो गया है (नऊज़ो बिल्लाह)। हम भी मजनून भई देखे हैं। न वह झूठे हैं, न वह जादूगर हैं, न वह याजक हैं, न वह कवि है, न मजनून हैं। कोई भी चिह्न उनमें इन बातों का नहीं है। अत: विचार कर लो तुम्हारा मामला एक बड़े मामले है। (सीरत इब्ने हिशाम पृष्ठ 224 मुद्रित दारुल कुतब अलइलिमया बैरूत 2001 ई) यह दुश्मन कह रहा है।

फिर एक बार अबूजहल ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को संबोधित कर के कहा कि मैं तुम्हें झूठा नहीं कहता तुम्हारी शिक्षा को झूठा समझता हूँ। (सुनन अत्तिरमज़ी, हदीस 3064) आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मैं तुम्हारे मध्य इतना समय रहा हूँ लेकिन कभी तुम मेरा झूठ साबित नहीं कर सके। झूठा नहीं मुझे कह सके। तो क्या आज इस शिक्षा लाने के कारण ख़ुदा तआला के मामले में झूठ बोलूँगा?

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि: " नबी वे लोग होते हैं जिन्होंने अपनी पूर्ण सच्चाई की मजबूत हुज्जत प्रस्तुत करके अपने दुश्मनों को भी आरोप दिया जैसा कि यह आरोप कुरआन शरीफ में हजरत ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ से मौजूद है जहां फरमाया है कि فَقَدْ لَبِثْتُ فِيكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهِ ۖ أَفَلَا تَعْقِلُونَ (यूनुस 17 :) अर्थात ऐसा नहीं कि झूठ बोलूं और झूठा आरोप लगाओं। देखो मैं चालीस वर्ष पहले तुम में ही रहता हूँ। क्या कभी तुम मेरा कोई झूठ या आरोप लगाना साबित किया। फिर क्या तुम को इतनी समझ नहीं। अर्थात यह समझ कि जिसने कभी आज तक किसी प्रकार का झूठ नहीं बोला वह अब ख़ुदा पर क्यों झूठ बोलने लगा। अत: अम्बिया के जीवन की घटनाऐं और उनका अच्छा चलन ऐसी स्पष्ट और सिद्ध है कि अगर सब बातों को छोड़ कर इन घटनाओं को ही देखा जाए तो उनकी प्रामाणिकता उनकी घटनाओं से उज्ज्वल हो रही है। जैसे अगर कोई न्यायाधीश और बुद्धि वाला इन सभी तर्कों और हज़रत ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नबूवत की सच्चाई से ... ध्यान हटा कर केवल उनकी स्थिति पर ही विचार करे तो निस्संदेह उन्हें स्थितियों पर विचार करने से उनके नबी सादिक होने पर हार्दिक विश्वास करेगा। और कैसे विश्वास न करे। वे घटनाएं ही ऐसी अद्भुत सच्चाई और सफाई सुगंधित हैं कि सच्चाई के इच्छुकों के दिल अपने आप उन की तरफ खींचे जाते हैं। "

(बराहीने अहमदिया, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 1, पृष्ठ 107 से 108)

आप की सच्चाई का आप का बचपन भी गवाह है। आप की जवानी भी गवाह है और नबुव्वत के बाद तो उसकी शान ही पूर्णता तक पहुंची हुई है। तब इस नबी के मानने वालों को अपनी समीक्षा करने की भी ज़रूरत है कि हमारी सच्चाई की गुणवत्ता क्या होनी चाहिए।

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

की मुहब्बत में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का कलाम

वह पेश्वा हमारा जिस से है नूर सारा
नाम उस का है मुहम्मद(स) दिलबर मेरा यही है
सब पाक हैं पयम्बर इक दूसरे से बहतर
लेक अज़ खुदाए बरतर ख़ैरुल वरा यही है
पहलों से ख़ूब तर है ख़ूबी में इक क़मर है
उस पर हर इक नज़र है बदरुद्दुजा यही है
पहले तो रह में हारे पार उसने हैं उतारे
मैं जाऊँ उस के वारे बस ना ख़ुदा यही है
पर्दे जो थे हटाए अन्दर की रह दिखाए
दिल यार से मिलाए वो आश्ना यही है
वह यारे ला मक़ानी, वह दिलबरे निहानी
देखा है हम ने उस से बस रहनुमा यही है
वह आज शाहे दीं है, वह ताजे मुरस्लीं है
वह तय्यबो अमीं है, उस की सना यही है
हक़ से जो हुक्म आए उस ने वो कर दिखाए
वह राज़ दीं बताए नेअमुल-अता यही है
आँख उसकी दूरबीं है, दिल यार से करीं है
हाथों में शमअे दीं है अैनुज्ज़िया यही है
जो राज़े दीं थे भारे उस ने बताए सारे
दौलत का देने वाला फर्मा रवा यही है
उस नूर पर फिदा हूँ उस का ही मैं हुआ हूँ
वह है मैं चीज़ क्या हूँ बस फैसला यही है
वह दिलबरे यगाना इल्मों का है ख़ज़ाना
बाकी है सब फसाना सच बे ख़ता यही है
सब हम ने उस से पाया शाहिद है तू खुदाया
वह जिस ने हक़ दिखाया वह मह लका यही है

☆ ☆ ☆

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक और विशेषता विनम्रता और विनय के उच्च गुणवत्ता का ज़िक्र करते हुए एक जगह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं: "देखो हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उपलब्धियां हालांकि ऐसी थीं कि सभी पिछले नबियों में इसका उदाहरण नहीं मिलता मगर आप को ख़ुदा तआला ने जैसी जैसी उपलब्धियां प्रदान कीं आप उतनी ही नम्रता अपनाते गए। एक बार की बात है कि एक व्यक्ति आप के सामने पकड़कर लाया गया। आप ने देखा तो वह बहुत काँपता था और भय करता था। मगर जब वह करीब आया तो आपने बहुत सहजता और आनंद से पूछा तुम ऐसे डरते क्यों हो? अंत में मैं भी तुम्हारी तरह एक इंसान ही हूँ और एक बुढ़िया का पुत्र हूं।''

(मल्फूज़ात, जिल्द 10, पृष्ठ 258, संस्करण 1985 मुद्रित यू. के)

एक हदीस है जिस में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की विनम्रता और विनय का भी पता चलता है और आप के मानने वालों के लिए इसमें नसीहत भी है कि उन्हें किस तरह जीवन गुज़ारना चाहिए।

हज़रत अबु हुरैरा रज़ियल्लाहो अन्हो कहते हैं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि तुम में से कोई भी अपने कर्मों की वजह से निजात नहीं पाएगा। सहाबा ने अर्ज़ किया। हे रसूलल्लाह! क्या आप भी? आपने फ़रमाया हाँ मैं भी अपने कार्यों की वजह से निजात नहीं पाऊंगा। लेकिन अल्लाह तआला मुझे अपनी दया की छाया में ले लेगा।

फरमाते हैं अत: तुम सीधे रहो और शरीयत के करीब रहो और सुबह शाम और रात के समय इबादत करो और मध्यम मार्ग धारण करो तो तुम अपनी मुराद को पहुंच जाओगे। (सही अलबुख़ारी, हदीस 6463)

अत: जिस नबी के बारे में ख़ुदा तआला फरमाता है कि उसकी बैअत मेरी बैअत है और उसका हाथ मेरे हाथ है लेकिन अल्लाह तआला से भय और विनम्रता का यह स्थान है कि आप फरमाते हैं कि मैं भी उसके रहमों और फज़्लों से ही बख्शा जाऊंगा और फिर आप ने फरमाया कि तुम लोग अपने कर्मों पर नज़रें रखो। अपनी इबादतों की तरफ नज़र रखो और कभी अपने ख़ुदा से बेवफाई न करो। कभी इबादतों से लापरवाही न करो।

फिर देखें आपकी सफलता और जीत पर विनम्रता और विनय का नज़ारा। दुनिया के नेता उपलब्धियां हासिल करते हैं तो फिरऔन बन जाते हैं बल्कि आम आदमी को भी अगर कोई सफलता मिले तो गर्दन गर्व और घमंड और अहंकार से अकड़ जाती है। लेकिन पूर्ण मनुष्य का आदर्श किया है। वह शहर जिसमें लोगों ने आपको और आपके मानने वालों को अत्याचार करके निकाला और उस पर बस नहीं की बल्कि बाद में लगातार यह कोशिश करते रहे कि इस्लाम को धरती से ही मिटा दिया जाए। लेकिन होता तो वही है जो अल्लाह तआला चाहता है और जो अल्लाह तआला ने फैसला किया है। और फिर अल्लाह तआला की तकदीर से वह समय भी आया जब मक्का विजय हुआ। आप ने उस शहर में विजेता के रूप में प्रवेश किया। लेकिन किस हालत में? तारीख़ कहती है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब दस हजार सहाबा की संगत में विजयी शान से मक्का में प्रवेश किया। (सीरत इब्ने हिशाम, पृष्ठ 750, मुद्रित दारुल कुतब अलइलमिया बैरूत 2001 ई) वह दिन आपके लिए बहुत ख़ुशी और प्रसन्नता और महानता व्यक्त करने का दिवस था। लेकिन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुदा के इन फज़्लों की अभिव्यक्ति पर खुदा की राह में विनम्रता के चरम स्थान पर पहुंचे हुए थे। ख़ुदा ने जितना ऊंचा क्या आप नम्रता में उतना ही झुकते जाते थे यहाँ तक कि जब आप विजेता के तौर पर मक्का में प्रवेश किया तो आपका सिर झुकते झुकते ऊंट के कजावह से जा लगा था।

(सीरत इब्ने हिशाम, पृष्ठ 740, मुद्रित दारुल कुतब अलइलमिया बैरूत 2001 ई)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस घटना को यूं बयान फरमाते हैं कि: ''बढ़ाई जो ख़ुदा तआला के विशेष बन्दों को दी जाती है '' (अर्थात उत्कर्ष और जीत) '' वह विनय के रंग में होता है और शैतान की बढ़ाई अहंकार से मिली होती है।'' वह अहंकार करता है। आप फरमाते हैं: '' देखो हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब मक्का पर विजय प्राप्त किया तो आप इसी तरह अपना सिर झुकाया और सज्द: किया जिस तरह उन दु:खों और कठिनाइयों के दिनों में झुके और सजदे करते थे जब इसी मक्का में आप का प्रत्येक तरह से विरोध किया जाता और दु:ख दिया जाता था। ''

(मल्फूज़ात, जिल्द 4, पृष्ठ 65 हाशिया, संस्करण 1985 मुद्रित यू. के)

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नम्रता का ज़िक्र करते हुए नसीहत फरमाते हैं कि: '' केवल शेखियों और व्यर्थ अहंकार और बढ़ाई से बचना चाहिए और विनम्रता और विनय धारण करना चाहिए। देखो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो कि वास्तव में सबसे बड़े और बुज़ुर्ग के लायक थे उनके नम्रता और विनय का एक नमूना कुरआन शरीफ में मौजूद है । लिखा है कि एक अंधा आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सेवा में आकर कुरआन शरीफ पढ़ा करता था। एक दिन आप के पास मक्का के अमीर और शहर के धनाढ्य जमा थे और आप उनसे बातचीत में मशगूल थे। बातों में व्यस्त होने की वजह से कुछ देर हो जाने से वह अंधा उठ कर चला गया। यह एक मामूली बात थी। अल्लाह तआला ने उसके बारे में सूरत नाज़िल फरमा दी। उस पर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसके घर गए और उसे साथ लॉकर अपनी चादर मुबारक बिछा कर बिठाया।" फरमाते हैं कि "मूल बात यह है कि जिन लोगों के दिलों में दिव्य महानता होती है उन्हें अवश्य विनम्र और विनय वाला बनना ही पड़ता है क्योंकि वह ख़ुदा तआला की बेनियाज़ी से हमेशा भय करते रहते हैं।" फिर एक फारसी का पद्ध आप ने उल्लेख किया:"आ नानकह आरिफ तरानद तरसाँ तर।"। कि वे लोग जो आरिफ हैं, जो अधिक पहचान रखने वाले हैं वे अधिक डरते हैं "क्योंकि जिस तरह अल्लाह तआला छोटी छोटी बातों का सम्मान करने वाले है इसी तरह छोटी छोटी बातों पर नज़र रखने वाला भी है " अगर वह सूक्ष्म ज्ञान प्रदान करता है तो इसी तरह कुछ बातों पर पकड़ता भी है। फरमाया कि " अगर किसी हरकत से नाराज़ हो जाए तो क्षण भर में सभी काम समाप्त।" आप फरमाते हैं कि "इसलिए चाहिए कि इन बातों पर विचार करो और उन्हें याद रखो और अनुकरण करो। " (मल्फूज़ात, जिल्द 10, पृष्ठ 343 से 344, संस्करण 1985 मुद्रित यु.के)

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की विशेषताएं तो हर विशेषता को पूरा किए हुए हैं। सारे के सारे तो एक मजलिस में क्या कई मजलिसों में भी वर्णित नहीं किया जा सकता। इस समय एक और सुंदर पक्ष आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत का बयान करूँगा जो आप की उदारता तथा दानशीलता है।

इब्ने उम्र बताते हैं कि मैंने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अधिक साहसी, माननीय, उदार और नूरानी अस्तित्व नहीं देखा। (सुनन अद्दारमी, हदीस 60, मुद्रित दारुल माअरफ: बैरूत 2000 ई) लगता है कि सहाबा के पास आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की विशेषताओं को वर्णन करने की शक्ति नहीं थी। एक उच्च विशेषता बताने की कोशिश करते हैं तो चार उभर कर सामने आ जाती हैं।

फिर एक रिवायत है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कुछ अंसार ने कुछ मांगा। आप ने उन्हें दिया। उन्होंने फिर मांगा। फिर दिया। उन्होंने फिर मांगा। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फिर प्रदान फरमाया यहाँ तक कि इस समय आपके पास जो कुछ था वह समाप्त हो गया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया मेरे पास जो माल होता है उसे तुम से रोक कर नहीं रखता।

(सही अलबुख़ारी, हदीस 1469)

एक बार आपके पास कहीं नब्बे हज़ार दिरहम आए। आप ने वहीं वितरण कर दिए। (एयनुल असर, जिल्द 2, पृष्ठ 398, मुद्रित दारुल कलम बैरूत 1993 ई) एक अवसर पर एक आने वाले को बकरियों का इतना बड़ा झुंड प्रदान फरमाया कि जो पूरी घाटी में फैला था। (सही मुस्लिम हदीस 2312) एक बार आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास बहरीन से माल लाया गया। ढेरों ढेर माल था। आप ने मस्जिद में ढेर लगवा दिया। आप नमाज़ पढ़ने के लिए आए तो आप ने इस तरफ नज़र नहीं। जब आप ने नमाज़ पढ़ ली हुए तो नमाज़ के बाद सारा माल बांट दिया। (सही अलबुख़ारी हदीस 421) अपनी सहजता और उदारता एवं दानशीलता के कारण ही था कि बद्दू भी कई बार बड़े कर्कश और असभ्य तरीके से आप से मांगते थे लेकिन आप सारी शक्ति होने के बावजूद, हुकूमत होने के बावजूद, उनकी असभ्यता की अनदेखी करते थे और उन्हें इनायत फरमाते थे। (सही अलबुख़ारी, हदीस 2821) (सही अलबुख़ारी, हदीस 5809)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस विषय का वर्णन करते हुए कि नबियों और औलिया पर तंगी का समय भी आता है और सुविधा का और जीत का समय भी आता है, फरमाते हैं कि यह दोनों समय आवश्यक हैं ताकि हर प्रकार की स्थिति में उनके आदर्श दुनिया के सामने

आऐं। दुनियादार तो तंगी और कमजोरी के ज़माने में असमर्थ भी होता है। कठिनाइयों में पड़ा हो तो अल्लाह तआला की ओर भी झुकता है। लोगों से अच्छे आचरण से भी पेश आ जाता है। यथा सामर्थ्य ग़रीबों की मदद भी कर देता है। अपने दु:ख देने वालों की तुलना में जवाब देने की शक्ति न होने की वजह से चुप रहता और कहता है हम ने धैर्य किया और सबर का प्रदर्शन करता है। लेकिन जब सत्ता और शक्ति आए तब लोगों का ख्याल रखना और उच्च नैतिकता का प्रदर्शन करना और माफ करना ही मूल विशेषता है। अत: कमज़ोरी और ताकत की स्थितियाँ ही वास्तव में किसी के उच्च नैतिकता को मापने का पैमाना हैं। आपने फरमाया कि शक्ति और विजेता होना और सत्ता होना इसलिए आवश्यक है " क्योंकि अपने दु:ख देने वालों के गुनाह माफ कर देना और अपने सताने वालों से क्षमा का व्यवहार करना और अपने दुश्मनों से प्यार करना और अपना बुरा चाहने वालों की भलाई चाहना, धन से दिल न लगाना, धन से अभिमानी न होना, समृद्धि में कंजूसी और कृपणता धारण न करना और उदारता और दानशीलता और माफी का दरवाज़ा खोलना और दौलत को नफस के पालने का माध्यम न बनाना और हुकूमत को अत्याचार का माध्यम न बनाना यह सब नैतिकता ऐसी हैं कि जिनके सबूत के लिए दौलत वाला शक्ति वाला होना शर्त है और उसी समय सबूत पहुंचते हैं कि जब मनुष्य को दौलत और सत्ता दोनों मयस्सर हूँ। इसलिए मुसीबत और हुकूमत के ज़माना में धन और सत्ता ये दोनों प्रकार के आचरण प्रदर्शित नहीं हो सकते इसलिए अल्लाह तआला के पूर्ण ज्ञान ने मांग की कि नबियों और औलिया को इन दोनों रूप के रूपों से जो कि असंख्य नेअमतों पर आधारित होते हैं लाभान्वित करे। लेकिन इन दोनों रूपों का ज़माना को प्रकट होना प्रत्येक के लिए एक क्रम से नहीं होता बल्कि अल्लाह तआला का ज्ञान कुछ के लिए शांति का ज़माना उस की आयु के पहले भाग में मयस्सर कर देती है और कष्टों का ज़ाना पीछे से। और कुछ पर पहले समय में पीड़ा अवतरित होती हैं और फिर आख़िरकार अल्लाह तआलाका समर्थन सम्मिलित हो जाता है। और कुछ में यह दोनों स्थितियाँ छिपी होती हैं और कुछ में पूर्ण स्तर पर प्रकट होती हैं और प्रतिदिन ज़ोर पकड़ती हैं। और इस बारे में सबसे अव्वल कदम हज़रत ख़ातमुल रसूल मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का है। क्योंकि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर पूर्ण रूप से यह दोनों स्थितियाँ वारिद हो गईं और ऐसे कर्म से आईं कि जो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सारे उच्चत चरित्र सूर्य के समान उज्ज्वल हो गए और विषय وَ اِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ (अलकलम 5) का सबूत तक पहुंच गया और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आचरण के दोनों रूप में पूर्ण रूप से प्रमाणित होना सभी नबियों की नैतिकता को साबित करता है क्योंकि आं जनाब ने उनकी नबुव्वत और उनकी किताबों को सत्यापित किया और उनका अल्लाह तआला का प्रिय होना स्पष्ट कर दिया है।"

(बराहीन अहमदिया, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 1, पृष्ठ 282 से 285 हाशिया, नंबर 11)

धन्यवाद करना एक और उच्च विशेषता है जिस का पूर्ण एहसास और जिस की उच्चतम गुणवत्ता हमें आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श में नज़र आता है। आप ने अल्लाह तआला के लिए आभारी के भी उच्चतम नमूने स्थापित करे और बन्दों के आभार के भी। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह दुआ किया करते थे कि हे अल्लाह मुझे अपना धन्यवाद करने वाला और ज़िक्र करने वाला बना दे। (सुनन अबी दाऊद हदीस 1510) आप पहली बारिश में बारिश की बूंदों अपनी ज़बान पर लिया करते थे कि अल्लाह तआला की इस नेअमत के धन्यवाद का यही तरीका है। आप का खाना बहुत सरल होता था लेकिन इसके बाद अल्लाह तआला बहुत अधिक शुक्र फरमाते थे। यही दुआ हमें भी आप ने

मुहम्मद पर हमारी जाँ फिदा है

हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ियल्लाहो अन्हो

मुहम्मद पर हमारी जाँ फिदा है कि वह कूए सनम का रहनुमा
मेरा दिल उसने रौशन कर दिया है अंधेरे घर का वह मेरे दिया है
ख़बर ले ऐ मसीहा दर्द दिल की तेरे बीमार का दम घुट रहा है
मेरा हर ज़र्रा हो कुरबाने अहमद मेरे दिल का यही इक मुद्दआ है
उसी के इश्क में निकले मरी जाँ कि याद यार मैं भी इक मज़ा है
मुहम्मद जो हमारा पेश्वा है मुहम्मद जो महबूबे ख़ुदा है
हो उसके नाम पर कुर्बान सब कुछ कि वह शाहनशाह हर दो सिरा है
इसी से मेरा दिल पाता है तस्कीं वही इक राह दें का राहनुमा है
मुझे इस बात पर है फख़्र महमूद
मेरा माशूक महबूबे ख़ुदा है

☆ ☆ ☆

सिखाई। कभी एक खजूर के साथ रोटी खा रहे हैं तो कभी केवल सिरका के साथ और अल्लाह तआला का शुक्र अदा फ़रमा रहे हैं कि उसने यह खाने-पीने के सामान मुहैया करे। (सही अलबुख़ारी हदीस 5459) (सुनन अबू दाऊद हदीस 3830) (सही मुस्लिम हदीस 169- 2052) नए कपड़े पर अल्लाह तआला का शुक्र। (सुनन अत्तिरमज़ी हदीस 1767) अत: कोई चीज़ ऐसी नहीं है जिस पर आप इस के उपयोग करने से पहले अल्लाह तआला की प्रशंसा और धन्यवाद न फरमाते हों। जब आप से अपनी इबादतों में अपार रोना धोना देखकर यह पूछा गया कि आप इबादत के लिए खड़े होते हैं तो आप के पांव सूज जाते हैं। सजदों में बहुत बेचैन होते हैं और इतना रोते हैं कि धरती आँसुओं से भीग जाती है। आप के तो अल्लाह तआला ने पिछले और अगले सब गुनाह बख्श दिए हैं। अब कोई गुनाह तो आप से कभी नहीं होना। न पहले कभी हुआ तो इस कदर आप का रोना और चलाना क्यों है? तो आपने फरमाया कि क्या इस बात पर अल्लाह तआला का आभारी बन्दा बनकर उसके आगे न रोओं कि उसने मुझे इस कदर सम्मानित किया है। (सहीह अलबुख़ारी हदीस 4836) (तफसीर इब्ने कसीर जिल्द 2 पृष्ठ 189 मुद्रित दार-ए-तैयबा वत्तौज़ीअ रियाज़ 1999 ई)

बन्दों के धन्यवाद की क्या गुणवत्ता थी। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहो अन्हो आप के बचपन के दोस्त थे जिन्होंने हर मुश्किल समय में आप का साथ दिया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इन की भावनाओं का बेहद ख्याल रखा करते थे। एक बार किसी व्यक्ति ने किसी मतभेद की वजह से हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहो अन्हो को कुछ कह दिया तो आपने फ़रमाया कि जब अल्लाह तआला ने मुझे भेजा तो आप सब ने मुझे झूठा कहा और अबूबकर ने मेरी सच्चाई की गवाही दी और अपनी जान और माल से मेरी मदद की। क्या तुम मेरे साथी का दिल दुखाने से रुक नहीं सकते। आप ने एक मौका पर फरमाया कि मुझ पर सबसे अधिक एहसान अबू बकर ने किया है। (सही अलबुख़ारी हदीस 4640) (सही अलबुख़ारी मस्जिद हदीस 466) आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर किसी ने क्या एहसान करना था। आपके लिए कुछ भी कुरबान करना उस कुरबान करने वाले के लिए एक सम्मान था और फिर ज़हरी रूप से भी आप ने प्रत्येक उपकार करने वाले का बदला बहुत बढ़ कर दिया। लेकिन फिर भी शुक्र की भावनाओं को आप व्यक्त कर रहे हैं।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहो अन्हा ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बार बार हज़रत ख़दीजा के बारे में प्रशंसा के उल्लेख पर

कहा कि आप क्या हर समय उस बुढ़िया का ज़िक्र करते रहते हैं, जबकि अल्लाह तआला ने आप को उस से बढ़कर पत्नियां दी हैं। उस पर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जब लोगों ने मुझे त्यागा तो उन्होंने मुझे स्वीकार किया। जब लोगों ने मेरा इनकार किया तो वह ईमान लाई। जब मुझे माल से वंचित किया गया तो उन्होंने अपने माल से मेरी मदद की और अल्लाह तआला ने औलाद भी मुझे उन्हीं से दे दी है। (असदुलग़ाब: पृष्ठ 86 मुद्रित दारुल कुतब अलइलमिया बैरूत 2008 ई) अत: आप ने हज़रत ख़दीजा की इन सेवाओं को जो उन्होंने अपने पति के लिए की थीं कभी नहीं भुलाया और इसे एहसान माना और हमेशा उसका धन्यवाद किया। आजकल के पतियों के लिए यह शिक्षा है कि पत्नियों के माल भी खा जाते हैं और फिर यह एहसान कि देखो मैंने अभी तक तुम्हें पत्नी का स्थान दिया हुआ है।

फिर बादशाह नज्जाशी जिस ने काफिरों के अत्याचार से हिजरत करने वाले मुसलमानों को अपने देश में शरण दी थी। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बादशाह नजाशी जो हब्शा का राजा था उसके इस एहसान को हमेशा याद रखा और अपने हर कथन और अपने कर्म से उसका धन्यवाद व्यक्त किया। एक बार जब यह प्रतिनिधिमंडल आपकी सेवा में हाज़िर हुआ तो ख़ुद उनके स्वागत के लिए खड़े हुए। सहाबा ने कहा कि हम स्वागत के लिए पर्याप्त हैं, हम खड़े होते हैं। आपने फ़रमाया कि बादशाह ने हमारे साथियों का सम्मान किया था और उनके साथ नैतिकता के साथ पेश आया था इस लिए पसंद करता हूँ कि उसके एहसान का बदला ख़ुद उतारूँ।

(सीरतुत हलबीया, जिल्द 3, पृष्ठ 72, मुद्रित दारुल कुतब अलइलमिया बैरूत 2002 ई)

फिर जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हम नैतिकता के शिक्षक के रूप में देखते हैं तो यहाँ भी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श की अजब शान दिखती है। जब एक मौका पर हज़रत आयशा रज़ियल्लाहो अन्हा ने हज़रत सफिया रज़ियल्लाहो अन्हा के छोटे कद की ओर इशारा करते हुए मज़ाक के रंग में कुछ कहा तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया। आयशा! यह एक ऐसा शब्द है कि अगर समुद्र में मिला दिया जाए तो उसे भी गंदा कर दे।

(सुनन अत्तिरमज़ी, हदीस 2502)

बच्चों के प्रशिक्षण और उच्च नैतिकता सिखाने के लिए आप के नमूने क्या थे। एक सहाबी अब्दुल्लाह बिन आमिर बताते हैं कि एक बार आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमारे यहां आए। मैं उस समय छोटा था। खेलने के लिए बाहर जाने लगा तो मेरी माँ ने कहा अब्दुल्ला आओ मैं तुम्हें एक चीज़ दूंगी। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया क्या तुम इसे कुछ देना चाहती हो? मेरी माँ ने कहा हाँ खजूर दूंगी। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अगर वास्तव में तुम्हारा यह इरादा नहीं होता और केवल बच्चे को बुलाने के लिए ऐसा कहा होता तो तुम्हें झूठ बोलने का गुनाह होता और झूठ अल्लाह तआला के पास बहुत बड़ा गुनाह है।

(अबू दाऊद हदीस 4991)

अत: यह गुणवत्ता हैं सत्य को स्थापित करने के जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने मानने वालों में चाहते हैं। पड़ोसियों से हुस्ने सुलूक इस्लामी शिक्षा है। इस बारे में कैसे आप ने प्रशिक्षण किया? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से एक बार किसी ने पूछा कि हे रसूलुल्लाह मुझे कैसे पता चले कि मैं अच्छा कर रहा हूँ या बुरा कर रहा हूँ। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जब तुम अपने पड़ोसी को यह कहते सुनो कि तुम बहुत अच्छे हो तो समझो कि तुम्हारा व्यवहार अच्छा है और जब तुम पड़ोसियों को यह कहते सुनो कि तुम बहुत बुरे हो तो समझ लो कि तुम्हारा व्यवहार बुरा है और तुम ग़लत कर रहे हो।

(सुनन इब्ने माजा, हदीस 4222)

यह तो कुछ बातें थीं, आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उस्वा के कुछ नमूने थे जो इस समय पेश किए। किसी भी नैतिकता में आप उच्चतम आचरण पर थे और यही अपने मानने वालों में देखना चाहते थे। ख़ुदा करे कि हम मौखिक दावे से नहीं बल्कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उस्वा पर चलते हुए वास्तविक पालन करने वाले और आप का अनुपालन करने वाले हों और अपनी माफी के सामान करने वाले हों।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का एक उद्धरण प्रस्तुत करता हूँ। आप फरमाते हैं कि " वह व्यक्ति जिसने अपनी हस्ती से, अपनी विशेषताओं से, अपने कर्मों से, अपने कार्यों और अपने आध्यात्मिक और पवित्र शक्तियों ज़ोरवाले दरिया से पूर्णता का नमूना मौखिक तथा व्यवहार एवं सच्चाई से दिखलाया और पूर्ण इंसान कहलाया। ... वह व्यक्ति जो सबसे पूर्ण और सम्पूर्ण आदमी था और पूर्ण नबी था और पूर्ण बरकतों के साथ आया जिससे आध्यात्मिक उठने और जीने के कारण दुनिया की पहली क़यामत प्रकट हुई और एक मरा हुआ युग उसके आने से जीवित हो गया, वह मुबारक नबी हज़रत ख़ातमुल अंबिया इमामुल असफया ख़ातमुल मुरसलीन, फख़रुल अंनिबया मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं। हे प्यारे ख़ुदा उसके प्यारे नबी पर वह दया और दरूद भेज जो दुनिया की शुरुआत से तूने किसी पर न भेजा हो। अगर यह महान नबी दुनिया में न आता तो जितने छोटे नबी दुनिया में आए जैसा कि यूनुस और अय्यूब और मसीह बिन मरियम और मलाकी और यूहन्ना और ज़करिया आदि उनकी सच्चाई पर हमारे पास कोई दलील नहीं थी हालांकि सबसे प्रिय और सम्मान्नीय और ख़ुदा तआला के प्यारे थे। यह इसी नबी का एहसान है कि यह लोग भी दुनिया में सच्चे समझे गए।

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَ بَارِكْ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ وَ اٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

(इतमामुल हिज्जा, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 8, पृष्ठ 308)

अब दुआ कर लें। इसके बाद हुज़ूर अनवर ने हाथ उठाकर सामूहिक दुआ करवाई जिस में एम टी ए के माध्यम से दुनिया भर के दर्शक और श्रोता शामिल हुए। दुआ के बाद फरमाया: इस समय जो कादियान के जलसा की हाज़री वर्णन की गई है वह 14242 है। इस बार पाकिस्तान से तो दोस्त नहीं शरीक हुए थे लेकिन इसके बावजूद बाहर से पर्याप्त दोस्त तशरीफ़ लाए और इंडोनेशिया से भी वे एक चार्टर्ड विमान वहाँ ले के गए और अल्लाह तआला की कृपा से इस समय 14242 हाज़री है और यहाँ इस समय बैठे लोगों की हाज़री 5230 है।

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web.www.alislam.org

www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

हज़रत मुहम्मद(स) का स्त्रियों से सद्व्यवहार

हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन अहमद साहिब ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ि

आप अपनी पुस्तक "हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो का पवित्र जीवन" में फरमाते हैं कि

"हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जीवन घटनाएँ दर्शाने के पश्चात् अब मैं आप के चरित्र पर कुछ प्रकाश डालना चाहता हूँ। आपके महान् चरित्र के सम्बन्ध में सर्वसम्मत गवाही वह है जो आप की जाति ने दी कि आप की नुबुव्वत के दावे से पूर्व आप की जाति ने आप का नाम अमीन (अमानतदार) और सिद्दीक़ (सत्यनिष्ठ) रखा। (सीरत इब्ने हिशाम)

संसार में ऐसे बहुत से लोग होते हैं जिनके बेईमानी से कलुषित चरित्र के संबंध में कोई जानकारी नहीं मिलती। ऐसे लोग भी बहुत होते हैं जिन्हें किसी कठोर परीक्षा में से गुज़रने का अवसर प्राप्त नहीं होता, हां वे साधारण परीक्षाओं से गुज़रते हैं और उनकी ईमानदारी बनी रहती है परन्तु इसके बावजूद उन की जाति उन्हें कोई विशेष नाम नहीं देती, इसलिए कि विशेष नाम उस समय दिए जाते हैं जब कोई व्यक्ति किसी विशेष गुण में अन्य समस्त लोंगों पर श्रेष्ठता प्राप्त करता है। युद्ध में भाग लेने वाला प्रत्येक सैनिक अपने प्राणों को ख़तरे में डालता है परन्तु न अंग्रेज़ सरकार प्रत्येक सैनिक को विक्टोरिया क्रास देती है न जर्मन जाति प्रत्येक सैनिक को आइरन क्रास प्रदान करती है। फ्रांस में ज्ञान संबंधित पेशा रखने वाले लाखों हैं परन्तु प्रत्येक व्यक्ति को लेजिन आफ़ आनर (LEGION OF HONOUR) का फ़ीता नहीं मिलता। अत: किसी व्यक्ति का मात्र अमानतदार और सत्यनिष्ठ होना उसकी श्रेष्ठता पर कुछ विशेष प्रकाश नहीं डालता परन्तु किसी व्यक्ति को समस्त जाति का अमीन और सत्यनिष्ठ की उपाधि दे देना यह एक असाधारण बात है। यदि मक्का के लोग प्रत्येक वंश के लोगों में से किसी को अमीन और सत्यनिष्ठ की उपाधि दिया करते तब भी अमीन और सत्यनिष्ठ की उपाधि पाने वाला महापुरुष समझा जाता परन्तु अरब का इतिहास बताता है कि अरब लोग प्रत्येक वंश में कभी किसी व्यक्ति को यह उपाधि नहीं देते थे अपितु अरब के सैकड़ों वर्ष के इतिहास में केवल एक ही उदाहरण मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) का मिलता है कि आपको अरब वालों ने अमीन और सत्यनिष्ठ की उपाधि दी। अत: सदियों पुराने अरब के इतिहास में क़ौम के एक ही व्यक्ति को अमीन और सत्यनिष्ठ की उपाधि देना इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि उसकी ईमानदारी और उसका सत्य दोनों इतने उच्चकोटि के आचरण थे कि उसका उदाहरण अरबों में किसी अन्य व्यक्ति में नहीं पाया जाता था। अरब अपनी सूक्ष्म दृष्टि के कारण संसार में प्रसिद्ध थे। अत: जिस वस्तु को वे अनुपम कहें वह निश्चय ही संसार में अनुपम समझी जाने योग्य थी।

इसके अतिरिक्त आप स. के चरित्र पर आप स. के अवतरित होने पर एक सर्वसम्मत साक्ष्य आपकी धर्म पत्नी हज़रत ख़दीजा रज़ि. ने दी है। अब मैं आपके आदर्श चरित्र पर प्रकाश डालने के लिए कुछ उदाहरण उपस्थित करना चाहता हूँ ताकि आपके आदर्श महान् चरित्र के गुप्त पहलुओं पर भी पाठकों की दृष्टि पड़ सके।

स्त्रियों से सद्व्यवहार

आप स. स्त्रियों से सद्व्यवहार पर बहुत बल देते थे। आप ने संसार में सब से पहले स्त्रियों के विरसे के अधिकार को मान्यता दी। अत: क़ुर्आन करीम में लड़कों और लड़कियों को पिता और माता के मृत्योपरान्त उनकी सम्पत्ति (रिक्थ) का उत्तराधिकारी ठहराया गया है। इसी प्रकार माताओं और पत्नियों को बेटियों और पतियों की सम्पत्ति में उत्तराधिकारी बनाया गया है तथा कुछ परिस्थितियों में बहनों को भी भाइयों की सम्पत्ति (रिक्थ) में बहनों का भी अधिकार स्वीकार किया गया है। इस्लाम से पूर्व संसार के किसी धर्म ने भी इस प्रकार के अधिकारों की मान्यता नहीं दी। इसी प्रकार आपने स्त्री को उसके धन का स्थायी मालिक ठहराया है। पति को अधिकार नहीं कि पति होने के कारण पत्नी के धन में हस्तक्षेप कर सके। पत्नी अपने धन को व्यय करने में पूर्ण स्वतन्त्र है। पत्नियों के साथ सद्व्यवहार में आप ऐसे बढ़े हुए थे कि अरब के लोग जो इस बात के अभ्यस्त न थे उन्हें यह बात देखकर ठोकर लगती थी। अस्तु, हज़रत उमर रज़ि. वर्णन करते हैं कि मेरी पत्नी कई बार मेरी बातों में हस्तक्षेप करती तो मैं उसे डांटा करता था और कहा करता था कि अरब के लोगों ने स्त्रियों का यह अधिकार स्वीकार नहीं किया कि वे पुरुषों को उनके कार्यों में परामर्श दें। इस पर मेरी पत्नी कहती— जाओ, जाओ मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) को उनकी पत्नियां परामर्श देती हैं और आप स. उन्हें कभी नहीं रोकते तो तुम ऐसा क्यों कहते हो? इस पर मैं उस से कहता था कि आइशा रज़ि. तो आप स. की बहुत लाड़ली है उसकी बात न करे, शेष रही तुम्हारी बेटी, तो यदि वह ऐसा करती है तो अपनी धृष्टता का परिणाम कभी भुगतेगी।

एक बार जब रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने किसी बात से नाराज़ होकर निर्णय कर लिया कि कुछ दिन घर से बाहर रहेंगे तथा पत्नियों के पास नहीं जाएँगे। मुझे इसकी सूचना मिली तो मैंने कहा देखो जो मैं कहता था वही हो गया। मैं अपनी बेटी हफ़्सारज़ि. के घर गया तो वह रो रही थीं। मैंने कहा हफ़्सारज़ि. क्या हुआ? क्या रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने तुम्हें तलाक़ दे दी है। उन्होंने कहा यह तो मुझे मालूम नहीं परन्तु रसूले करीम (स.अ.व.) ने किसी बात पर यह निर्णय कर लिया है कि वह कुछ समय तक घर में नहीं आएंगे। हज़रत उमर रज़ि. कहते हैं मैंने कहा हफ़्सा ! मैं तुझे पहले नहीं समझाया करता था कि तू आइशारज़ि. की नक़लें करती है हालांकि आइशा तो रसूले करीम (स.अ.व.) को विशेष तौर पर प्रिय है। देख अन्तत: तूने वही संकट सर पर ले लिया जिसका मुझे भय था। यह कह कर मैं रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के पास गया। आप स. एक ख़ुरदरी चटाई पर लेटे हुए थे, आपके शरीर पर कुर्ता न था तथा आप के सीने और कमर पर चटाई के निशान लगे हुए थे। मैं आपके पास बैठ गया और कहा हे अल्लाह के रसूल ! ये क़ैसर तथा किस्रा कहां अधिकार रखते हैं इस बात का कि उन्हें ख़ुदा की ने'मतें मिलें परन्तु वे तो किस आराम से जीवन व्यतीत कर रहे हैं और ख़ुदा के रसूल को यह कष्ट है। आप स. ने फ़रमाया उमर रज़ि. यह उचित नहीं। इस प्रकार के जीवन ख़ुदा के रसूलों के नहीं होते, यह सांसारिक राजे महाराजाओं का काम है। फिर मैंने आप स. को वह पूरा वृत्तान्त सुनाया जो मेरी पत्नी और बेटी के साथ गुज़रा था। आप स. मेरी बात सुनकर हंस पड़े और कहा उमर रज़ि. यह बात सही नहीं कि मैंने अपनी पत्नियों को तलाक़ दे दी है। मैंने तो एक हित को दृष्टिगत रखते हुए अपने घर से बाहर रहने का निर्णय किया है।

(बुख़ारी किताबुन्निकाह बाब मौइज़तुर्रजुले अम्बतहू लिहाले ज़ौजिहा)

आप स. को पत्नियों की भावनाओं का बहुत अधिक ध्यान रहता था कि एक बार नमाज़ में एक बच्चे के होने का स्वर सुनाई दिया तो आपने नमाज़ जल्दी-जल्दी पढ़ा कर समाप्त कर दी। फिर कहा एक बच्चे के रोने की आवाज़ आई थी। मैंने सोचा कि उसकी मां को कितना कष्ट हो रहा होगा। अत: मैंने नमाज़ जल्दी समाप्त कर दी ताकि मां अपने बच्चे की देखभाल कर सके।

(बुख़ारी किताबुस्सलात बाब मन अख़फ़्फ़स्सलात इन्दा बुकाइस्सबिय्ये)

जब आप स. ऐसी यात्रा पर जाते जिसमें स्त्रियां भी साथ होतीं तो हमेशा धीरे चलने का आदेश देते। एक बार ऐसे ही अवसर पर जबकि सिपाहियों ने अपने घोड़ों की बागें और ऊँटों की नेकेलें ढीली छोड़ दीं। आप ने फ़रमाया بِالْقَوَارِيْرِ رِفْقًا अरे क्या करते हो स्त्रियां भी साथ है। यदि तुम इस प्रकार ऊँट दौड़ाओगे तो शीशे चकनाचूर हो जाएँगे। (बुख़ारी किताबुलअदब) एक बार युद्ध-भूमि में किसी गड़बड़ के कारण सवारियां बिदक गईं, आप स. भी घोड़े से गिर गए और कुछ स्त्रियां भी गिर गईं, एक सहाबी जिन का ऊँट रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के पीछे था आप को गिरते हुए देख कर आवेग में आ गए तथा कूदकर यह कहते हुए रसूलुल्लाह (स.अ.व.) की ओर दौड़े, हे अल्लाह के रसूल ! मैं मर जाऊँ आप सुरक्षित रहें आप स. के पैर रकाब में उलझे हुए थे, आप ने बड़ी शीघ्रता से अपने पैरों को रकाब से निकाला तथा उस सहाबी की ओर मुख करते हुए कहा "मुझे छोड़ो और स्त्रियों की ओर जाओ।"

जब रसूले करीम (स.अ.व.) की मृत्यु का समय निकट आया तो उस समय समस्त मुसलमानों को एकत्र करके जो वसीयतें कीं उनमें एक बात यह भी थी कि मैं तुम्हें अपनी अन्तिम वसीयत यह करता हूँ कि स्त्रियों से हमेशा सद्व्यवहार करते रहना। आप स. प्राय: कहा करते थे कि जिसके घर में लड़कियां हों और वह उन्हें शिक्षित करे तथा उनका ठीक प्रकार से प्रशिक्षण करे तो ख़ुदा तआला प्रलय के दिन उस के लिए नर्क का निषेध (हराम) कर देगा।

(तिरमिज़ी जिल्द-2, अब्वाबुलबिर्रे वस्सिलते, बाब मा जाआ फ़िन्नफ़क़तिलबनात)

अरबों में यह कुप्रथा थी कि यदि स्त्रियों से कोई ग़लती हो जाती तो मारते-पीटते थे। रसूले करीम (स.अ.व.) को जब इस बात का ज्ञान हुआ तो आप ने कहा स्त्रियां ख़ुदा की दासियां हैं तुम्हारी दासियां नहीं। उन्हें न मारा करो परन्तु स्त्रियां चूंकि अभी तक पूर्ण रूप से प्रशिक्षित नहीं हुईं थी, वे इस बात का ग़लत अर्थ लेते हुए निर्भीक होकर पुरुषों से मुक़ाबला करने लगीं तथा घरों में लड़ाई-झगड़े होने लगे। अन्तत: हज़रत उमररज़ि. ने रसूलुल्लाह से शिकायत की कि आप स. ने हमें स्त्रियों को मारने से रोक दिया है और वे बहुत निर्भीक हो गई हैं। ऐसी अवस्था में तो हमें आज्ञा मिलनी चाहिए कि हम उन्हें मार-पीट लिया करें। चूंकि अभी तक स्त्रियों के संबंध में विस्तार के साथ आदेश नहीं आए थे। आप स. ने फ़रमाया यदि कोई स्त्री सीमा का उल्लंघन करती है तो तुम अपने रिवाज के अनुसार कोई दण्ड दे सकते हो। इसका परिणाम यह हुआ कि इसकी बजाए कि पुरुष किसी अपवादस्वरूप अपनी पत्नियों को शारीरिक दण्ड देते उन्होंने वही पुरानी अरबी प्रथा प्रचलित कर ली। स्त्रियों ने रसूले करीम (स.अ.व.) की पत्नियों के पास आकर शिकायत की तो आप ने अपने सहाबा रज़ि. से फ़रमाया जो लोग अपनी पत्नियों से अच्छा व्यवहार नहीं करते या उन्हें मारते पीटते हैं मैं तुम्हें बता देता हूँ कि वे लोग ख़ुदा के निकट अच्छे नहीं समझे जाते। इसके बाद स्त्रियों के अधिकारों की रक्षा को नियमबद्ध कर दिया गया और स्त्री जाति ने मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) की कृपा से पहली बार आज़ादी से साँस लिया। (अबू दाऊद किताबुन्निकाह)

मुआविया बिन हिन्दा फ़रमाते हैं कि मैंने रसूल करीम (स.अ.व.) से पूछा हे अल्लाह के रसूल ! पत्नी का हम पर क्या अधिकार है? आप स. ने फ़रमाया ख़ुदा जो तुम्हें खाने के लिए दे वह उसे खिलाओ, ख़ुदा जो तुम्हें पहनने के लिए दे वह उसे पहनाओ, उसे थप्पड़ न मारो, गालियां न दो और उसे घर से न निकालो। (अबू दाऊद)

आप स. स्त्रियों की भावनाओं का इतना अधिक ध्यान रखते थे कि जो लोग बाहर यात्रा पर जाते हैं उन्हें जल्दी घर आना चाहिए ताकि उनके परिवार को कष्ट न हो। अत: हज़रत अबू हुरैरा रज़ि. वर्णन करते हैं कि जब कोई व्यक्ति अपने उन कार्यों को पूर्ण कर ले जिसके लिए यात्रा की गई थी तो उसे चाहिए कि अपने परिजनों का ध्यान रखते हुए जल्दी वापस आए। (बुख़ारी तथा मुस्लिम)

आप स. का अपना आचरण यह था कि जब यात्रा से वापस आते थे तो दिन के समय नगर में प्रवेश करते थे। यदि रात आ जाती तो नगर के बाहर डेरा डाल देते थे, प्रात:काल नगर में प्रवेश करते थे तथा अपने सहाबा को हमेशा मना करते थे कि घर में अचानक आकर अपने परिवार वालों को कष्ट नहीं देना चाहिए। (बुख़ारी व मुस्लिम) इसमें आपकी दृष्टि में यह हित निहित था कि स्त्री और पुरुष के संबंध बड़े कोमल होते हैं। यदि पति की अनुपस्थिति में पत्नी ने अपने शरीर और लिबास की स्वच्छता का पूरा ध्यान न रखा हो और पति अचानक आ कर घर में प्रवेश करे तो आशंका होती है कि वे प्रेम भावनाएं जो पति-पत्नी के मध्य होती हैं उन्हें कोई आघात न पहुँचे। अत: आप ने निर्देश दिया कि मनुष्य जब भी यात्रा से वापस आए दिन के समय घर में प्रवेश करे तथा पत्नी और बच्चों को सूचना देने के बाद प्रवेश करे ताकि वे उसके स्वागत के लिए पूर्णरूप से तैयारी कर लें।

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

لَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْأَقَاوِيْلِ لَأَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ (अल्हाक्का 45-47)

और अगर वे कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बंधित कर देते तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह और की जान की शिरा काट देते ।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे प्राय: उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित किया गया है। किताब प्राप्त करने के लिए इच्छुक पोस्ट कार्ड/ मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**

Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186

Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab

For On-line Visit: www.alislam.org/urdu/library/57.html

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

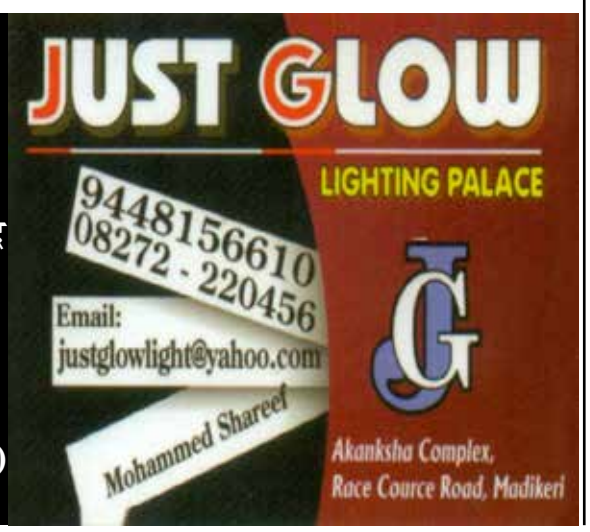

तकरीर जलसा सालाना कादियान दिसम्बर 2016 ई

सीरत आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम न्याय और इंसाफ की रौशनी में

मुहम्मद इनाम ग़ौरी (नाज़िर आला कादियान)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ لِلّٰهِ شُهَدَآءَ بِالْقِسْطِ ۫ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰٓى اَلَّا تَعْدِلُوْا ؕ اِعْدِلُوْا ۟ هُوَ اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ۫ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ

(सूरह अलमाइदा: 9)

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो! अल्लाह तआला के लिए कस कर निगरानी करते हुए न्याय के समर्थन में गवाह बन जाओ और किसी राष्ट्र की दुश्मनी तुम्हें कभी इस बात पर आमादा न करे कि तुम न्याय न करो। न्याय करो ये तक़वा के सबसे करीब है।

न्याय के मूल अर्थ हैं दोनों तरफों से बराबर होना .अधिकता और कमी से बचते हुए मध्य मार्ग अपनाने को मध्यम कहा जाता।

इंसाफ के लिए कुरआन में दूसरा शब्द किस्त भी आया है जैसा कि सूरतुल माइदा की आयत नंबर 9 जो अभी तिलावत की गई है। उसमें भी न्याय और किस्त दोनों शब्द इस्तेमाल किए गए हैं। ये दोनों समअर्थ शब्द हैं लेकिन मामूली अंतर यह है कि दो आदमियों में बराबर व्यवहार किया जाए तो यह न्याय कहलाएगा जबकि किस्त में दूसरे के साथ तुलना होती है अर्थात किस्त के अर्थ हैं किसी के अधिकारों को पूरा पूरा अदा करना इसमें उतार-चढ़ाव न करना।

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बेअसत के समय अरब देश जो स्थिति थी उसमें न्याय तथा इन्साफ़ का कोई नामो निशान नहीं था। Might is right जिसकी लाठी उसकी भैंस का कानून जारी था। प्राचीन रस्म तथा रिवाज पर आधारित समाज था। कबीलों के बीच युद्ध और जंग साधारण बात थी। समर्थकों को केवल आवाज़ देना पर्याप्त होता था और फिर वर्षों कबीलों के बीच बदले के कत्लों का क्रम जारी रहता था। अत: बसूस का युद्ध जो एक सहयोगी कबीला की ऊँटनी को मारे जाने के प्रतिशोध से शुरू हुआ था, चालीस साल तक चला और आपस में हत्या व खून खराबे का बाज़ार गर्म रहा.मर्दों और औरतों को कैद करने और दासी और गुलाम बनाने की प्रथा आम थी। औरतों की तो कोई स्थिति नहीं थी। ना बेटी के रूप में न पत्नी के रूप में न माँ के रूप में। ऐसे समाज में मानवता के उपकारक रहमतुन लिल् आलमीन हज़रत अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला की तरफ से भेजे जाते हैं और कुरआन की शरीयत का अवतरण शुरू होता है और धीरे-धीरे हैवानों को मनुष्य बनाने और मनुष्यों को आचरण वाला व्यक्ति बनाने और आचरण वाले मनुष्य को ख़ुदा के गुण वाला आदमी बल्कि ख़ुदा के गुण वाले व्यक्ति बनाने का चमत्कार हुआ।

संस्थापक जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब कादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने आप के चमत्कार का जिक्र करते हुए अपने शेर में कहते हैं:

कहते हैं यूरोप के नादां यह नबी कामिल नहीं
वहशियों में दीं का फैलाना यह क्या था मुशकिल कार
पर बनाना आदमी, वहशी को है इक मोजज़ा
मअनी राज़े नबुव्वत है इसी से आशकार

इसी तरह आप अलैहिस्सलाम अपने आरबी क़सीदा में फरमाते:

सादफ तहुम कौमन करौसिन ज़िल्लतन
फजअलतहुम कसबी कतिल इकयानी

कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आपने इस अरब क़ौम को अपमानित गोबर की तरह पाया लेकिन अपनी पवित्र ताकत और प्रशिक्षण के प्रभाव से उन्हें सोने की डली में बदल दिया।

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इंसाफ का विवरण वर्णन इस लिहाज़ से बहुत कठिन कार्य है कि हमेशा हर मामले में आपका कदम इंसाफ की सीढ़ी फलाँग कर एहसान की मंज़िल तक पहुँचता है। अत: वर्णन किया गया है कि कभी ऐसा नहीं हुआ कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने किसी से ऋण लिया हो और उस से अधिक और बेहतर रूप में वापस न फरमाया।

इस छोटे सी भूमिका के बाद न्याय तथा इन्साफ़ के बारे में सबसे पहले पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पारिवारिक ज़िन्दगी का कुछ वर्णन करूंगा। क्योंकि जो व्यक्ति अपने घर में इन्साफ़ तथा न्याय को जारी नहीं रख सकता वह बाहर कैसे इस विशेषता में बेहतर नमूना बन सकता लेकिन हमारे आक़ा हज़रत अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शान देखिए! सुबह शाम शब्द अल्लाह तआला का कलाम नाज़िल हो रहा है,ख़ातमन्नबिय्यीन का दर्जा प्राप्त होता है काब कौसेन औ अदना की बिशारत मिल रही है, आप के मुबारक हाथ को ख़ुदा ख़ुदा अपना मुबारक हाथ करार दे रहा है, सभी मानव जाति को संदेश दिया जा रहा है कि अगर अल्लाह तआला का प्यार चाहते हैं तो इस रसूल का पालन और प्रेम अनिवार्य है। दूसरी तरफ आपका यह हाल है कि फरमाते हैं कि: اَنَا النَّبِيُّ لَا كَذِب दरअसल मैं ख़ुदा का नबी और उसका अंतरंग हूँ उसमें कोई अस्पष्टता और अतिशयोक्ति नहीं लेकिन साथ ही कहते हैं अना इब्ने अब्दुल मुतलिब लेकिन हों तो एक बंदा और अब्दुल मुत्तलिब का बेटा।

इसी तरह एक और मौके पर कहा وَاللّٰهِ مَا اَدْرِیْ وَاَنَا رَسُوْلُ اللّٰهِ مَا يُفْعَلُ بِیْ हालांकि मैं अल्लाह तआला का रसूल हूँ लेकिन ख़ुदा की कसम मैं नहीं जानता कि मेरे साथ क्या मामला किया जाएगा।

हज़रत अबु हुरैरह से रिवायत है कि मैंने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को एक बार यह कहते हुए सुना कि किसी को इस का कर्म जन्नत में प्रवेश नहीं करेगा लोगों ने अर्ज़ किया कि हे रसूलल्लाह क्या आप भी अपने कर्मों के कारण जन्नत में प्रवेश नहीं किए जाएंगे। फरमाया وَلَا اَنَا اِلَّا اَنْ يَتَغَمَّدَنِیَ اللّٰهُ بِفَضْلِهٖ وَرَحْمَتِهٖ हाँ मैं भी अपने कार्यों के कारण जन्नच में प्रवेश नहीं हो सकूंगा सिवाय इसके कि अल्लाह तआला की कृपा और उसकी दया मुझे ढांप ले।

जब आपके पारिवारिक जीवन पर एक नज़र डालते हैं तो सबसे पहले एक बहुत अमीर, अनुभवी, दुनिया देखने वाली चालीस वर्ष की उम्र महिला हज़रत ख़दीजा का उल्लेख सामने आता है जो एक पच्चीस वर्षीय युवक की नेकी और धर्मपरायणता और ईमानदारी और अमानत का न केवल चर्चा सुनकर बल्कि अपने व्यापार तथा माल के साथ भिजवा कर अनुभव करने के बाद पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से निकाह करने का संदेश भिजवा देती हैं और जब शादी हो जाती है तो आप की संतुलित और मध्यम से भरपूर जीवन और आप के आचरण की बरकत से पर समर्पित होकर अल्लाह तआला पहली वह्यी के अवतिरत होने पर ईमानदारी से विश्वास लाती हैं। और आप को इस रिसालत के

संदेश के प्राप्त होने पर आप की घबराहट को दूर करते हुए ढाढस बंधाती हैं कि हे मेरे सरताज! आप क्यों घबराते हीं आप कभी असफल नहीं होंगे बल्कि ख़ुदा की क़सम खाकर गवाही देती हैं कि

كَلَّا وَاللهِ لَا يُخزِيكَ اللهُ اَبَدًا اِنَّكَ لَتَصِلُ الرحم وَتَقْرِى الضَّيْفَ وَتَحْمِلُ الْكَلَّ وَتَصْدُقُ الْحَدِيْثَ وَتَكْسِبُ الْمَعْدُوْمَ وَتُعِيْنُ عَلَى نَوَائِبِ الْحَقِ

अल्लाह तआला आप को कभी असफल नहीं करेगा क्योंकि आप तो रहमी रिश्तेदारों का विचार रखने वाले हैं और कमज़ोरों का बोझ उठाते हैं और सभी वे अच्छे आचरण जो दुनिया से विलुप्त हो चुके हैं, आप में पाए जाते हैं और मेहमान नवाज़ी के गुण में विशेष है और लोगों की वास्तविक मुसीबतों में उनकी मदद करते हैं।

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत ख़दीजा के त्याग और फिदाईत को उनके जीवन में भी हमेशा सम्मान की दृष्टि से देखा और मृत्यु के बाद भी हमेशा प्यार और वफा की भावना के साथ याद रखा। घर में कोई जानवर ज़िब्ह होता तो उसका मांस हज़रत ख़दीजा की सहेलियों को भी भिजवाने की ताकीद फ़रमाते।

एक और पवित्र पत्नी का उल्लेख प्रस्तुत करता हूँ हज़रत सफिया पुत्री हय्य जो यहूदी कबीला बनो नज़ीर और बनो क़रीज़ा की राजकुमारी थी। ख़ैबर की जंग में उनके पिता, भाई और पति और कई रिश्तेदार मारे गए और असमंजस की स्थिति में सफिया कैदी बन आईं। सहाबा ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अनुरोध किया कि यह राजकुमारी आप के अतिरिक्त किसी के लिए उपयुक्त नहीं। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनका सम्मान किया और कहा कि आप अपने धर्म पर रहना चाहती हो तो इस का तुम्हें अधिकार है । हाँ अगर अल्लाह तआला के रसूल को धारण करोगी तो इसमें बहरहाल तुम्हारी भलाई है। सफिया ने कहा कि मैं आप को सच्चा समझती हूं उन्होंने फरमाया वास्तव में मैं सच्चा हूँ लेकिन निर्णय का अधिकार बहरहाल तुम्हें प्राप्त है। सफिया ने अल्लाह तआला और उसके रसूल और इस्लाम को धारण कर लिया। इस पर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें मुक्त कर दिया। इसके साथ ही आप ने सफिया को यह भी अधिकार दिया कि चाहें तो अपने घर वालों के पास लौट जाएं या चाहें तो आप के निकाह में आ जाएँ। हज़रत सफिया ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के निकाह में आना पसंद किया और इस तरह उनकी इच्छा से उन से निकाह फरमाया और उनकी स्वतंत्रता को ही उनका मेहर करार दिया।

हज़रत सफिया फरमाती हैं कि मैं जब कैदी की स्थिति में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर की गई तो आप से अधिस नापसंदीदा व्यक्ति मेरी नज़र में और कोई नहीं था लेकिन जब आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें बताया कि तुम्हारी क़ौम ने मुसलमानों के साथ ये ये क्या तुम्हारा पिता मेरे खिलाफ सारे अरब को खींच लाया और हम पर हमला में पहल भी उसने की थी, जिसकी वजह से मजबूरन तुम्हारी क़ौम के साथ युद्ध करना पड़ा। इन तथ्यों को सुनकर और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के न्याय और फिर उनके साथ किए गए एहसान और करूणा का इतना प्रभाव उन पर पड़ा कि फरमाती हैं कि"जब आपके पास से उठी तो आप से अधिक और कोई प्यारा और पसंदीदा व्यक्ति मेरी निगाह में न था।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ بَارِكْ وَسَلِّمْ

मदनी दौर में जबकि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्र पचास साल पार कर चुकी थी, परन्तु केवल प्रशिक्षण और राष्ट्रीय जरूरतों के मद्देनजर आप को कई शादियां करनी पड़ीं और एक समय में नौ पत्निया आप के प्रशिक्षण और प्रायोजन में रहीं लेकिन कभी उनकी जिम्मेदारियों से आप घबराए नहीं बल्कि बहुत उत्तम प्रबंधन और पूर्णता न्याय और इंसाफ के साथ सभी के अधिकार अदा किए और सबका ख्याल रखा। आप नमाज़ असर के बाद कभी सभी पत्नियों को उस पत्नी के घर बुला लेते जहाँ आप की बारी होती थी और कभी ख़ुद सभी पत्नियों के घरों में जाकर हालत पूछते।

इन सभी पत्नियों के बीच इतनी ईमानदारी न्याय और निष्पक्ष वितरण के बावजूद आप यह दुआ करते थे कि हे अल्लाह तू जानता और देखता है कि मानव सीमा तक जो बराबर इसांफ वाला विभाजन हो सकता था वह तो करता हूँ पर मेरे मौली अब दिल पर तो मेरा अधिकार नहीं अगर हृदय का झुकाव किसी खूबी और सूक्ष्म सार के कारण हो तो मुझे माफ कर!

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ بَارِكْ وَسَلِّمْ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَجِيْدٌ

जैसा कि आरम्भ में अरबों की अज्ञानता और अत्याचार का उल्लेख हो चुका है। जब उन्हीं में से कुछ समझदार और शरीफ प्रकृति लोगों को विचार आया कि यह तो बड़ा ज़ुल्म है कि शक्तिशाली कमज़ोर खाता जा रहा है। और आए दिन की आपसी जंगों और लूट पाट से सैंकड़ों परिवार तबाह, हज़ारों बच्चे अनाथ हो रहे हैं इस तरह तो पूरा देश एक दिन नष्ट हो जाएगा। अत: आओ कि कोई ऐसा उपाय करें कि इस ज़ुल्म व अत्याचार से निजात मिले। अत: कुछ सरदारों ने जिन के नाम फज़ल बन हारिस, फज़ल बिल वराअ और पज़ल बिन फ़तालह आदि थे परस्पर एक समझौता किया जिसमें यह वादा किया गया और शपथ ली गई कि जो धर्म हो उसकी मदद की जाए और जिस का अधिकार छीना गया हो उसका अधिकार दिलाया जाए। अत: उन शपथ लेने वालों में से अक्सर के नाम के साथ फज़ल था इस लिए इसका नाम हिलफुल फ़ुज़ूल रखा गया। लेकिन यह अनुबंध भी पानी का बुलबुला साबित हुआ और इस पर अनुकरण करने की किसी को तौफ़ीक़ न मिली यहां तक कि जंग फुज्जार आदि कइ जंगें हुईं कई लोग कट मरे तो फिर क़ुरैश के कुछ कुछ सारदारों ने चाहा कि शपथ अल्फ़ज़ूल को पुनर्जीवित किया जाए। अत: कुरैश के सरदारों की एक मजलिस हुई जिसमें बनी हाशिम, बनी असद, बनी ज़हीरह और बनी तमीम आदि सम्मिलित थे। सरदारों के साथ हमारे आका हज़रत अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम समझौता में शरीक थे जो उस समय अपनी जवानी के आरम्भ के दौर में थे। मगर इस नवीकरण अनुबंध के बावजूद किसी पक्ष को अपनी अज्ञानता की रिवायत से हटकर न धर्म के समर्थन की तौफ़ीक़ मिली और न वंचित को उसका अधिकार दिलाने की कोशिश की गई। हाँ अगर किसी को इस समझौते का पालन करने की तौफ़ीक़ मिली तो वह हमारे आक़ा हज़रत अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हस्ती थी।

अत: नबुव्वत का दावा के बाद एक घटना है कि एक बदवी काबा के पास आया जहां क़ुरैश सरदार जमा थे और गुहार लगाई कि (अबूलहकम) अबु जहेल ने मेरी कुछ राशि दबाई हुई है और वह अदा नहीं करता आप लोग मेरी मदद करें। उन्होंने शरारत की नीयत से आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के घर का पता दिया कि उनके पास जाओ वह तुम्हारी मदद कर सकते हैं। इन का विचार था कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सहायता को निकलेंगे तो अबूजहल नाउज़ बुल्लाह आप को अपमानित करके निकाल देगा और नहीं निकलेंगे तो हम पूछेंगे कि कसम इल्फ़ज़ूल के नवीकरण अनुबंध में आप भी तो शरीक थे फिर क्यों ना मदद के लिए निकले।

बहरहाल इस व्यक्ति ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अपनी फरियाद सुनाई। आँ हज़रत सल्लल्लाहो

अलैहि वसल्लम तुरंत उसके साथ चल पड़े और अबुजहल के घर जा पहुँचे। अबू जहेल के बाहर निकलने पर फरमाया तुम उसका ऋण क्यों नहीं निभाते वह उल्टे पैर घर गया और पैसे लाकर अदा कर दिया वह बद्दू आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का धन्यवाद करते हुए वापस चला गया।

जब क़ुरैश के सरदारों को ज्ञान हुआ तो अबु जहेल को बुरा कहने लगे कि हमें तो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ उकसाते फिरते हो और जब हम ने उन्हें तुम्हारे घर भेजा तो उनके रोब में आकर राशि अदा कर दी । अबूजहल ने बताया कि क्या बताऊँ क्या माजरा बीता जब वह मेरे दरवाज़े पर आया तो क्या देखता हूँ कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दाएँ बाईं दो मस्त ऊंट खड़े यदि ज़रा भी चूं व चुरा करता तो लगता था कि वह मुझे फाड़ डालेंगे। इसलिए मुझे उनके आदेश का पालन के सिवा कोई चारा न था तो यह था मज़लूमों का समर्थक और न्याय तथा इन्साफ़ का साक्षात मूर्त हज़रत अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का व्यावहारिक नमूना और उस पर अल्लाह तआला का समर्थन तथा सहायता का महान निशान।

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ آلِ مُحَمَّدٍ

मानव स्वभाव किसी की परेशानी को देखकर दया की तरफ झुकता है। किसी अपराधी को भी सज़ा मिलती देखकर दुखित हो जाता जाता है और कोशिश की जाती है कि किसी तरह इस को सज़ा से बचाया जा सके। रहमतुन लिल आलमीन हज़रत अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के विषय में ख़ुदा तआला कुरआन में रऊफ और रहीम की गवाही दी लेकिन जिन क़ौमों की नैतिकता का पतन होने लगते हैं और वे तरह तरह की बुराइयों में लीन हो जाते हैं तो उन में यह प्रथा आम हो जाता है कि बड़े लोग तो कानून के ख़िलाफ कर्म कर के बच जाते हैं और केवल ग़रीब और बेसहारा लोग ही सज़ा पाते हैं । लेकिन हज़रत अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा रिहमतुन लिल आलमीन और रऊफ और रहीम होने के बावजूद शरीयत के आदेशों के कार्यान्वयन में बेहद सम्मान रखते थे और न्याय इन्साफ़ को कभी हाथ से न जाने दते। अत: बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत आयशा रज़ि से रिवायत दर्ज है कि:

कबीला बनी मख़ज़ोम की फातिमा नामक एक महिला ने चोरी की। इस पर लोगों ने चाहा कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में इस महिला के मामले में नर्मी की सिफारिश की जाए। इसलिए उसामा बिन ज़ैद जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बहुत लाडले और प्यारे थे उन को तय्यार किया और उन्होंने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इस बात का उल्लेख कर दिया। हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस बात से सख्त नाराज़ हुए और क्रोध से आप चेहरा मुबारक लाल हो गया। आपने फ़रमाया: बनी इस्राईल की आदत थी कि जब उनमें कोई माननीय चोरी करता तो उसे छोड़ देते मगर जब कोई ग़रीब चोरी करता तो उसका हाथ काट देते थे मगर मेरा यह हाल है कि उस हस्ती की कसम जिसके हाथ में मेरी जान है अगर मुहम्मद की बेटी फातिमा भी चोरी करती तो उसका भी हाथ काट देता।" सुभान अल्लाह।

जंगे बद्र में मक्का के मुशरिकीन के कैदियों में रसूल अल्लाह तआला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चाचा हज़रत अब्बास भी थे। कैदियों की निगरानी जब हज़रत उमर रज़ि अल्लाह के सुपुर्द हुई तो उन्होंने हज़रत अब्बास सहित सभी कैदियों की मशकें अच्छी तरह कस दीं। जो मस्जिदे नबवी के सेहन में ही थे जिस से अब्बास कराहने लगे । रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि सल्लल्लाहो ने जब अपने चाचा के कराहने की आवाज़ सुनी तो बेचैन हुए और आप की नींद उड़ गई। अंसार को किसी तरह उसका ज्ञान हो गया तो उन्होंने हज़रत अब्बास की मश्कें ढीली करें तो उनका कराहना बंद हो गय। तो शीघ्र ही आपने पूछा कि अब्बास के कराहने की आवाज़ क्यों नहीं रही? सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! हम ने आप की असुविधा के विचार से उनकी रस्सियां ढीली कर दी हैं आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया न्याय के ख़िलाफ बात है। या तो बाकी कैदियों की रस्सियां भी ढीली कर दो या फिर अब्बास की रस्सियां भी कस दो। इस पर सहाबा ने सभी कैदियों की रस्सियां ढीली करें।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ آلِ مُحَمَّدٍ

हुनैन के युद्ध में 24 हज़ार ऊंट, 40 हजार बकरियां, चार हज़ार ओकिया चांदी और छह हज़ार कैदी मुसलमानों के हाथ लगे थे " हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: मैं अपने और बनो अब्दुल मुत्तलिब के कैदियों को बिना किसी चार्ज रहा करता हूँ। अंसार और मुहाजिरों ने कहा: हम भी अपने कैदियों को बिना किसी मुआवज़े के स्वतंत्र करते हैं। अब बनी सलीमा और बनी फज़ारह रह गए, उनके निकट यह अजीब बात थी कि हमलावर दुश्मन (जो सौभाग्य से हार गया हो) ऐसा उपकार तथा रहम किया जाए, उन्होंने अपने हिस्से के कैदियों को आजाद न किया। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें बुलाया। प्रत्येक कैदी की कीमत छह ऊंट करार पाई। यह कीमत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ुद अदा दी और इस तरह बाकी कैदियों को भी स्वतंत्रता दिलाई।

यह घटना जहां आपकी दया की गवाही देता है, वहाँ इस तथ्य को भी प्रकट करती है कि हुज़ूर की न्यायप्रिय तबीयत को यह कभी पसंद नहीं था कि कुछ कैदी तो अपने रिश्तेदारों की वजह से छूट जाएं और बाकियों को वैसे ही कैदी रखा जाए तो आप ने शेष कैदियों की कीमत अदा करके उन्हें रिहाई दिला दी।

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के स्थापित किए गए न्यायिक व्यवस्था में राज्य का स्वामी और एक मामूली नागरिक कानून की नज़र में बराबर हैं। इसलिए एक मुकदमा में हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुद एक बद्दू के ख़िलाफ वादी थे। अपने दावा के सबूत में हुज़र सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से गवाह पेश करने के लिए कहा गया। इसमें हज़रत खज़ीम: बिन साबित ने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की गवाही दी। इस घटना का विवरण सुन्न अबी दाऊद इस तरह से दर्ज है कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक बद्दू से घोड़ा ख़रीदा और उसे कीमत लेने के लिए आप ने पीछे आने को कहा। आप तेज़ चल रहे थे। देहाती अपनी धीमी गति के कारण पीछे रह गया बद्दू को लोग मिलने लगे और उन्होंने इस घोड़े की कीमत अधिक लगाई वे नहीं जानते थे कि रसूल अल्लाह तआला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह घोड़ा खरीद चुके हैं। बद्दू ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम को पुकारा और पूछा कि आप यह घोड़ा ख़रीदेंगे या इसे मैं किसी और के हाथ बेच दूं? आप रुक गए और पूछा मैंने इसे तुम से खरीद नहीं लिया हूँ? बद्दू ने कहा कि ख़ुदा की कसम मैं ने यह तुम्हारे हाथ नहीं बेचा। आप ने आश्चर्य से कहा क्यों नहीं? मैं तुम से इसे खरीद चुका हूँ उस पर बद्दू कहने लगा कोई गवाह लाओ। खज़ाअ बिन साबित बोले"मैं गवाही देता हूँ कि आप इसे इस ख़रीद चुके हैं .आप खज़ाअ के पास गए और कहा तुम किस आधार पर गवाही दे रहे हो। उन्होंने ने जवाब में कहा आप की पुष्टि पर हे अल्लाह के रसूल "

अत: कितना निष्ठावान और वफादार था या शाहिद (गवाही देने वाला) और कितना अपनी बात का सच्चा था मशहूद(गवाही मांगने वाला)।

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ آلِ مُحَمَّدٍ

हज़रत रसूले करीम अपने साथियों के बीच कमाल न्याय के साथ निर्णय फरमाते मगर साथ ही यह भी चेतावनी कहते थे कि देखो, मैं भी एक इंसान हूँ तुम अपने झगड़े मेरे पास लाते हो। मुमकिन है कि तुम से से कोई अपने प्रतियोगियों पर अपनी हुज्जत अधिक मौखिकता से प्रस्तुत करे और मैं उसके पक्ष में फैसला दे दूं तो वह याद रखें जो कुछ वह अन्याय से लेगा वह आग का टुकड़ा ले जाएगा चाहे तो ले ले चाहे तो छोड़ दे। (बुख़ारी)

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया काज़ी तीन प्रकार के होते हैं एक जन्नती और दूसरा दोज़खी .जन्नती काज़ी वह है जो सही पहचान कर उसके अनुसार निर्णय करेगा और जो काज़ी सच पहचानते हुए क्रूर निर्णय करे वह जहन्नमी है उसी तरह वह काजी जो लोगों के निर्णय बिना सोचे समझे करे वह भी जहन्नमी है। (अबू दाऊद)

हज़रत अबु हुरैरह से रिवायत है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया"जिसे लोगों के लिए क़ाज़ी बनाया गया वह तो बिना चाकू के ज़िबह किया गया। (तिर्मिज़ी, अबु)

हज़रत अनस का बयान है कि हज़रत रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि क़ज़ा का पद मांग कर लेगा वह अपने नफस के चक्कर में फँस जाएगा जिसे मजबूर करके यह पद सौंपा जाएगा उस पर एक फरिशता उतरेगा जो उसे सीधी राह चलाता रहेगा। (तिर्मिज़ी, अबू दाऊद)

जिन मालों के वितरण पर हज़रत रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अधिकार प्राप्त था उसमें भी आप अदल और न्याय को ध्यान में रखते लेकिन कभी कभी कुछ बातों के मद्देनजर किसी हकदार के अधिकारों का हनन किए बिना कुछ दूसरों को अधिक भी प्रदान फरमाते। अत: हुनैन के युद्ध वापसी पर कुछ अरब नेताओं को दूसरों पर प्राथमिकता देते हुए दिलों को जीतने के लिए पुरस्कार व इकराम से सम्मानित किया और इस करूणा का निष्कर्ष हुआ कि वह अरब सरदार न सिर्फ मुसलमान हो गए बल्कि उनके के कबीले भी मुसलमान हो गए। इसलिए आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कुछ लोगों को में दिल जातने के लिए देता हूं जबकि उनके अतिरिक्त कुछ दूसरे लोग मुझे अधिक प्रिय होते है लेकिन उन्हें इस्लाम के निकट करने के लिए ऐसा करता हूं। (बुख़ारी)

लेकिन एक मूर्ख ने आपत्ति जताई कि वितरण में न्याय से काम नहीं लिया गया। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जब उस चीज़ का ज्ञान हुआ तो केवल इतना फरमाया कि अगर अल्लाह तआला और उसका रसूल न्याय नहीं करेगा तो और कौन करेगा। अल्लाह तआला मूसा पर रहम करे उन पर इससे बड़ा आरोप लगाया गया मगर उन्होंने धैर्य किया। (बुखारी)

इसी तरह एक और मौके पर माल के बंटने पर एक अंसारी ने आपत्ति कर दी थी कि या रसूलल्लाह यह क्या बात है कि ख़ून तो हमारी तलवारों से बह रहा है और माल अपने मुहाजरीन में विभाजित कर रहे हैं? आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क्या खूब जवाब में फरमाया कहा! आपने फरमाया कि क्या तुम इसे पसंद नहीं कि माल तो प्रवासी अपने घर ले जाएँ और तुम अल्लाह के रसूल को अपने घरों में ले जाओ।

इस जवाब से जहां वह आरोप लगाने वाला ज़ शर्मिंदा हुआ वहाँ सभी अंसार का गिरोह इस बात पर मलामत करता रहा। दरअसल रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जहां भी माल वितरण में कुछ बातों के मद्देनजर प्राथमिकता तय फरमाई वह भी न्याय इन्साफ़ से हटकर नहीं बल्कि उनके माल के ख़ुम्स (पांचवे) से जो वितरण पर पूर्ण अधीकार रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को प्राप्त था लेकिन इसमें भी अपनी ज़ात और अपने जिगर गोशों को हमेशा के लिए वंचित रखा। आप की चहेती बेटी हज़रत फातिमा ने जब देखा कि बहुत सारे कैदी आते हैं और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उन्हें जरूरतमंद में बांच देते हैं तो आपको भी एक नौकर घरेलू ज़रूरत के लिए मांगा कि चक्की पीसते पीसते मीरे हाथों में छाले पड़ गए हैं लेकिन रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया। " ख़ुदा की क़सम ! मैं तुम्हें ग़ुलाम दे कर अहले सुफ्फ: अर्थात गरीब लोगों को वंचित नहीं रख सकता जो भूख से बेहाल हैं और जिनके खाने के लिए खर्च उपलब्ध नहीं। मैं कैदी बेच कर अहले सुफ्फ: सफह पर खर्च कर दूं।"

और आप की पीड़ा के निवारण के लिए नुसख़ा बताया कि हर फर्ज़ नमाज़ के बाद सुबहान अल्लाह तआला, अल्हमदो लिल्लाह अल्लाह अकबर का विर्द करो यह कैदी और सेवक के तोहफा से बेहतर है।

आरम्भ में मैंने सूरत अल्माइदा की जो आयत 9 तिलावत की थी। इसमें दुश्मनों के साथ भी न्याय करने की शिक्षा दी गई है। इस संबंध में केवल एक घटना वर्णन करता हूँ।

एक बार कुछ साथियों को बाहर ख़बर पंहुचाने के लिए भिजवाया गया क्योंकि जंग की स्थिति थी, स्थिति पर नज़र रखनी होती थी इस दौरान दुश्मन के कुछ आदमी उन्हें हरम की सीमा में मिल गए। मसलमानों ने माना कि अगर हम उन्हें ज़िन्दा छोड़ दिया तो यह मक्का वालों को जाकर खबर कर देंगे और हम मारे जाएंगे। इस विचार से उन्होंने उन पर हमला कर दिया और उन्हें काफिरों से एक आदमी मारा गया जब यह ख़बर पहुचाने वाला वाला काफिला मदीना वापस आया। तो पीछे मक्का वाले आदमी भी आ गए और शिकायत की कि इस तरह हमारे दो आदमी हरम का सीमा के अंदर मारे गए हैं हालांकि पहले भी ये लोग आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर हरम की सीमाओं में अत्याचार करते रहे हैं इस तरह उनकी फ़रियाद का कोई औचित्य नहीं था लेकिन आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इंसाफ देखें फरमाया आप ने मक्का वालों को फ़रमाया तुम्हारे साथ अन्याय हुआ है। इसलिए तुम इन दोनों का ख़ून का बदला इन मृतकों के वारिसों को दिलवाया।

सुलह हुदैबिया की शर्तों में से एक शर्त भी थी कि मक्का से अगर कोई मुसलमान मदीना चला जाए तो उसे वापस करना होगा लेकिन अगर कोई मुसलमान मदीना से मक्का चला जाए तो उसे वापस नहीं किया जाएगा। इसी दौरान जब यह अनुबंध लिखा जा रहा था , प्रतिनिधि क़ुरैश सुहैल बिन अमर का एक बेटा अबू जिंदल जो मुसलमान हो चुका था और मक्का के काफिरों के उत्पीड़न से तंग आकर मदीना की तरफ जा रहा था लेकिन इस अनुबंध के अनुसार आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस पीड़ित को फिर उसके पिता सुहैल बिन अमर व सौंपा दिया जिसने उसे फिर यातना दायक कैद में डाल दिया। यह ऐसी शर्त और ऐसा समझौता था कि उमर जैसे बहादुर व्यक्ति का पित्ता भी पानी हो रहा था लेकिन आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बड़ी बड़ी भावनाओं की कुरबानी कर के भी अनुबंध की एक शर्त को पूरा

फरमाया जिस के परिणाम में अल्लाह तआला ने इस सुलह हुदैबिया के बाद केवल तीन साल की अवधि में आप को दस हज़ार कुद्दूसियों के साथ विजयी रूप में मक्का में प्रवेश की तौफ़ीक़ अता फरमाई।

एक समय वह था जब पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बैतुल्लाह के चाबी प्रमुख उस्मान बिन तल्हा से कहा था कि बैतुल्लाह खोल दो लेकिन उसने मना कर दिया था और आपने कहा था " ऐ उसमान देखना एक दिन यह चाबी मेरे पास होगी। अत: फतह मक्का के अवसर पर आप ने उस्मान बिन तल्हा से वही चाबी ली और बैतुल्लाह का दरवाजा खोल कर ख़ाना काबा को मूर्तियों मुक्त किया।

हज़रत अब्बास ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से निवेदन किया कि अब यह चाबी बनू हाशिम को दे दी जाए। लेकिन कुरबान जाएं इस महान इंसाफ करने वाले सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर कि आपने वह चाबी फिर उस्मान बिन तल्हा को लौटा दी जो लम्बे समय से बैतुल्लाह का कुंजी वाहक चला आ रहा था।

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ آلِ مُحَمَّدٍ وَّ بَارِكْ وَسَلِّمْ

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लोगों के अधिकारों के अदा करने का बहुत ख्याल रखा करते थे करज़दारों की ऋण वापसी की इतनी ताकीद फरमाते कि जिस व्यक्ति के बारे में यह पता होता कि यह ऐसी स्थिति में मर गया कि उस पर कर्ज का अदा करना अनिवार्य था तो उसका नमाज़ जनाज़ा न पढ़ाते थे।

किसी को किसी व्यक्ति से कोई तकलीफ पहुंची हो किसी का दिल दु:खा हो, जब तक इससे वह माफी भरपाई न करा ले तो आप उस व्यक्ति से प्रसन्न नहीं होते थे और ख़ुद अपना यह हाल था कि सूरे नसर के अवतरण के बाद (जो रसूल अल्लाह तआला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मृत्यु की ओर इशारा है) सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक खुत्बा इरशाद फ़रमाया जिसे सुनकर लोग बहुत रोए.फर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मैं आप सबको अल्लाह तआला की क़सम खाकर कहता हूं कि किसी ने मुझ से कोई हक या बदला लेना हो तो कयामत से पहले आज यहीं ले सकता है । एक बूढ़ा व्यक्ति उकाशा नामक खड़ा हुआ और कहने लगा मेरे माता-पिता आप पर कुर्बान। आप बार बार अल्लाह तआला की क़सम देकर यह न फरमाते कि बदला ले लो तो मैं कभी आगे न बढ़ता। मैं अमुक जंग में आपके साथ था मेरा ऊंट हुज़ूर की ऊँटनी के पास से गुज़रा तो मैं सवारी से उतर आया ताकि हुज़ूर के कदम चूम लूं । हज़ूर ने छड़ी उठाकर जो मारी तो मेरे पहलो में लगी। मुझे नहीं पता कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरादे से मुझे मारी थी या ऊंट को? रसूल अल्लाह तआला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया, " अल्लाह तआला के जलाल की कसम ख़ुदा का रसूल जानबूझ कर तुझे मार नहीं सकता" फिर आप ने बिलाल से फरमाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वही छड़ी घर से लेकर आए।

हज़रत बिलाल जाकर हज़रत फातिमा से वह छड़ी ले आए । रसूल अल्लाह तआला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वह छड़ी उकाशा को दी और कहा कि अपना बदला ले लो। इस पर हज़रत अबु बकर और उमर खड़े हो गए और उन्होंने उकाशा से कहा कि तुम रसूल अल्लाह तआला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बजाय हमसे बदला ले लो। हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबु बकर और उमर को बैठा दिया तो हज़रत अली खड़े हुए और कहा कि रसूल अल्लाह तआला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बजाय मुझ से बदला ले लो। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें भी रोक दिया। फिर हज़रत हसन और हुसैन उठे उन्होंने कहा कि हम रसूल अल्लाह तआला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नवासे हैं और हम से बदला लेना भी रसूल अल्लाह तआला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बदला लेने की तरह है। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें मना कर दिया और उकाशा से कहा कि तुम बदला ले लो। उकाशा ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! जब आप की छड़ी मुझे लगी तो मेरे बदन पर कपड़े नहीं थे। हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बदन से कपड़े उठाए या तो मुसलमान दीवानों की तरफ रोने लगे वह दिल में कहते थे कि क्या उकाशा हमारे आका सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को छड़ी मारेगा? उकाशा ने हुज़ूर का शरीर देखा तो लपक कर आगे बढ़ा और आपको चूमने लगा। साथ कहता जाता था "मेरे माता-पिता आप पर कुर्बान हों आप से बदला लेना किस दिल को गवारा कर सकता है। " रसूल अल्लाह तआला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि "या तो तुम को बदला लेना होगा या फिर माफ करना होगा" उकाशा ने अर्ज़ किया " या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मैंने माफ़ क्या इस उम्मीद पर कि अल्लाह तआला भी क़यामत के दिन मुझे माफ करे " नबी करीम ने फरमाया जो आदमी जन्नत में मेरे साथी को देखना पसंद करें वह इस बूढ़े को देख ले। फिर तो मुसलमान उकाशा के माथे को चूमने लगे और उसे बधाई देकर कहने लगे कि तुम ने बहुत ऊंचा दर्जा प्राप्त कर लिया।

(मजमउज़्ज़वाइद जिल्द 9, पृष्ठ 289, दारुल कुतुब अल-अरबी बैरूत)

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ फरमाते हैं: इस समय हम अहमदियों पर इंसाफ को स्थापित करने की बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी होती है क्योंकि हम इस बात के दावेदार हैं कि हम ने इस ज़माने के इमाम को पहचाना और बैअत में शामिल हुए। वह इमाम जिस को आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हकम और अदल फरमाया है जहाँ वह इमाम इन विशेषताओं पर आधारित होगा वहाँ इसके मानने वालों से भी यह उम्मीद की जाती है कि वह न्याय के उच्च मानकों को स्थापित करें।

हज़रत अबु हुरैरह रिवायत करते हैं कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया मरियम का पुत्र हकम और औरअदल बनकर ज़रूर उतरेगा। (अहमद बिन हंबल, जिल्द 2, पृष्ठ 494, बैरूत)

एक रिवायत है कि हज़रत अली वर्णन करते हैं कि आप ने फरमाया अगर दुनिया की ज़िन्दगी का एक दिन भी बाकी होगा तो अल्लाह तआला ज़रूर मेरे अहले बैअत में से एक व्यक्ति को प्रादुर्भव करेगा जो दुनिया को न्याय से भर देगा जिस तरह कि वह पहले ज़ुल्म तथा अत्याचार से भरी होगी। (अबू दाऊद किताबुल फितन)

अर्थात इमाम महदी का आना बहरहाल ज़रूरी है और क़ामत से पहले उसने आना है चाहे क़यामत को एक दिन भी रह जाए तो वह आएगा इस के बाद यह सब कुछ हो जाएगा। हम लोग भाग्यशाली हैं जिन्होंने इमाम महदी को देखा, पहचाना और इस जमाअत में शामिल हुए और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस भविष्यवाणी को पूरा होते देखा।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद फरमाते हैं:

"अब मसीह मौऊद का युग आ गया है अब बहरहाल ख़ुदा तआला आसमान से ऐसे माध्यम पैदा कर देगा कि जैसा कि धरती अत्याचार और अन्याय पूर्ण ख़ून से भरी थी अब न्याय और अमन और सुलह से भर जाएगी और मुबारक वे अमीर और राजा हैं जो इस से कुछ भाग लें।

(गवर्मेन्ट अंग्रेज़ी और जिहाद, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 17, पृष्ठ 19)

☆ ☆ ☆

सीरत

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दाई इल्लल्लाह के रूप में

(शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री, सम्पादक अख़बार बदर कादियान)

अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को संबोधित करके फरमाता है

يَاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ

(अलमाइदा: 68) हे रसूल अच्छी तरह पहुंचा दे जो तेरे रब्ब की तरफ से तेरी तरफ उतारा गया है।

फिर इस दावत और तब्लीग़ के तरीका की तरफ इशारा करते हुए अल्लाह तआला फरमाता है: فَلِذٰلِكَ فَادْعُ ۚ وَ اسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ (शूरा: 16) अत: इसी वजह से चाहिए कि अगर उन्हें दावत दे और मज़बूती से अपने रुख पर कायम हो जा जैसे तुझे आदेश दिया जाता है। साथ ही फरमाया:

اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَ الْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَ جَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ وَ هُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ

(नहल: 126) अपने रब्ब के रास्ते की तरफ हिकमत और अच्छी सलाह के साथ दावत दे और उनसे ऐसे तर्क के साथ चर्चा कर जो बेहतरीन हो, बेशक तुम्हारा रब्ब ही उसे, जो उसके रास्ते से भटक गया हो सबसे ज़्यादा जानता है और वह निर्देशित करने वालों का भी सबसे अधिक ज्ञान रखता है।

इन रब्बानी आयतों से मालूम हुआ कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बुनियादी स्थिति दाई की है। अल्लाह तआला फरमाता है:

يَاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّ مُبَشِّرًا وَّ نَذِيْرًا وَّ دَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَ سِرَاجًا مُّنِيْرًا (अहज़ाब: 45 से 46)

हे नबी बेशक हम ने तुमको शाहिद (गवाह) और एक प्रचारक और एक नज़ीर (डराने वाले) के रूप में भेजा है। और अल्लाह तआला की तरफ से उसके आदेश से बुलाने वाले और एक प्रकाशित कर देने वाले सूर्य के रूप में।

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र सीरत का अध्ययन करने से यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है कि आप इस्लाम की दावत के काम को बाकी सभी कामों पर प्रधानता दी और हर ज़माना और हर हालत में इस की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए वैश्विक प्रत्येक समय व्यस्त रहे। आइए! आप की दावत इलल्लाह के कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं का अध्ययन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उस्वा हुस्ना, मुबारक उपदेशों और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे आशिक सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की उपदेशों के प्रकाश में करें ताकि हम अपनी ज़िम्मेदारियों को आप के आदर्श के प्रकाश में बेहतर रूप से अदा करने की कोशिश सकें। क्योंकि उम्मत पर भी आप के नक्शे कदम पर दावत इलल्लाह को अनिवार्य बताया गया है। अल्लाह तआला का सूरह आले इमरान में इरशाद है:

وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ وَ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَ يَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ

(आले इमरान: 105)

तुम में से एक जमाअत ऐसी होनी चाहिए जो लोगों को नेकी की तरफ दावत (अर्थात) नेक कामों का आदेश करे और बुरे कामों से रोके।

दावा इलल्लाह का प्रोत्साहन

हदीस में आता है हज़रत सहल बिन सअद से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली को संबोधित कर के फरमाया कहा: "अल्लाह की कसम तेरे द्वारा एक आदमी का हिदायत पा जाना तेरे लिए उच्च नस्ल के लाल ऊंट के मिल जाने से बेहतर है ।

(मुस्लिम, किताबुल फज़ाइल, बाब गुण अली बिन अबी तालिब)

नेकी की तरफ बुलाने का इनाम

हज़रत अबु हुरैरह वर्णन करते हैं कि रसूल अल्लाह तआला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: "जो व्यक्ति किसी नेक काम की ओर बुलाता है उसे उतना ही इनाम मिलता है जितना पुण्य इस बात का पालन करने वाले को मिलता है और उनके इनाम के कुछ भी कम नहीं होता और जो व्यक्ति किसी त्रुटि और बुराई से की तरफ बुलाता है उस को भी उतना गुनाह होता है जितना कि इस बुराई को करने वाले को होता है। और उसके गुनाहों में कोई कमी नहीं आती। "

(मुस्लिम, किताबुल इलम)

आं हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तब्लीग़ी कोशिशें

हिजरत से थोड़ा समय पहले आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबुज़र ग़फ़्फ़ारी को मुअल्लिम बनाकर उनकी क़ौम की तरफ भेजा। उन्होंने जाकर इस्लाम की तब्लीग़ की तो आधा कबीलाा तभी मुसलमान हो गया और आधे ने कहा कि हम हुज़ूर की हिजरत के बाद ईमान लाऐंगे। इसलिए आप मदीना आए तो उन लोगों ने भी इस्लाम स्वीकार कर लिया। उन्हें देख कर कबीला असलम ने भी इस्लाम के सामने सिर झुका दिया।

(मुस्लिम, किताब ाल्फ़ज़ाइल, अध्याय गुण अभय ज़र)

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का तब्लीग़ शुरू करना

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए अपनी विश्व प्रसिद्ध किताब सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में फरमाते हैं: " आपकी तबियत में एकाग्रता और संतुष्टि थी। अत: आप लोगों को तौहीद की तरफ द्वारा बुलाना शुरू किया और शिर्क के ख़िलाफ शिक्षा देने लगे लेकिन शुरू शुरू में आप अपने मिशन को खुल्लम खुल्ला व्यक्त नहीं फरमाया। बल्कि बहुत चुपचाप कार्रवाई शुरू की और केवल अपने मिलने वालों के क्षेत्र तक अपनी शिक्षा को सीमित रखा। (सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन, हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि, पृष्ठ 120)

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सगे सम्बंधियों को दावत

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली को इरशाद फरमाया कि एक दावत का प्रबंध करो और इसमें बनो अब्दुल मुत्तलिब को बुलाओ ताकि इस माध्यम से उन तक संदेश बहुमचा दिया जाए। अत: हज़रत अली ने दावत की व्यवस्था की और आप अपने सबसे करीबी रिश्तेदारों को जो उस समय कम से कम चालीस आदमी थे उस दावत में बुलाया। जब वे खाना खा चुके तो आप ने कुछ भाषण शुरू करना चाहा

लेकिन बदबख़्त अबूलहब ने कुछ ऐसी बात कह दी जो सब बिखर गए। उस पर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली से कहा कि " यह मौका तो जाता रहा। अब फिर दावत का प्रबंध करो।" इसलिए आप के रिश्तेदार फिर इकट्ठे हुए। और आप उन से यूँ संबोधित किया कि " हे बनो अब्दुल मुत्तलिब! देखो मैं तुम्हारी ओर वह बात लेकर आया हूँ कि इससे बढ़कर अच्छी बात कोई व्यक्ति अपने परिवार की तरफ नहीं लाया। मैं तुम्हें ख़ुदा की तरफ बुलाता हूँ। अगर तुम मेरी बात मानो तो तुम धर्म व दुनिया के बेहतरीन ख़ुशी के वारिस बनोगे। अब बताओ इस काम में मेरा कौन मददगार होगा? " सब चुप थे और हर तरफ मजलिस में एक सन्नाटा था कि अचानक एक तेरह साल का दुबला पतला बच्चा जिसकी आंखों से पानी बह रहा था उठा और इस प्रकार सम्बोधन किया। "यद्यपि मैं सबसे कमजोर हूँ और सबसे छोटा हूँ मगर मैं आपका साथ दूंगा। " यह हज़रत अली की आवाज़ थी। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली के ये शब्द सुने तो अपने रिश्तेदारों की ओर देखकर कहा। " अगर तुम जानो तो बच्चे की बात सुनो और इसे मानो। " सुनने वालों ने यह नजारा देखा तो बजाय उपदेश हासिल करते सब खिल खिलाकर हंस पड़े और अबोलहब अपने बड़े भाई अबूतालिब से कहने लगा। " लो अब मुहम्मद तुम्हें यह आदेश देता है कि तुम अपने बेटे का पालन करो। " और फिर ये लोग इस्लाम और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की कमज़ोरी पर हंसी उड़ाते हुए विदा हो गए। (सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन, हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए, पृष्ठ 128 से 129)

दावत इलल्लाह और क़ुरैश मक्का व्यवहार

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं: " जब यह आयतें उतरीं कि मुशरिकीन गंदे हैं पलीद हैं सब से बुरे हैं बेफकूफ और शैतान की औलद हैं और उनके आपास्य आग में जलने वाले हैं और जहन्नम वाले हैं अबूतालिब ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बुलाकर कहा कि हे मेरे भतीजे अब तेरा कठोर बातों के कहने से क़ौम उग्र हो गई है और करीब है कि तुझे मार डालें और साथ ही मुझे भी। तूने उनके बुद्धिमानों को बेफकूफ करार दिया और उनके बड़ों को बुरा कहा और उनके सक्षम सम्मान वाले देवताओं को जहन्नम की लकड़ी और जहन्नम की आग नाम रखा और आमतौर पर इन सभी को गन्दे और शैतान की औलाद और पलीद ठहराया मैं तुझे खैरख्वाही की राह से कहता हूँ कि अपनी ज़बान को थाम और कटोर बात से रुक जा अन्यथा में क़ौम के मुकाबला की शक्ति नहीं रखता। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कहा कि हे चाचा यह कठोर बात नहीं है बल्कि सच्ची बात की अभिव्यक्ति का सटीक स्थान में वर्णन है और यही तो काम है जिसके लिए भेजा गया हूँ अगर इस के लिए मुझे मरना पढ़े तो सहर्ष अपने लिए मौत को स्वीकार करता हूँ मेरा जीवन इसी में समर्पित है। मौत के डर से व्यक्त करने के अधिकार से रुक नहीं सकता। और हे चाचा अगर तुझे अपनी कमज़ोरी और अपनी परेशानी का विचार है तो मुझे शरण में रखने से हाथ खींच ले अल्लाह की कसम मुझे तेरी कुछ भी आवश्यकता नहीं मैं खुदा के आदेशों को पहुँचाने से कभी नहीं रकूंगा। मुझे अपने मौली की आज्ञाए जान से अधिक प्रिय हैं। अल्लाह की कमस यदि इस तरह मारा जाऊँ तो चाहता हूँ कि फिर बार बार जीवित होकर हमेशा उसी में मरता रहूं। यह डर की जगह नहीं बल्कि मुझे इसमें अपार ख़ुशी है कि इस रास्ते में दु:ख उठा। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह भाषण कर रहे थे और चेहरे पर सच्चाई और नूरानियत छाई हुई थी और जब आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस भाषण को समाप्त कर चुके तो सच्चाई की रौशनी को देखकर अबू तालिब के आंसू जारी हो गए और कहा कि मैं तेरी उस उच्च स्थिति से अनजान था तू और ही रंग और, और ही शान का है । जा अपने काम में लगा रह। जब तक मैं ज़िंदा हूँ, जहां तक मेरी शक्ति है, मैं तेरा साथ दूंगा। (सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हाशिया में तहरीर फरमाया है कि यह सब लेख अबूतालिब के किस्सा का हालांकि किताबों में दर्ज है लेकिन यह सब लेखन इल्हामी है जो ख़ुदा तआला ने इस विनम्र के दिल पर अवतरित की केवल कोई कोई वाक्यांश व्याख्या के लिए विनीत की तरफ से लिखा है)

(इज़ाला औहाम, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 3, पृष्ठ 110 से 111)

ताइफ़ वालों को दावत इलल्लाह और उनका रवैया

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम. ए रज़ि अल्लाह अन्हो फरमाते हैं कि शोएब अबी तालिब की कैद के दिन जब ख़त्म हो गए तो आप ने तब्लीग़ शुरू की। आप फरमाते हैं: जब घेराबंदी उठ गई और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपनी हरकतों और ठहरने में एक प्रकार की स्वतंत्रता नसीब हुई तो आपने इरादा कहा कि ताइफ़ में जा कर वहां के लोगों को इस्लाम की दावत दें। ताइफ़ एक प्रसिद्ध स्थान है जो मक्का से दक्षिण पूर्व की ओर चालीस मील की दूरी पर स्थित है और इस समय कबीला बनो सकीफ निवासी था। काबा के महत्तव को अलग रखकर ताइफ़ मानो मक्का का समकक्ष था और इसमें बड़े बड़ी प्रभावशाली और धनी लोग बसे थे। और ताइफ़ के इस महत्त्व को ख़ुद मक्का वालों भी स्वीकार करते थे था इसलिए यह मक्का वालों का ही कथन है कि

لَوْلَا نُزِّلَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ عَلٰى رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيْمٍ

अर्थात अगर यह कुरआन ख़ुदा की ओर से है तो मक्का या ताइफ़ के किसी बड़े आदमी पर क्यों अवतरित नहीं किया गया। " (करयतैन से मुरादा मक्का और ताइफ की बस्ती थी।)

अत: शव्वाल 10 नबवी में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ताइफ़ अकेले पधारे। या कुछ रिवायतों की दृष्टि से ज़ैद बन हारसा भी साथ थे। वहाँ पहुँच कर बहुत से रईसों से बाद मुलाकात की लेकिन इस शहर की किस्मत में भी मक्का की तरह उस समय इस्लाम लाना मुक़द्दर न था। इसलिए सब ने इनकार किया बल्कि हंसी उड़ाई। अत: आप ताइफ़ के सब से बड़े रईस अब्दुल या लैल के पास जाकर इस्लाम की दावत दी मगर उसने भी साफ इनकार किया बल्कि उपहास के रंग में कहा कि यदि आप सच्चे हैं तो मुझे आप के साथ बातचीत की मजाल नहीं और अगर झूठे हैं बातचीत व्यर्थ है और फिर इस विचार से कि कहीं आपकी बातों का शहर के युवाओं पर प्रभाव न हो, आपसे कहने लगा बेहतर होगा कि आप यहाँ से चले जाएं क्योंकि यहां कोई व्यक्ति आपकी बात सुनने के लिए तैयार नहीं है उसके बाद बदबख़्त ने शहर के आवारा आदमी आप के पीछे लगा दिए। जब आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शहर से निकले तो यह लोग शोर करते हुए आपके पीछे हो लिए और आप पर पत्थर बरसाने शुरू किए जिससे आपका पूरे शरीर खून से लहु लुहान हो गया। बराबर तीन मील तक यह लोग अपने साथ गालियां देते और पत्थर बरसाते चले आए।

ताइफ़ से तीन मील की दूरी पर मक्का के रईस अतब: बिन राबिया का एक बाग़ था। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसमें आकर शरण ली और अन्यायपूर्ण लोग थक कर लौट गए। यहाँ एक छाया में खड़े होकर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला के समक्ष यूं दुआ की।

اَللّٰهُمَّ اِلَيْكَ اَشْكُوْ ضُعْفَ قُوَّتِيْ وَقِلَّةَ حِيْلَتِيْ وَ هَوَانِيْ عَلَى النَّاسِ اَللّٰهُمَّ يَااَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ اَنْتَ رَبُّ الْمُسْتَضْعِفِيْنَ وَ اَنْتَ رَبِّيْ

हे मेरे रब मैं अपनी शक्ति की कमज़ोरी और चतुराई की कमी और लोगों की तुलना में अपनी बेबसी की शिकायत तेरे ही पास करता हूँ। हे मेरे ख़ुदा तो सबसे बढ़कर दयालु है और निर्बलों और असहायों का तू ही संरक्षक और रक्षक है और तू ही मेरा रब है ... मैं तेरे ही मुंह की रौशनी में शरण का अभिलाषी होता हूँ क्योंकि तू ही है जो ज़ुलमतों को दूर करता और इंसान को दुनिया और आख़िरत की भलाई का वारिस बनाता है।

अतबह और शीबह उस समय अपने बाग़ में मौजूद थे। जब उन्होंने आपको इस हालत में देखा तो दूर नज़दीक की रिश्तेदारी या क़ौमी भावना से या न मालूम किस विचार से अपने ईसाई ग़ुलाम अद्दास के हाथ एक प्लेट में कुछ अंगूर देकर आपके पास भिजवाए। आप ने ले लिए और अद्दास से सम्बोधित होकर फरमाया कि तुम कहां के रहने वाले हो? और किस धर्म के पाबन्द? उसने कहा। " मैं नैनवा का हूँ और ईसाई धर्म का मानने वाला हूं " आप ने फरमाया: " क्या वही नैनवा जहां ख़ुदा के नेक बन्दे यूनुस बिन मत्ती का निवास था। "ग़ुलाम ने कहा: " हाँ। लेकिन आपको यूनुस का हाल कैसे मालूम हुआ? आपने फ़रमाया। वह मेरा भाई था। क्योंकि वह भी अल्लाह तआला का नबी था और मैं भी अल्लाह तआला का नबी हूँ। फिर आप ने उसे इस्लाम की तब्लीग़ फ़रमाई जिस का उस पर बहुत असर हुआ और उसने आगे बढ़कर जोश में आप के हाथ चूम लिए। इस नज़ारे दूर से खड़े खड़े अतब: और शीयब: भी देख लिया। इसलिए जब अद्दास उनके पास वापस गया। तो उन्होंने कहा अद्दास! यह तुझे क्या हुआ था कि उस व्यक्ति के हाथ चूमने लगा। यह व्यक्ति तो तेरे धर्म को ख़राब कर देगा। हालांकि तेरा धर्म उस के धर्म से बेहतर है ..

हदीस में आता है कि एक बार हज़रत आयशा ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा कि क्या आप को कभी जंगे उहद वाले दिन से भी अधिक तकलीफ पहुंची है? आपने फ़रमाया। " आयशा तेरी क़ौम से मुझे बड़ी-बड़ी कठोर घड़ियाँ देखनी पड़ी हैं। " और फिर आप ने ताइफ़ के सफर के हालात सुनाए और फरमाया कि इस सफर से वापसी पर मेरे पास पहाड़ों का फरिशता आया और कहने लगा कि मुझे ख़ुदा ने आपके पास भेजा है ताकि अगर इरशाद हो तो यह दोने तरफ के दोनों पहाड़ उन पर डाल कर उन का अंत कर दूं। " आपने कहा। " नहीं नहीं। मुझे उम्मीद है कि अल्लाह तआला उन्हीं लोगों में से वे लोग पैदा करेगा जो ख़ुदा तआला की इबादत करेंगे। " (सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन, हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए, पृष्ठ 181 से 184)

विभिन्न मेलों में जाकर इस्लाम की तब्लीग़

हज के दिनों में प्रत्येक दूर दराज़ के क्षेत्र से मक्का में लोग जमा होते थे और हुरमत वाले महीनों में उकाज़, मजन्नह: ज़ुल मजाज़ में बड़ी संख्या में लोग जमा होते थे। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का शुरु से ही यह तरीका था कि इन मौकों का लाभ उठाते थे और विभिन्न अरब के कबीलों के ख़ेमों पर जा जा कर उन्हें इस्लाम की दावत दिया करते थे लेकिन कुदरती रूप से अब तक आप अधिक ध्यान मक्का के क़ुरैश की तरफ था। लेकिन जिन दिनों में क़ुरैश मक्का ने मुसलमानों को शोएब अबी तालिब में कैद करके उनके साथ संबंध काट दिए और उनके साथ मेल मिलाप बंद हो गया तो इन दिनों में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अरब के अन्य कबीलों की तरफ अधिक ध्यान शुरू किया। इसलिए कैद होने के समय में आप हुरमत वाले महीनों में जबकि सभी ओर शांति होती थी, हज में आने वाले कबीलों का विशेष रूप से दौरा किया करते थे और उकाज़ आदि को समारोहों में भी नियमित जाते और इस्लाम की तब्लीग़ फरमाते थे। लेकिन मक्का के क़ुरैश ने इस तब्लीग़ में भी रोकथाम शुरू कर दी क्योंकि वे जानते थे कि कबीलों का मुसलमान हो जाना उनके लिए क़रीब वैसा ही ख़तरनाक है जैसा कि ख़ुद मक्का वालों का इस्लाम ले आना। इसलिए यह क़ुरैश ही के विरोध का नतीजा था कि बावजूद इसके कि आप ने कई बार कबीलों का दौरा किया और प्रत्येक शिविर में जा जाकर इस्लाम की दावत दी लेकिन कहीं भी सफलता की उम्मीद नहीं बंधी।

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन, हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम. ए पृष्ठ 181)

सुमामह बिन उसाल को तब्लीग़ और उसका इस्लाम स्वीकार करना

हज़रत अबु हुरैरह रज़ियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नजद के क्षेत्र की तरफ एक घुड़सवार दस्ता भेजा जो बनू हनीफह के एक व्यक्ति जिसका नाम सुमामह बिन उसाल था और वह यमामह वालों का सरदार था गिरफ्तार कर लाए। सहाबा ने मस्जिदे नबवी के एक स्तंभ के साथ उसे बांध दिया। फिर रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस के पास गए और कहा हे सुमामह! तुम्हारा क्या विचार है। उसने कहा। हे मुहम्मद! मेरा विचार अच्छा है। अगर तुम मुझे कत्ल कर डालोगे तो एक खूनी अपराधी को कत्ल कर डालोगे और अगर एहसान करोगे तो एक आभारी पर एहसान करोगे। यदि तुम धन चाहते हो तो आप मांगें जो माँगोगे दिया जाएगा। उस पर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फिर पूछा कि हे सुमामह! तुम्हारा क्या विचार है। तो उसने कहा। मेरा वही विचार है जो कह चुका हूँ। आप मुझ पर उपकार करेंगे तो एक आभारी पर भलाई करेंगे और अगर मुझे मार डालेंगे तो एक खूनी अपराधी को मार डालेंगे और आप माल चाहते हैं, तो आप मांगें। जो माँगेंगे वह आप को दिया जाएगा। रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सुमामह का जवाब सुनने पर कहा। सुमामह को खोल दो। जब इसे खोला गया तो वह मस्जिद के पास ही एक नख़लिस्तान में गया। स्नान किया और फिर मस्जिद में आया और कहा। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह तआला के अतिरिक्त कोई माबूद नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद अल्लाह तआला के बन्दे और रसूल हैं। हे मुहम्मद! अल्लाह तआला की क़सम आप के चेहरे से अधिक सारी पृथ्वी में कोई चेहरा मुझे गुस्सा नहीं दिलाता था और अब यह अवस्था है कि आप का चेहरा मुझे दुनिया के शेष चेहरों से अधिक प्रिय हो गया है। अल्लाह तआला की कमस में आप के धर्म से अधिक किसी और धर्म से द्वेष न रखता था और अब आप का धर्म दीन मुझे सब धर्मों से अधिक प्रिय है। अल्लाह तआला की क़सम! मुझे आप के शहर से अधिक किसी शहर से द्वेष न था और अब मेरा यह हाल है कि मुझे आप के शहर से अधिक सब शहरों से अधिक प्रिय गया है।

(बुख़ारी, किताबुल जिहाद)

यहूदी बच्चे की अयादत और तब्लीग़

हज़रत अनस रज़ि अल्लाह रिवायत करते हैं कि एक यहूदी लड़का नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा करता था। वह बीमार हो गया तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसकी अयादत के लिए पधारे। उसके सिरहाने बैठे और उसे कहा इस्लाम स्वीकार कर लो। उस लड़के ने अपने पिता की ओर देखा जो उसके पास था। उसके पिता ने उससे कहा। अबू क़ासिम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बात मानो। इसलिए उसने इस्लाम स्वीकार कर लिया। तब रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसके घर से यह कहते हुए निकले।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَنْقَذَهٗ مِنَ النَّارِ

अर्थात सब प्रशंसा उस अल्लाह तआला के लिए हैं जिसने इस लड़के को आग से मुक्ति दी। (बुख़ारी, किताबुल जनाईज़,)

तब्लीग़ के कर्तव्य में उत्तम तदबीर

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस तरीके से जो आप ने सहाबा की सलाह से अंगूठी तैयार करने में धारण की इस बात पर सैद्धांतिक रौशनी पड़ती है कि आप किस तरह तब्लीग़ के काम में उन सभी रास्तों को धारण करते थे जो संबोधित को अपनी ओर आकर्षित करने और उसके दिल पर अच्छा प्रभाव बनाने के लिए आवश्यक थे। जाहिर है कि जहां तक शुद्ध तब्लीग़ का संबंध है किसी मुहर का होना या न होना एक बिल्कुल अलग बात है। और सच्ची बात मुहर के बिना भी उतना ही वज़न रखती है जितना कि मुहर के साथ, लेकिन जब आप को बताया गया था कि उस ज़माने के राजा मुहर के बिना किसी पत्र की ओर ध्यान नहीं देते और आप किसी ऐसे पहलू को अनदेखा नहीं करना चाहते थे जिस के कारण से मुखातिब के दिल में किसी पक्ष से ध्यान ने देने की स्थिति पैदा हो इसलिए आप ने इस मामूली से प्रस्ताव को भी बड़े आयोजन के साथ किया ताकि आप की तब्लीग़ में कोई ऐसी कमी न रह जाए जो तब्लीग़ के प्रभाव को किसी आयाम से कमज़ोर करने वाली हो और यही इस कुरआन की आयत की व्यावहारिक व्याख्या है: جَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ रसूल धर्म की तबलीग़ के मामले में हमेशा उस रास्ता को धारण जो संबोधित के दिलो-दिमाग़ पर प्रभाव पैदा करने के मामले में सबसे अच्छी हो। "

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन, लेखक हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए, पृष्ठ 798)

पत्रों द्वारा तब्लीग़ का अभियान

" जो तब्लीग़ी पत्र इस अवसर पर रवाना किए गए वे अरब चारों तरफ के शासकों के नाम थे। अर्थात उत्तर में रोम के प्रसिद्ध साम्राज्य के सम्राट कैसर के नाम और पूर्वोत्तर फारस के प्रसिद्ध साम्राज्य के सम्राट किसरा के नाम और अरब के पश्चिमोत्तर में मिस्र के राजा मकोकस नाम और पूर्व में यमामह के रईस होज़ह बिन अली के नाम। और पश्चिम में हब्शा राजा नजाशी नाम जो अरब की तुलना में अफ्रीका महाद्वीप में एक ईसाई सरकार थी और उत्तर में अरब सीमाओं के साथ जुड़े ग़ुस्सान राज्य के हाकिम ने नाम जो कैसर के अधीन था। इसी तरह आप ने एक पत्र अरब के दक्षिण में यमन के रईस की तरफ भिजवाया था और एक पत्र अरब के पूर्व में बहरीन के शासक की तरफ भी लिखा था आदि। इस तरह मानो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अरब के चारों तरफ इस्लाम का संदेश पहुंचा कर तब्लीग़ का कर्तव्य अदा किया, लेकिन यह नहीं समझना चाहिए कि यह सारे पत्र सुलह हुदैबिया के बाद ही एक ही समय में रवाना किए गए थे क्योंकि संभव है कि कुछ तो एक उसी समय रवाना किए गए हों और कुछ एक दूसरे से कुछ अंतराल पर भिजवाए गए हों लेकिन फिर भी यह बात सुनिश्चित है कि उनका क्रम सुलह हुदैबिया के बाद शुरू हुआ। और शायद पहला पत्र कैसर रोम अर्थात हरक़ल के नाम लिखा गया था।" (सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन, लेखक हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए, पृष्ठ 798)

अरब के कबीलों को इस्लाम की दावत

" हज के दिनों में रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अरब के कबीलों के पास जाते उन्हें अल्लाह तआला की दावत देते और कहते कि भेजा गया नबी हूँ आप मेरी पुष्टि करो और मदद करो और फिर तुम्हें ख़ुद पता चल जाएगा कि अल्लाह तआला ने मुझे क्यों भेजा कहा है, इस सिलसिले में उबैदुल्लाह बिन अब्बास से मरवी है कि मैंने राबिया बिन इबाद को अपने पिता से यह घटना बताते हुए सुना। राबिया ने कहा मैं नौजवान था अपने पिता के साथ मिना में मौजूद था रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अरब के कबीलों का ख़ेमों में आकर खड़े होते और कहते हे अमुक के पुत्र में अल्लाह तआला का रसूल हूँ तुम्हारी ओर आया हूँ तुम्हें आज्ञा देता हूं कि तुम केवल अल्लाह तआला की इबादत करो उसके साथ किसी को साझी मत करो इसके अलावा जिन देवताओं की तुम इबादत करते हो उनसे बिल्कुल मुक्ति धारण कर लो। मुझ पर ईमान लाओ, मेरी पुष्टि करो मेरा समर्थन करो तो अल्लाह तआला इस संदेश को जो उसने मुझे देकर भेजा है तुम्हें बताऊंगा, आप के पीछे एक और व्यक्ति जिसने एक अदन का लिबास पहन रखा था जब सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपना भाषण और दावत समाप्त कर लेते तो तुरंत यह व्यक्ति आप के विरोध में कहता हे अमुक के पुत्र यह व्यक्ति तुम को इस बात के लिए दावत देता है कि तुम लात और उज्ज़ा को छोड़ दो और मानव मालिक बन अकीश से जो तुम्हारे सहयोगी हैं मुक्ति करके इस की दावत को जो सरा सर बिदअत और ज़लालत है स्वीकार करो। तुम कभी उसकी बात न मानो और न उसे सुनो, मैंने अपने पिता से पूछा कि यह कौन है जो उस व्यक्ति के साथ इसका खंडन करता फिर रहा है उन्होंने कहा कि यह इसी का चाचा अब्दुल उज़्ज़ा अबूलहब बिन अब्दुल मुत्तलिब है। "

(तारीख़ तिबरी, जिल्द द्वितीय भाग-, अनुवादक, पृष्ठ 88, मुद्रित नफीस अकादमी कराची)

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस्लाम की तब्लीग़ के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: देखो कि इस मर्द की कैसी उच्च शान है जिसने एक छोटे से समय में हज़ारों मनुष्यों का सुधार किया और फसादों से उन्हें सुधार की तरफ स्थानांतरित किया। यहां तक कि उनके अविश्वास चकनाचूर हो गए और ईमानदारी और सच्चाई के सभी घटक सामूहिक रूप से उनके अस्तित्व में जमा हो गए और उनके दिलों में परहेज़गारी के प्रकाश चमक उठे और उनके माथे के नक्शे में मौला का इश्क एक रहस्य के रूप में चमकदार रूप दिखाई देने लगा और उनकी हिम्मतें धार्मिक सेवाओं के लिए उच्च से उच्चतर हो गईं और वह इस्लाम की दावत के लिए पूर्वी और पश्चमी देशों तक पहुंचे और मिल्लत मुहम्मदिया के प्रकाशन के लिए दक्षिण और उत्तर के देशो की तरफ उन्होंने सफर ... और उन्होंने अपनी प्रयासों और कोशिशों में कोई प्रयास इस्लाम के लिए बाकी न रखा। यहाँ तक कि धर्म को फारस और चीन और रोम और शाम तक पहुंचा दिया। और जहां जहां कुफ्र ने अपना हाथ फैला रखा था और शिर्क ने अपनी तलवार खींच रखी थी वहीं पहुंचे। उन्होंने मौत के सामने मुंह न फेरा और एक बालिश्त भी पीछे न हटे हालांकि आरों से टुकड़े टुकड़े किए गए।

(नजमुल हुदा, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 14, पृष्ठ 41)

दावत इलल्लाह के कुछ सुनहरे नियम

(1) **दावत इलल्लाह में मान सम्मान का ध्यान रखना चाहिए:**

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं: वास्तव में मोमिन को भी धर्म की तब्लीग़ में पदों का ध्यान रखना चाहिए। जहां नरमी का मौका हो वहाँ सख्ती और कटोक वचन न करे और जहां सिवाय सख्ती करने के काम होता नज़र न आए वहाँ कोमल बनना भी गुनाह है। गप हिफज़ मरातब न कुनी ज़नदीकी (अगर तू मकाम तथा मर्तबा का ध्यान न रखेगा तो तू कुफ्र करने वाला होगा।)

देखो फिरऔन जाहिर में कैसा कठोर काफिर व्यक्ति था लेकिन अल्लाह तआला से हज़रत मूसा को यही हिदायत दी कि فَقُوْلَا لَهٗ قَوْلًا لَّيِّنًا (ताहा: 45) रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए भी कुरआन शरीफ में इसी प्रकार के आदेश है وَاِنْ جَنَحُوْا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا (अलअनफाल: 62) मामिनोम और मुसलमानों के लिए नरमी और करूणा का आदेश है। रसूल सल्लल्लाहो अलैहि

वसल्लम और सहाबा रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन की भी ऐसी ही स्थिति वर्णन की गई है जहां फरमाया है कि مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ؕ وَ الَّذِيْنَ مَعَهٗۤ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ (अल्फतह: 30) अत: एक दूसरे स्थान पर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को संबोधित करके फरमाता है يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَ الْمُنٰفِقِيْنَ وَ اغْلُظْ عَلَيْهِمْ (अत्तौबह: 73) अत: इन आयतों से साफ पता चलता है कि ख़ुद ख़ुदा तआला ने भी पदों का लिहाज़ रखा है। मोमिनों और ईमानदारों के लिए कैसी नरमी का आदेश दिया है।

(मल्फूज़ात, जिल्द 5, पृष्ठ 526, संस्करण 2003 कादियान)

(2) **आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बेपनाह दृढ़ता:**

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दावत इलल्लाह में अपार दृढ़ता का उच्च नमूना दिखाया जो सभी नबियों से शान में बढ़कर था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं: रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ओर देखो। आप को मक्की जीवन में कितने दु:ख उठाने पड़े। ताइफ़ में जब आप गए तो इस कदर अपने पत्थर मारे कि ख़ून जारी हो गया। तब आपने फ़रमाया कि कैसा समय है। मैं बातें करता हूँ और लोग मुंह फेर लेते हैं और फिर फरमाया कि हे मेरे रब मैं इस दु:ख पर धैर्य करूंगा जब तक कि तू राज़ी हो जाए।"

(अलहकम, 10 अक्टूबर 1902, पृष्ठ 14)

(3) **आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तब्लीग़**

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं "अत: याद रखें कि प्रत्येक नबी को जब तक वह्यी न हो वह कुछ नहीं कह सकता क्योंकि प्रत्येक चीज़ का मूल तथ्य तो अल्लाह तआला की वह्यी से ही खुलती है। यही कारण था कि जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद हुआ مَا كُنْتَ تَدْرِىْ مَا الْكِتَابُ وَلَا الْاِيْمَانُ अर्थात तू नहीं जानता था कि किताब क्या है और विश्वास क्या है लेकिन जब अल्लाह तआला की वह्यी आप पर हुई तो وَ اُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ (यूनुस: 105) आप को कहना पड़ा। इसी तरह आप के वह्यी के जमाना से पूर्व मक्का में बुत परस्ती और शिर्क, दुराचार और अनाचार होता था लेकिन क्या कोई बता सकता है कि अल्लाह तआला की वह्यी आने से पहले भी पहले भी आप ने मूर्तियों के खिलाफ उपदेश और तब्लीग़ की थी लेकिन जब فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ (अलहिजर: 95) का आदेश हुआ तो एक सैकंड की भी देर नहीं की और हज़ारों कठिनाइयों और दु:ख की भी परवाह नहीं की। बात यही है कि जब किसी बात के बारे में ख़ुदा तआला का बयान आ जाता है तो मामूर को उसके पहुंचाने में किसी की परवाह नहीं करते और उसका छिपाना इसी तरह शिर्क समझते हैं जिस तरह ख़ुदा की वह्यी से सूचना पाने के बिना किसी बात के प्रकाशन को शिर्क समझते हैं अगर वह इस बात को जिस की सोचना अल्लाह तआला की वह्यी के माध्यम से नहीं मिली वर्णन करता है तो मानो वह यह समझता है कि उसे वह सूझता है जो ख़ुदा तआला भी नहीं सूझता और इस गुस्ताख़ी से वह मुशरिक हो जाता है अगर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वे सभी बातें जो कुरआन शरीफ में दर्ज हैं कुरआन शरीफ के अवतरण से पहले ही बयान कर देते तो कुरआन शरीफ की क्या ज़रूरत रह जाती। अत: जो कुछ हम पर ख़ुदा तआला ने खोला और जब खोला हम ने वर्णन कर दिया।"

(मल्फूज़ात, जिल्द 3, पृष्ठ 392, संस्करण 2003 ई कादियान)

☆ ☆ ☆

☆ ☆

सलाम

बहज़ूर सय्यदुल अनाम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

हज़रत डॉक्टर मीर मुहम्मद इस्माइल साहिब रज़ि

बदर गाहे ज़ी शाने ख़ैरुल अनाम
शफीउल वरा मरजअ ख़ासो आम
बसद इजज़ो मिन्नत बसद इहतराम
यह करता है अर्ज़ आप का इक ग़ुलाम
कि ऐ शाहे कौनीन आली मकाम
अलैकस्सलातो अलैकस्सलाम

हसीनान आलम हुए शरमगीं
जो देखा वह हुस्न और वह नूर जबीं
फिर उस पर वह अख़लाके अकमल तरीं
कि दुश्मन भी कहने लगे आफरीं
ज़हे ख़ुलके कामिल ज़हे हुसने ताम
अलैकस्सलातो अलैकस्सलाम

ख़लाइक़ दिल थे यकीं से तही
बुतों ने थी हक की जगह घेर ली
ज़लालत थी दुनिया पे वह छा रही
कि तौहीद ढूंढे से मिलती न थी
हुआ आप के दम से इसका क़याम
अलैकस्सलातो अलैकस्सलाम

मुहब्बत से घायल किया आप ने
दलायल से कायल किया आप ने
जहालत को ज़ायल किया आप ने
शरीयत को कामिल किया आप ने
बयां कर दिए सब हलाल व हराम
अलैकस्सलातो अलैकस्सलाम

नबुव्वत के थे जिस कदर भी कमाल
वह सब आप में जमा थे ला मुहाल
सिफाते जमाल और सिफाते जलाल
हर इक रंग है बस अदीमुल मिसाल
लिया ज़ुल्म का अफ़ू से इंतकाम
अलैकस्सलातो अलैकस्सलाम

मुकद्दस हयात और मुतह्हर मज़ाक
इताअत में सकता इबादत में ताक
सवारे जहां गीर यकराँ बुराक
कि बगुज़शत अज़ कैसर नीली रवाक
मुहम्मद ही नाम और मुहम्मद ही काम
अलैकस्सलातो अलैकस्सलाम

अलमदारे उश्शाके ज़ाते यगाँ
सिपहदारे अफवाजे कुद्दुसिया
मआरिफ़ का इक कुलज़ुम बेकरां
इफ़ाज़ात में ज़िन्दा ए जावेदां
पिला साकिया आबे कौसर का जाम
अलैकस्सलातो अलैकस्सलाम

☆ ☆ ☆

भेज दरूद उस मुहसिन पर तू दिन में सौ सौ बार
पाक मुहम्मद मुस्तफ़ा नबियों के सरदार

(क़ुरैशी अब्दुल हकीम, बैंगलूर)

धरती तथा आकाश के मालिक ने हज़रत मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मानव जाति के कल्याण के लिए रहमतन लिल आलमेन (सारे संसार के लिए रहमत) बनाकर भेजा गया। मानो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुबारक अस्तित्व में एहसान ही एहसान रखा गया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सबसे बड़ा एहसान है कि आपने एक ऐसी आदर्श शरीयत को दुनिया के सामने पेश किया जो न केवल सार्वभौमिक नियमावली है बल्कि प्रकृति शास्त्र भी है। जो शरीयत आप ने मानव जाति के लिए प्रस्तुत की उसके एक एक शब्द और एक एक अक्षर पर अपने दिल व जान से पालन करने वाले थे। आप ने इस शरीयत (व्यवस्था) को अपने अस्तित्व में उतार लिया था। एक अवसर पर एक सहाबी ने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहो अन्हा से पूछा कि आंहज़रत का चरित्र कैसा था? हज़रत आयशा रज़ियल्लाहो अन्हा ने जवाब में फरमाया "कान ख़ुलकुहो कुरआन" कि सारा कुरआन आप के आचरण का ही नक्शा प्रस्तुत करता है।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक ऐसे अंधेरे युग में भेज गए जहां हर तरफ शिर्क तथा गुमराही और प्राणी पूजा ने रबूबियत और अबूदियत के रिश्ते को मिटाकर रख दिया था। ऐसे अंधेरे समय में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने शुद्ध तौहीद की स्थापना को अपने जीवन का उद्देश्य बयाना। इस महान उद्देश्य में सफलता के लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लगातार जानी व माल कुरबानी करते हुए अल्लाह तआला के आसताना पर बड़े दर्द से दुआएं करने लगे जिसे देख कर रहमान ख़ुदा ने फरमाया:

لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ اَلَّا يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْن

अर्थात "' हे मुहम्मद किया तो अपनी जान को इस शोक में हलाक करेगा कि ये लोग ईमान नहीं लाते।"

नबियों की तारीख में किसी नबी के लिए ख़ुदा तआला ने ऐसे शब्द इस्तेमाल नहीं किए और ऐसी चिंता व्यक्त नहीं की।

सय्यदना व मौलाना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस बारे में फरमाते हैं:

" मैं हमेशा आश्चर्य की निगाह से देखता हूं कि यह अरबी नबी जिसका नाम मुहम्मद है (हज़ार हज़ार दरूद और सलाम उस पर) यह किस उच्च स्तर का नबी है। इसके उच्च स्तर की सीमा का ज्ञान नहीं हो सकता और उसकी प्रभावशीलता का अनुमान करना मनुष्य का काम नहीं। अफसोस कि जैसा हक पहचानने का है उसके स्तर को पहचाना नहीं किया गया। वह तौहीद (एकेश्वरवाद) जो दुनिया से खो चुकी थी वही एक पहलवान है जो फिर से उसे दुनिया में लाया। उसने ख़ुदा से बहुत अत्यधिक सीमा तक मुहब्बत की और अत्यधिक सीमा तक मानव जाति की सहानुभूति में इस की जान नर्म हुई इसलिए ख़ुदा ने जो उसके दिल के रहस्यों का परिचित था उसे सभी नबियों और सभी सर्वोच्च और आख़रीन पर उत्कृष्टता दी और उसकी मुरादें उसके जीवन में उसे दें। वही है जो स्रोत है प्रत्येक फ़ैज़ है और वह व्यक्ति जो बिना उस की स्वीकारोक्ति के फैज़ पाने, किसी पुण्य के पाने का दावा करता है। वह व्यक्ति नहीं है बल्कि शैतान की ज़ुर्रियत (सन्तान) है क्योंकि प्रत्येक पुण्य की कुंजी उसे दी गई है और प्रत्येक अनुभूति का ख़जाना उसे प्रदान किया गया है। जो उसके द्वारा नहीं पाता वह चिरस्थायी वंचित है। हम क्या चीज़ हैं और हमारी वास्तविकता क्या है। हम नेअमत का इन्कार करने वाले होंगे अगर इस बात को स्वीकार न करें कि वास्तविक तौहीद हम ने इसी नबी के माध्यम से पाई और जीवित ख़ुदा की पहचान हमें इसी पूर्ण नबी के माध्यम से और उसके प्रकाश से मिली है और ख़ुदा से बातचीत और वार्तालाप का श्रेय भी जिस से हम उसका चेहरा देखते हैं उसी नबी द्वारा हमें मयस्सर आया है इस हिदायत के सूर्य की किरणें धूप की तरह हम पर पड़ती हैं और उसी समय तक हम मुनव्वर (प्रकाशित) रह सकते हैं जब तक कि हम उस के मुकाबला में खड़े हैं।

(हकीकतुल वह्यी पृष्ठ 115 से 118 रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 22 पृष्ठ 118)

सर विलियम मयूर (Sir William Muir) यह एक प्राच्य विद्वान है और काफी कुछ खिलाफ भी लिखता है। यह भी लिखता है कि "एक महत्त्वपूर्ण खूबी वह नैतिकता और वह विचार था जो आप ने अपने मामूली से मामूली अनुयायी का रखा है। लज्जा, दयालु, धैर्य, उदारता, विनम्रता आप के आचरण के स्पष्ट पहलू थे और इन के कारण अपने परिवेश में हर व्यक्ति को अपना आशकि बना लेते। इनकार करना आप को नापसंद था। अगर किसी सवाल करने वाले की फरियाद पूरी न कर पाते तो चुप रहने को प्राथमिकता देते हैं। कभी यह नहीं सुना कि आप ने किसी की दावत को अस्वीकार किया हो चाहे वह कितनी ही मामूली क्यों न हो। और कभी नहीं हुआ कि आप ने किसी के पेश किए हुए उपहार को अस्वीकार कर दिया हो चाहे वह कितना ही छोटा क्यों न हो। आप की एक निराली ख़ूबी यह थी कि आप की महफ़िल में मौजूद हर व्यक्ति को यह विचार होता है कि वही सबसे महत्त्वपूर्ण अतिथि है। अगर आप किसी को अपनी सफलता पर ख़ुश पाते तो गर्मजोशी से हाथ मिलाते और गले लगाते और वंचितों और संकट में घिरे लोगों से बड़ी नरमी से सहानुभूति व्यक्त करते हैं। बच्चों से बहुत मुहब्बत से पेश आते और रास्ता में खेलते बच्चों को सलाम करने में कोई शर्म महसूस नहीं करते। वह अकाल के दिनों में भी दूसरों को अपने खाने में शरीक करते और प्रत्येक आसानी के लिए हमेशा कोशिश करते रहते। एक नरम और दयालु स्वभाव आप के सभी गुणों में स्पष्ट नज़र आती थी। मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) एक वफादार दोस्त था। उसने अबू बकर से भाई से बढ़कर प्रेम। अली से पितृसत्तात्मक करूणा की। ज़ैद, जो स्वतंत्र किए गए गुलाम था, इस शफीक नबी से इतना लगाव था कि उसने अपने पिता के साथ जाने के स्थान पर मक्का में रहने को प्राथमिकता दी। अपने पर्यवेक्षक का दामन पकड़ते हुए उसने कहा, "मैं आपको नहीं छोड़ूँगा, आप ही मेरे माता और पिता हैं। दोस्ती का यह संबंध ज़ैद की मृत्यु तक रहा और फिर ज़ैद के बेटे ओसामा भी उसके पिता की वजह से आप ने हमेशा बहुत दया का व्यवहार किया। उस्मान और उम्र से भी

आप एक विशेष संबंध रखते थे। आप हुदैबिया के स्थान पर बैअत रिजवान के समय अपने कैदी दामाद की रक्षा के लिए जान तक देने का जो वादा किया वह उसी सच्ची दोस्ती का एक उदाहरण है। अन्य कई अवसर हैं कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की अडिग प्यार के रूप में पेश किए जा सकते हैं। किसी भी अवसर पर यह प्यार अनुचित न था, बल्कि हर घटना उसी मुहब्बत की गर्मजोशी का आइना है।"

फिर लिखता है कि "अपनी शक्ति की ऊंचाई पर भी आप न्यायाधीश और नरम रहे। आप अपने उन शत्रुओं से नर्मी में कुछ भी कमी न करते जो आप के दावा को सहर्ष स्वीकार कर लेते। मक्का वालों का लंबा और विद्रोही कष्ट इस बात पर समाप्त होना चाहिए था कि मक्का का विजेता अपने क्रोध में आग और खून की होली खेले। लेकिन मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने कुछ अपराधियों के अलावा आम माफी की घोषणा कर दी और पिछली सभी कड़वी यादों को भुला दिया।

उन के सभी मज़ाक, गुस्ताख़ियों और उत्पीड़न के बावजूद आप अपने सख्त विरोधियों से भी दया का व्यवहार किया। मदीना में अब्दुल्लाह और अन्य भटके हुए साथी (अर्थात जो कपटी थे) जो कि सालों से आप की परियोजनाओं में रोकें डालते और आप की संप्रभुता में प्रतिरोधी होते रहे, उनसे क्षमा का व्यवहार करना भी एक उज्ज्वल उदाहरण है। इसी तरह वह नर्मी जो आप ने उन कबीलों से बरती जो आपके सामने सिर झुकाने वाले थे। और पहले जो जीत में भी बहुत विरोधी रहे थे, उनसे भी नरमी व्यवहार फरमाया। "

(The Life of Mahomet by William Muir, Vol। IV, London: Smith, Elder and Co., 65 Cornhill, 1861, pp.305-307)

(बहवाला ख़ुत्बा जुम्अ: सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला दिनांक 5 अक्तूबर 2012 ई)

मानवता की स्थापना और शांति के लिए आप ने अपनी ख़ुदा तआला की दी गई कुव्वते कुदसिया के द्वारा सारी दुनिया को एकता तथा इत्तेफाक, अच्छी नैतिकता और प्रेम तथा मुहब्बत का ऐसा शिक्षण दिया जो क़यामत तक हर व्यक्ति मौत को आप का अहसान मानने वाला रखेगा।

आरम्भ से ही महिला पीड़ित और असहाय रही है। कुरबान जाएं इस सब से बड़े अपकार करने वाले पर कि जिसने महिला को न केवल उसके अधिकार प्रदान किए बल्कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने औलाद की जन्नत की कुंजी माँ के क़दमों तले रख दी। कुरआन के अवतरण से पहले किसी पुस्तक में महिलाओं के अधिकारों के लिए इस कदर विवरण के साथ उल्लेख नहीं किया गया कि जिस तरह कुरआन में वर्णन किया गया। हम विश्वास से कह सकते हैं कि महिलाओं को जो सम्मान, स्थान कुरआन ने दिया है वह किसी किताब ने नहीं दिया। ये कुरआनी आदेशों का एहसान है कि आज दुनिया की हर औरत अपने बुज़ुर्गों की विरासत की हकदार बन गई।

आपकी बेसत से पहले भी और आपके दूर रिसालत में भी ग़रीब, लाचार और बेबस इंसानों को ग़ुलाम कहकर पशु की तरह खरीदा और बेचा जाता था। इन पीड़ितों की भावनाऐं और अहसासों की कोई कदर नहीं थी बल्कि इन गुलामों पर हर तरह की बर्बरता और अत्याचार एक साधारण सी बात थी। ऐसी अन्यायपूर्ण युग में हमारे नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मानवता के वह अद्वितीय मोहसिन हैं जिन्होंने कुरआन की रोशनी में इस अन्याय और अहंकार के खिलाफ एक सफल आंदोलन शुरू किया। आप ने फरमाया कि व्यक्ति किसी को ग़ुलाम को स्वतंत्र करता है तो अल्लाह तआला उस ग़ुलाम के हर अंग के बदले में स्वतंत्र कराने वाले के शरीर के हर हिस्से पर जहन्नम की आग हराम कर देगा। (मुस्लिम)

इस तरह आपने सदियों पहनाई गई ग़ुलामी की जंजीर को हमेशा के लिए तोड़कर रख दिया। काश आज बड़ी-बड़ी कंपनियों के मालिक और पूँजीपति हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस आदेश पर ईमान लाते!

हमारे रहमतन लिल आलेमीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का एक दिल नशीन एहसान यह भी है कि भाईचारा तथा शांति की स्थापना के लिए आप ने सारी मानवता को दिल से यह संदेश दिया कि अपने पड़ोसियों के साथ हमेशा ईमानदारी और हमदर्दी का रिश्ता मज़बूत करें। एक अवसर पर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया पड़ोसी के अधिकार पर इतना बल दिया है कि कई बार मुझे यह ख्याल आता है कि शायद पड़ोसी वारिस ही बना दिया जाएगा।

जब मक्का विजय हुआ तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने वह दुश्मन लाए गए जो आपको और आपके के सहाबा को दर्दनाक यातना दिया करते थे। युद्ध के नियमों की मांग तो यह था कि उन अत्याचारियों को ग़लत अक्षर की तरह मिटा दिया जाता। लेकिन हमारे दयालु नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें दुश्मनों के पक्ष में "लातसरीब अलैकुम अल्यौम "(अर्थात आज तुम पर किसी प्रकार का कोई बदला नहीं है।) का ऐतिहासिक निर्णय जारी किया।

ख़ुदा तआला की कृपा से आज इंसान तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में बड़ी तरक्की कर रहा। नए-नए आविष्कार से सारी दुनिया एक Global Village अर्थात एक सार्वभौमिक शहर बन गया है, यह एक ऐसी सच्चाई है जिस से कभी इनकार नहीं किया जा सकता। इस कड़वी लेकिन सच्ची वास्तविकता से भी इनकार नहीं किया जा सकता कि आज का मनुष्य आध्यात्मिक, नैतिक और सहानुभूति के दृष्टि रसातल में गिरता चला जा रहा है। दुनिया में कोई ऐसा देश, कोई ऐसा समाज नहीं जहां नस्ली व मज़हबी फसाद न होते हों। सवाल यह उठता है कि आखिर इस घृणा और दुश्मनी का क्या कारण है? अनुसंधान की दृष्टि से अगर देखें तो यह तथ्य खुलकर सामने आता है कि आज एक धर्म का मानने वाला दूसरे धर्मों के पेशवायान का सम्मान नहीं करता। दुनिया के इतिहास में संस्थापक इस्लाम हज़रत ख़ातमुन्नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वह अकेले रहबर कामल हैं जिन्होंने कुरआन की रोशनी में सारी दुनिया को यह शिक्षा दी कि ख़ुदा तआला के जितने भी अंबिया भेजा गए वे सब अल्लाह तआला के नेक बन्दे थे। ख़ुदा तआला उनसे बातें करता था। अत: हर व्यक्ति के लिए यह अनिवार्य है कि वे अल्लाह के रसूलों का न केवल सम्मान करे बल्कि ईमानदारी से उन पर विश्वास लाए। यही एक एकमात्र स्रोत है जिस से ख़ुदा तआला का प्रेम प्राप्त हो सकता है। अगर आज हर इंसान हमारे इंसाने कामिल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस शिक्षा को स्वीकार करे तो यह सारी दुनिया शांति का घर बन सकती है। इंशा अल्लाह।

सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में फरमाते हैं:

"अब आकाश के नीचे केवल एक ही नबी और एक ही किताब है अर्थात हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो उच्च तथा अफज़ल सब नबियों से और उत्तम तथा परिपूर्ण सब रसूलों से और

ख़ात्मुल अंबिया और ख़ैरुन्नास हैं जिनके पालन से ख़ुदा तआला मिलता है।"

(बराहीने अहमदिया, पृष्ठ 535, हाशिया का हाशिया नंबर 3)

इसी प्रकार फरमाया, " वही रसूल जिसने बर्बर मनुष्यों को इंसान बनाया और इंसान से चरित्र वाला व्यक्ति अर्थात सच्चे और वास्तविक चरित्र के केंद्र पर स्थापित किया और फिर चरित्र वाला इंसान होने से ख़ुदा वाला होने के इलाही रंग से रंगीन किया वही रसूल या वही सच्चाई का सूर्य जिसके क़दमों से हज़ारों मुर्दे शिर्क और नास्तिकता और दुराचार और अनाचार से जी उठे। "

(तब्लीग़े रिसालत, जिल्द 10 पृष्ठ 9)

हमारे सय्यदुल मुरसलीन हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज्जतुल विदा के अवसर पर मिना के मैदान में जो जीवन देने वाला खुत्बा इरशाद फ़रमाया उसका एक एक शब्द उम्मते मुहम्मदिया के अस्तित्व और इस्लाम के प्रभुत्व पर आधारित है। आज सारी दुनिया में जमाअत अहमदिया वह अकेली मुस्लिम जमाअत है जो सच्ची ख़िलाफत के अनुकरण में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के परोपकार को फैला रही है।

हमारे आक़ा हज़रत मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुबारक परोपकार से प्रभावित होकर मैसूर यूनिवर्सिटी इंडिया के प्रोफेसर। एस रामा कृष्ण राव अपनी किताब Muhammad The Prophet of Islam में लिखते हैं कि:

There is Muhammad the buisnessman

(अर्थात हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक आदर्श व्यापारी)

Muhammad the statesman

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक महान चिंतनशील)

Muhammad the orator

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक महान तकरीर करने वाले)

Muhammad the reformer

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक महान सुधारक)

Muhammad the refuge of orphans

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अनाथों का वाली)

Muhammad the protector of slaves

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम गलामों के अधिकारों का संरक्षक)

Muhammad the emancipator of women

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नारी के अधिकारों का संरक्षक)

Muhammad the judge

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक महान न्यायाधीश)

Muhammad the saint

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नबियों के सरदार)

अल्लाह तआला से दुआ है कि वह हमें हज़रत मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षाओं पर ईमानदारी से अमल करने और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उपकारों को सारी दुनिया में फैलाने की तौफ़ीक़ प्रदान करे। हमारे व्यावहार इस बात की गवाही हे रहे हों कि हम आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदेशों को अपने जीवन में उतारने वाले हों। अल्लाह करे कि ऐसा ही हो आमीन।

☆ ☆ ☆

☆ ☆

ख़ातमन्नबिय्यीन की वास्तविक व्याख्या पृष्ठ 1 का शेष

सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ातमुल अनबिया हैं उसी जगह यह संकेत भी फरमा दिया है कि आं जनाब अपनी आध्यात्मिकता की दृष्टि से उन नेकों के पक्ष में पिता के हुकुम में हैं जिनके द्वारा नफ़सों को पूर्णता की जाता है और अल्लाह तआला की वह्यी और वार्तालाप का श्रेय उन्हें प्रदान किया जाता है। जैसा कि वह शान वाला ख़ुदा कुरआन शरीफ में फरमाता है مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَ لٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَ خَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا अर्थात आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं है लेकिन वह रसूलुल्लाह और ख़ातमल अंबिया हैं। अब स्पष्ट है कि " *लाकिन*" का शब्द अरबी भाषा में *इस्तिदराक* के लिए आता है अर्थात पिछली बात को दूर करने के लिए। अत: इस आयत के पहले भाग में जो बात समाप्त कर दी गई थी अर्थात जिस का आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हस्ती से इंकार किया गया था वह शारीरिक रूप से किसी पुरुष का पिता होना था। अत: लाकिन शब्द के साथ ऐसी बात का इस तरह सुधार किया गया कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातुमल अंबिया ठहराया गया जिसमें यह अर्थ है कि आप के बाद सीधे नबव्वत के फैज़ काट दिए गए और अब नबुव्वत का चरम केवल उसी व्यक्ति को मिलेगा जो अपने कार्यों पर नबी के अनुसरण की मुहर रखता होगा और इस तरह से वह आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का बेटा और आप का वारिस होगा। अत: इस आयत में एक रूप से आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पिता होने को नकारा गया है और दूसरे रूप से पिता होने का यकीन भी किया गया ताकि वह आरोप जिसका ज़िक्र आयत اِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْاَبْتَرُ में है दूर किया जाए।

(रिव्यू यू बर मुबाहिसा बटालवी और चकड़ालवी, रूहानी खज़ायन, जिल्द 19, पृष्ठ 213)

आं हज़रत की छाया में तरबियत पाना साधारण व्यक्ति को मसीह बना सकता है।

हज़रत मसीह मौऊद और महदी मअहूद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं: हे मूर्खो !! और आंखों के अंधो! !! हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हमारे सय्यद व मौला (उस पर हज़ारों सलाम) अपनी बरकतों की दृष्टि से सभी नबियों पर प्राथमिकता ले गए हैं। क्योंकि पिछले नबियों की बरकतें एक सीमा तक आकर समाप्त हो गई और अब वे जातियां और वह धर्म मुर्दे हैं। कोई उनमें जीवन नहीं। लेकिन आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का रूहानी फैज़ क़यामत तक जारी है। इसीलिए बावजूद आप के इस फैज़ के इस उम्मत के लिए ज़रूरी नहीं कि कोई मसीह बाहर से आए। बल्कि आप की छाया में तरबियत पाना एक साधारण व्यक्ति को मसीह बना सकता है जैसा कि उसने इस विनीत को बनाया।

(चश्मा मसीही, रूहानी खज़ायन, जिल्द 20, पृष्ठ 389)

अत: सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादियानी अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पालन और आप से कमाल प्रेम और मुहब्बत के परिणाम में इस ज़माने का इमाम और मसीह और महदी बनाकर भेजा है। उम्मते मोहम्मदिया के लिए अल्लाह तआला की तरफ से यह बहुत बड़ा पुरस्कार है इसे नज़र अंदाज करना बहुत बड़ी नाशुक्री और सीमा से बड़ी हुई अल्लाह तआला की कृतघ्नता और दुनिया व आखिरत में ज़िल्लत व रुसवाई है। हमारी दुआ है कि अल्लाह तआला हमारे मुसलमान भाइयों को तौफ़ीक़ प्रदान करे कि वह गंभीरता के साथ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकों को पढ़कर आप की प्रामाणिकता को ज्ञात करें और आप पर ईमान लाएं।

(मंसूर अहमद मस्त्ररूर) (अनुवादक शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

अमन के शहंशाह- हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

(नसीर अहमद आरिफ, मुरब्बी सिलसिला दफतर रिश्ता नाता कादियान)

अल्लाह तआला कई गुणात्मक नाम हैं। उनमें एक 'अस्सलाम" भी है। अत: अल्लाह तआला कुरआन में फरमाता है:

هُوَ اللّٰهُ الَّذِیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ (सूर: अलहशर: 24)

अनुवाद: वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई माबूद नहीं। वह बादशाह है, पवत्रि है, सलाम है, शांति देने वाला है, सुरक्षा करने वाला है, पूर्ण प्रभुत्व वाला है, टूटे काम करने वाला है (और) किबरियाई वाला है। पवित्र है अल्लाह उस से जो वे शिर्क करते हैं।

इसी तरह एक आयत में अल्लाह तआला आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में फरमाता है: وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ (सूर: अलअंबियाअ: 108) अनुवाद: और हम ने तुझे नहीं भेजा लेकिन दुनिया के लिए दया के रूप में।

उपरोक्त आयत में अल्लाह तआला अपनी विशेषताओं और अल्लाह तआला के गुण वाचक नामों में अस्सलाम और अलमोमिन का उल्लेख फरमाया है अर्थात अल्लाह तआला सुरक्षा देने वाला और शांति देने वाला है। अल्लाह तआला की इन दोनों विशेषताओं का उच्च प्रादुर्भाव शांति सम्राट, पूर्ण इंसान, सर्वर कौनैन हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हस्ती द्वारा प्रकट हो गया। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ही वास्तविक अब्दुस्सलाम और अब्दुल मोमिन थे जनि के द्वारा सारी दुनिया में शांति और सुरक्षा का फ़ैज़ जारी हुआ। आपने न केवल दुनिया को शांति का संदेश दिया बल्कि दुनिया को ऐसे अच्छोनियम सिखाए जिनके द्वारा दुनिया में चिरस्थायी और वास्तविक शांति स्थापित हो सकती है।

इसी तरह दूसरी आयत में अल्लाह तआला फरमाता है कि हम ने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को रहमतुन लिल आलमीन बनाकर भेजा अर्थात ख़ुदा तआला के विशेषण दया के आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पूर्ण अभिव्यक्ति थे, इसलिए आप ने सारे संसार को शांति व सलामती का संदेश दिया।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो फ़रमाते हैं:

"वास्तव में शांति उस समय मिल सकती है जब दुनिया में एक ऐसी उच्च हस्ती हो जो शांति की इच्छुक हो और जो दूसरों को शांति देना चाहती हो और ऐसे नियमों को लागू करने चाहती हो जो शांति देने वाले हों और वही व्यक्ति वास्तविक शांति देने वाला कहा जा सकता जो उस हस्ती की तरफ लोगों को बुलाए। यह शांति देने वाली हस्ती की ओर ध्यान आकर्षित वाली मुहम्मद की हस्ती है। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ही वह व्यक्ति हैं जिनके माध्यम से दुनिया को यह मालूम हुआ कि ख़ुदा तआला के नामों में से एक नाम शांति देने वाला भी है, इसलिए सूरत हश्र में अल्लाह तआला के जो नाम गिनाए गए हैं उनमें से एक नाम यह भी है अल्लाह तआला फरमाता है اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ हे मुहम्मद तू लोगों को ध्यान दिला उस ख़ुदा की तरफ जो राजा है, शुद्ध है और अस्सलाम अर्थात दुनिया को शांति देने वाला और सभी सलामितयों का स्रोत है। "

(आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और विश्व शांति, अनवारुल उलूम, जिल्द 15, पृष्ठ 194)

हमारे प्यारे आका प्राणियों के गर्व हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से ही सही अर्थों में शांति व सलामती के पैग़मबर और सम्राट थे। इसलिए यह खिताब आपको सदियों पहले यसयाह ने भी दिया था। अत: लिखा:

"हम को एक पुत्र दिया गया और साम्राज्य उसके कांधे पर होगा और वह इस नाम से कहलाता है: अजीब, सलाहकार, समर्थवान ख़ुदा, चरिस्थायी, सुरक्षा का राजकुमार। इस के साम्राज्य के इकबाल और सुरक्षा की कुछ सीमा नहीं होगी। वह दाऊद के सिंहासन पर उसके राज्य पर आज से लेकर अनन्त तक व्यवस्था करेगा और न्याय और धर्म से इस की स्थापना करेगा। फौज़ों वाले रब्ब की ग़ैरत यह करेगी।"

(यसयाह, अध्याय 9 आयत 6 से 7)

यसयाह नबी की यह भविष्यवाणी आपकी बरकतों वाली हस्ती में पूरी हुई। अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को साम्राज्य प्रदान किया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला ने अपार महिमा दी। दुनिया के सभी क़ौमों को आपने शांति का ऐसा सुन्दर संदेश दिया जिसकी वजह से उनमें अधिकतर में ऐसे शानदार नमूने पैदा हुए कि उनमें से ज्यादातर आपके सामने सिर झुकाने वाली हो गई थीं। आपने अपने सहाबा को जो प्राथमिक शिक्षा दी वह शांति और सुरक्षा ही थी। जैसा कि आप फरमाते हैं: اَلْمُسْلِمُ مَنْ سَلِمَ النَّاسُ مِنْ لِسَانِهٖ وَيَدِهٖ (अहमद बिन हंबल, जिल्द 2, पृष्ठ 224)

अर्थात एक वास्तविक मुसलमान की परिभाषा यह है कि इस की जीभ और हाथ और बात से अन्य सभी लोग सुरक्षित रहें। आपने एक असली मुसलमान की क्या सुंदर परिभाषा फ़रमा दी कि अगर इससे दूसरे लोग सुरक्षित हैं तभी वह मुसलमान कहलाने का हकदार है।

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दुनिया को धार्मिक स्वतंत्रता की शिक्षा देकर शांति व सलामती की मजबूत नींव रखी। अल्लाह तआला ने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फरमाया ला इकराहा फिद्दीन (अलबक़रा: 257) अर्थात धर्म के मामले में कोई बाध्यता नहीं है। आपने ख़ुदाई शिक्षा के परिणाम में सभी जातियों के लोगों को अपने प्रभाव से प्यार व मुहब्बत के साथ शांति की तरफ आकर्षित किया। धार्मिक नेताओं और पवित्र हस्तियों के सम्मान के बिना समाज में शांति नहीं हो सकती। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सभी धर्मों के संस्थापकों के सम्मान की शिक्षा दी। जब ईसाइयों का प्रतिनिधिमंडल नजरान से मदीना हाज़िर हुआ तो आपने उनकी मेहमानदारी की। मस्जिदे नबवी में उन्हें जगह दी बल्कि उन्हें अपने तरीके से मस्जिद में नमाज़ पढ़ने की भी अनुमति दे दी और जब आम मुसलमानों ने उन्हें इस काम से रोकना चाहा तो आपने मना फरमाया।

(सीरतुन्नबी, भाग द्वितीय, अल्लामा शिबली नोमानी, पृष्ठ 611)

एक यहूदी के साथ जब एक मुस्लिम का नबियों के महत्तव को लेकर विवाद हुआ और मुसलमान ने यहूदी को चोट लगाई और यहूदी आपकी सेवा में शिकायत लेकर हाज़िर हुआ तो आपने शांति प्रतिष्ठा की शिक्षा दी और बहुत उच्च आचरण का प्रदर्शन इन शब्दों में फरमाया: لَاتُخَيِّرُوْنِيْ مِنْ بَيْنِ الْاَنْبِيَآءِ (बुखारी, किताबुत्तफसीर) अर्थात मुझे दूसरे नबियों प्राथमिकता न दिया करो।

अरब देश प्रत्येक प्रकार के ज़ुल्म और अत्याचार से भरा पड़ा था, आं हज़रत ने अत्याचार और ज़ुल्म से भरे इस द्वीप को अदल व इंसाफ़ का घर बनाया। आपके सारे युद्ध प्रतिरक्षात्मक थे। आप ने तभी तलवार उठाई जब आप और आपके साथियों के ख़िलाफ तलवार उठाई गई।

इसके बावजूद आप अमन व सलामती का ही संदेश देते रहे। आपने शांति के लिए मदीना के मैत्रि, सुलह हुदैबिया के अतिरिक्त नजरान के प्रतिनिधिमंडल और ईसाई कबीला बनी सअलब के साथ शांति समझौते किए और उनके करार का उल्लंघन हमेशा विरोधियों से ही हुआ लेकिन आप हमेशा इन समझौतों पर कायम रहे।

नजरान के ईसाइयों के साथ जब अनुबंध हुआ तो आपने उन्हें यह गारंटी दी कि जज़िया के बदले में ईसाइयों के धार्मिक स्थानों और पूजा स्थलों की रक्षा की ज़िम्मेदारी मुसलमानों की होगी और ईसाइयों की धार्मिक स्वतंत्रता की गारंटी भी दी गई। (सुनन अबु,दाऊद)

आपने जब मक्का पर विजय प्राप्त किय तब आपने इस्लामी शरीयत के अनुसार शांति का आकर्षक और बेनज़ीर नमूना पेश किया। जिसकी मिसाल पेश नहीं की जा सकती। आपको इस समय उनसे बदला के पूरा हक प्राप्त था क्योंकि मक्का वालों ने हुदैबिया के सुलह पत्र को तोड़ा था, लेकिन आपने मक्का पर चढ़ाई की और खून की एक बूंद बहाए बिना इसे जीत लिया।

मदीना में हिजरत के बाद आप ने शांति के लिए बुनियादी कदम उठाए और मदीना में इस्लामी सरकार की नींव रखी। आप ने यहूद के साथ मदीना के मामले चलाने के लिए शांति का समझौता किया। इस अनुबंध द्वारा मदीना में शांति के लिए संयुक्त प्रयास को स्वीकार किया गया। धार्मिक स्वतंत्रता को स्वीकार किया गया और हमलावरों की रक्षा मिलकर करने का समझौता हुआ। यह शांति के लिए आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक शानदार उदाहरण थी जिसके परिणाम में मदीना शांति का घर बन गया।

हज्जतुल विदा के ऐतिहासिक अवसर यह आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो ख़ुत्बा मिना में फरमाया वह एक सार्वभौमिक शांति का संदेश था और आज भी वह विश्व शांति के गारंटी है। आपके इस भव्य ख़ुत्बा में से कुछ हिस्सा पेश है। आप ने फरमाया: " हे लोगो ! जो कुछ मैं तुम्हें कहता हूँ उसे ध्यान से सुनो और ख़ूब याद रखना। सभी मुसलमान आपस में भाई-भाई हैं, तुम सब बराबर हो, सभी लोग चाहे वे किसी जाति या कबीला से संबंध रखते हैं और किसी भी स्थिति के मालिक हों सब आपस में बराबर हैं। "

फिर फरमाया "जिस तरह से यह महीना यह धरती और यह दिन तुम्हारे लिए सम्मान जनक है बिल्कुल उसी तरह ख़ुदा ने तुम से प्रत्येक व्यक्ति की जान माल और सम्मान को सम्मानजनक करार दिया है किसी आदमी की जान या माल लेना या सम्मान पर हमला करना ऐसा ही अत्याचार और ऐसी ही अवहेलना है जैसा कि इस दिन या महीने और भूमि की पवित्रता को तोड़ना, जो कुछ हुकुम में आज तुम्हें देता हों यह केवल आज के दिन के लिए ही न समझो बल्कि वह हमेशा के लिए है उसे याद रखो और इस का पालन करते चले जाओ। यहां तक कि तुम इस संसार को छोड़कर वास्तविक निर्माता मिलने के लिए दूसरे संसार की तरफ़ कूच करो।"

(उद्धरति मासिक अल्फ़ुरकान, रबवा, जुलाई 1956, पृष्ठ 19 से 20)

पश्चिमी दुनिया और पाश्चात्य विद्या के पश्चिमी विद्वान और आम जनता में यही ग़लतफहमी पाई जाती है कि इस्लाम ग़ैर मुस्लिमों से अनुचित और नावाजब व्यवहार की शिक्षा देता है और उनके मूल अधिकारों से उन्हें वंचित करता है। इस्लाम दुश्मन ताकतें अपने इस बेबुनियाद और ग़लत प्रोपगण्डा के द्वारा विश्व समुदाय को बताना चाहती हैं कि समकालीन में विश्व शांति के लिए सबसे बड़ा खतरा इस्लाम और उसके मानने वाले मुसलमान हैं। यह विचार सरासर गलत है बल्कि कुरआन की शिक्षा और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श के बिल्कुल खिलाफ है। मुसलमानों पर आरोप लगाया जाता है कि वे इस्लाम के विरोधियों से उत्तम व्यवहार नहीं करते। अल्लाह तआला अपने नबी के माध्यम से उन्हें आदेश देता है कि उन लोगों से क्षमा का व्यवहार करो और सुरक्षा का संदेश दो। अल्लाह तआला फरमाता है: فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلٰمٌ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ (सूरे अज़्ज़ुख़रफ: 90) अर्थात उनसे क्षमा से काम लो और सुरक्षा संदेश दो शीघ्र ही उन्हें मालूम हो जाएगा।

इस्लाम पर यह आपत्ति भी सरासर गलत है कि वह ग़ैर मुस्लिमों से बदसलूकी का आदेश देता है। इस्लाम सरासर दया और करूणा थे। इस्लाम इस बात को हरगिज़ पसन्द नहीं करता कि दुश्मनों के साथ भी अन्याय और दुर्व्यवहार किया जाए। इस्लाम की शांतिप्रिय और क्षमा की यह अवस्था है कि वह व्यक्तिगत मामलों में मानव मनोविज्ञान के अनुसार कर यद्यपि मज़लूम को हक़ देता है कि वह चाहे तो बराबर का बदला ले लेकिन साथ अफ़ो और क्षमा करने को बेहतर करार देता है जो व्यक्ति माफ़ कर दे और सुलह करे तो उस का सवाब अल्लाह तआला के ज़िम्मे है। अत: इस्लाम शांति और मुहब्बत का धर्म है और क्रूरता और हिंसा एक पल के लिए भी उचित नहीं समझता। इसके निकट अत्याचार से मानव प्रकृति विकृत हो जाती है। समाज नष्ट हो जाता है और दुनिया में अशांति पैदा हो जाती है। इस्लाम के निकट सारी मानव जाति अल्लाह तआला का परिवार है और इस्लाम सब के साथ भलाई का आदेश देता है। इंसान तो इंसान इस्लाम तो जानवरों को भी सताने और पीड़ा देने का विरोध करता है। इस्लाम शिक्षा से दिन की रोशनी की तरह स्पष्ट है कि इस्लाम एक दया का धर्म है। इस्लाम में अत्याचार, आतंकवाद और आक्रामकता की कोई गुंजाइश नहीं।

कुरआन शांति प्यार प्रेम शिक्षाओं से भरा पड़ा है। जिसकी उत्तम अभिव्यक्ति करने वाले आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं। संकीर्ण लोग जो इस्लाम पर व्यर्थ आरोप लगाते हैं कि यह आतंक की शिक्षा देता है सरासर ग़लत और निराधार है। इस्लाम अपने विरोधियों का सम्मान अपने पड़ोसी से हुस्ने सुलूक और ग़ैर धर्मों के संस्थापकों से हुस्ने सुलूक के आदेश देता है। आज जो आतंकवादी संगठन निर्दोष लोगों को कत्ल कर रहे हैं उनका पालन सरासर ग़ैर इस्लामी है और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श से कोसों दूर है। तारीख़े इस्लाम में एक भी ऐसी घटना नहीं मिलती कि आपने मुसलमानों या गैर मुसलमानों को दु:ख देने और उन्हें मारने का आदेश दिया है। सिवाय कुछ सख्त अपराधियों के जो अपनी शरारतों के कारण इस सज़ा के हकदार थे। आपने हमेशा ही प्रेम मुहब्बत का व्यवहार किया। आपका दैनिक जीवन अफ़ो और क्षमा की अभूतपूर्व घटनाओं से भरा पड़ा है। मक्का फतेह के अवसर पर आप ने अत्यन्त सीमा तक क्रूर व्यवहार करने वालों से भी अफ़ो और दया का व्यवहार किया जिसका उदाहरण आज तक दुनिया लाने में असमर्थ है।

जमाना के इमाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने आका आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शान में फरमाते हैं:

"मैं हमेशा आश्चर्य की निगाह से देखता हूं कि यह अरबी नबी जिसका नाम मुहम्मद (हज़ार हज़ार दरूद और सलाम उस पर) यह किस उच्च स्तर का नबी है। उस के उच्च स्थान का चरम का ज्ञान नहीं हो सकता और उसकी प्रभावशीलता का अनुमान करना मनुष्य का काम नहीं। अफसोस कि जैसा हक पहचानने का है उसके स्तर को पहचाना नहीं गया। वह तौहीद जो दुनिया से खो चुकी थी वही एक पहलवान है जो फिर से इसे दुनिया में लाया। उसने ख़ुदा से बहुत उन्नत स्तर पर प्रेम किया और अत्यधिक स्तर पर मानव जाति की सहानुभूति में उसकी जान पिघली। "

(हकीकतुल वह्यी, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 22, पृष्ठ 118)

अत: अगर आज भी दुनिया आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षाओं और आपके बयान किए गए भव्य सिद्धांतों पर अनुकरण करे और उन पर सच्चाई से पालन करे तो यह दुनिया जो आज बहुत बुरी तरह अशांति और चिंता और दु:ख का शिकार हो रही है, केवल ख़ुदा की कृपा और दया से शांति और आराम का घर बन सकती है।